ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑓓𑓗𑓖 𑒧 𑒁𑓀𑒏 𑓑𑓕 𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑓒𑓐𑓒𑓓 (𑒫𑒩𑓂𑒭 𑓑𑓖 𑒧𑒰𑒮 𑓑𑓘𑓘 𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓗𑓖)

[𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢: 𑒧𑒰𑒢𑒳𑒭𑒲𑒧𑒱𑒯 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒰𑒧𑓂



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯- 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒃-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰

𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏: 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩



ई मैथिलीक पहिल इन्टरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इन्टरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/
These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

Videha e-Journal: Issue No. 376 at www.videha.co.in

𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱- *𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢𑒱𑒞 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒣𑒢𑒏𑒪𑒰𑒪 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰*

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒖𑒑𑒖𑓂𑒖𑒢𑒢𑒲 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒨𑒰𑓁 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒂𑒮𑒲𑒞𑓂। 𑒯𑒢𑒴𑒧𑒢𑓂𑒞𑓁 𑒅𑒏𑓂𑒞𑒫𑒰𑒢- 𑒧𑒰𑒢𑒳𑒭𑒲𑒧𑒱𑒯 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒰𑒧𑓂।

<u>𑒁𑒏𑓂𑒐𑒩 𑒐𑒧𑓂𑒦𑒰 (𑒂𑒐𑒩 𑒐𑒰𑒧𑓂𑒯)</u>

𑒞𑒱𑒯𑒳𑒁𑒢 𑒐𑒹𑒞𑓂𑒞𑒯𑒱 𑒏𑒰𑒘𑒱 𑒞𑒮𑒳 𑒏𑒱𑒞𑓂𑒞𑒱𑒫𑒪𑓂𑒪𑒱 𑒣𑒮𑒩𑒹𑒃। 𑒁𑒏𑓂𑒐𑒩 𑒐𑒧𑓂𑒦𑒰𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒖𑒅 𑒧𑒘𑓂𑒔𑒼 𑒥𑒢𑓂𑒡𑒱 𑒢 𑒠𑒹𑒃॥ *(𑒏𑒲𑒩𑓂𑒞𑒱𑒪𑒞𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧𑓁 𑒣𑒪𑓂𑒪𑒫𑓁 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒠𑒼𑒯𑒰।)*

𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒂𑒐𑒩 𑒩𑒴𑒣𑒲 𑒐𑒰𑒧𑓂𑒯 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝 𑒏𑓄 𑒅𑒚𑒻𑒨𑒞 (*𑒑𑒠𑓂𑒨-𑒣𑒠𑓂𑒨 𑒩𑒴𑒣𑒲*) 𑒧𑓀𑒔 𑒖𑒿 𑒢𑒻 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒨 𑒞𑒿 𑒃 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒦𑒳𑒫𑒢𑒩𑒴𑒣𑒲 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒧 𑒅𑒏𑒩 𑒏𑒲𑒩𑓂𑒞𑒱𑒩𑒴𑒣𑒲 𑒪𑒞𑓂𑒞𑒲 𑒏𑒞𑒰 𑒣𑒮𑒩𑒞।

𑒬𑒳𑒏𑓂𑒪 𑒨𑒖𑒳𑒩𑓂𑒫𑒹𑒠 (२६.२)-𑒨𑒟𑒹𑒧𑒰𑓀 𑒫𑒰𑒔𑓀 𑒏𑒪𑓂𑒨𑒰𑒝𑒲𑒧𑒰𑒫𑒠𑒰𑒢𑒱 𑒖𑒢𑒹𑒦𑓂𑒨𑓁। 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒩𑒰𑒖𑒢𑓂𑒨𑒰𑒦𑓂𑒨𑒰𑓀 𑒬𑒴𑒠𑓂𑒩𑒰𑒨 𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒔 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒨 𑒔𑒰𑒩𑒝𑒰𑒨 𑒔॥ 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒫𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒫𑒰𑒝𑒲 (𑒫𑒹𑒠𑒫𑒰𑒝𑒲) 𑒮𑒳𑒢𑒰𑒥𑒲। 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒏𑒹𑒿, 𑒏𑓂𑒭𑒞𑓂𑒩𑒱𑒨𑒏𑒹𑒿, 𑒬𑒴𑒠𑓂𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒂 𑒂𑒩𑓂𑒨𑒏𑒹𑒿; 𑒁𑒣𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒂 𑒁𑒣𑒩𑒱𑒔𑒱𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 (𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿)। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒃 𑒫𑒹𑒠𑒫𑒰𑒏𑓂𑒨𑒏 𑒫𑒱𑒣𑒩𑒲𑒞 𑒧𑒢𑒳𑒮𑓂𑒧𑒵𑒞𑒱 𑒫𑒹𑒠𑒫𑒰𑒝𑒲𑒏 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢/ 𑒬𑓂𑒩𑒫𑒝𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒪𑒼𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒢𑒱𑒭𑒹𑒡 𑒏𑒩𑓄 𑒔𑒰𑒯𑒪𑒏, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑓂𑒧𑒵𑒞𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒫𑒹𑒠𑒫𑒰𑒏𑓂𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒰𑒝 𑒧𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 (𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒰𑒝) 𑒞𑒹𑒿 𑒋𑒏𑒩 𑒫𑒱𑒩𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒠𑒹𑒪 𑒅𑒏𑒩 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒠𑒹𑒬 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒁𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

----

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वं शान्ति:

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वं शान्ति:

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

२.२.आचार्य रामानंद मंडल- हाल मियां/ जयंत (कौआ)क कथा

२.३.लालदेव कामत-साहित्य अकादमी परखलनि - पर श्रेष्ठतम पृथ्वी कँ/ मखानाक गुण रूप/ मिथिला मँ माछ, राजगानक सर्वसुलभ साधन रूप सकैत अछि/ पानक तत्व/ औषधीय गुण मौसम/ रंगपूरम जतुक परियास : एक विश्लेषण

२.४.लालदेव कामत-आर्थिक विपन्नता/ मूंस'क दान

२.५.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खय-२५)

२.६.नन्द विलास राय-मास्क

२.७.जगदीश प्रसाद मण्डल-घरदेखी

२.८.रवीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि रहल अछि सभकिछु (उपन्यास)- धारावाहिक

३.पद्य खण्ड

३.१.बद्रीनाथ राय-तीन टा गीत

३.२.प्रमाद सा 'गोकुल'-स्कूल ठाम ह्नायल गाम

३.३.नाज किशोन मिश्र-सांस्कृतिक ऊनघ



ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয: শান্তি রনস্পতয: শান্তির্ৰিশ্বে দেরা: শান্তিব্ৰঁহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:- जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্ৰ্হ্মণসঁ প্রার্থনা জে দ্যূলোকমে, অংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জলমে, ঔষধমে, রনস্পতিমে, রিশ্বমে, সভ দেরতাগণমে আ ব্ৰহ্মমে শাংতি

ক্ষয়।

ওঁ-ব্রহ্মণ, দ্যৌ-সূর্য-তৰেগণ, অংতৰিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যুলোকক বীচ, আপ:-জল, বিশ্বেদেবা- সভ দেবতা, ব্রহ্ম- সর্জক।

ঌ

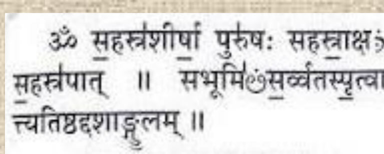
ॐ, स॒हस्रंशीर्षा॒ पुरुंषः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्रंपात्।

ওঁ, স↓হস্র↑শীর্ষা↓ পুরু↑ষঃ। স↓হ↓স্রা↓ক্ষঃ স↓হস্র↑পাৎ।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

স ভূমিং↑ Ẇ বি↓শ্বতো↑ বৃ↓ত্বা। অত্য↑তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।


ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः
सहस्रपात् ॥ सभूमिꣳसर्व्वतस्पृत्वा
त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

प॒द्भ्याग्ँ॒ शू॒द्रो अंजायत॥

প↓দ্ভ্যাগ্ঁ↑ শূ↓দ্রো অ↑জাযত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिश॒ः श्रोत्राँत्।

প↓দ্ভ্যাং ভূমি↓র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑↑ৎ।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

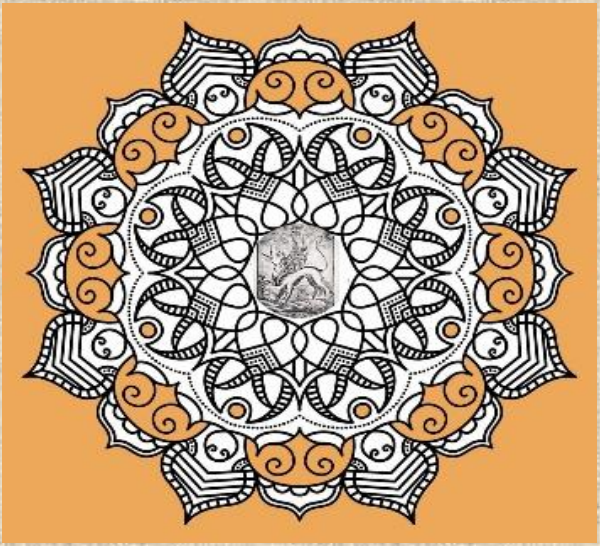
卐 (Swastik)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम সিদ্ধিৰস্তু, সিদ্ধম Devanagari Anji)

Ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑓆



१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३७५ पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

"विदेहक जीवित लेखक-सम्पादक, आन्दोलनी, सार्वजनिक जीवन जीनिहार, कला-संगीत-रंगमंचकर्मी आ रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला" (print-on-demand)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव
विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक
विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक
विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक
विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक
विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक
विदेह केदार नाथ चौधरी विशेषांक
विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक
विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक
विदेह रचनाकार अशोक विशेषांक
विदेह राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक
मिथिला स्टूडेन्ट यूनियन (एम.एस.यू.) विशेषांक
कला-विमर्श विशेषांक (सन्दर्भ- संजू दास, कृष्ण कुमार कश्यप, शशिबाला, एस.सी.सुमन आ श्वेता झा चौधरी)

Type: Print Book

Genre: Reference

Language: Maithili

Price: ₹349 + shipping

ISBN: 9789359679884

Publisher: A Videha eJournal Imprint

Number of Pages: 302

Dimensions: 5"x8"

Interior Pages: B&W

Binding: Hard Cover (Case Binding)

Availability: In Stock (Print on Demand)

Preview at;

https://publish.pothi.com/preview/?sku=SKU21330

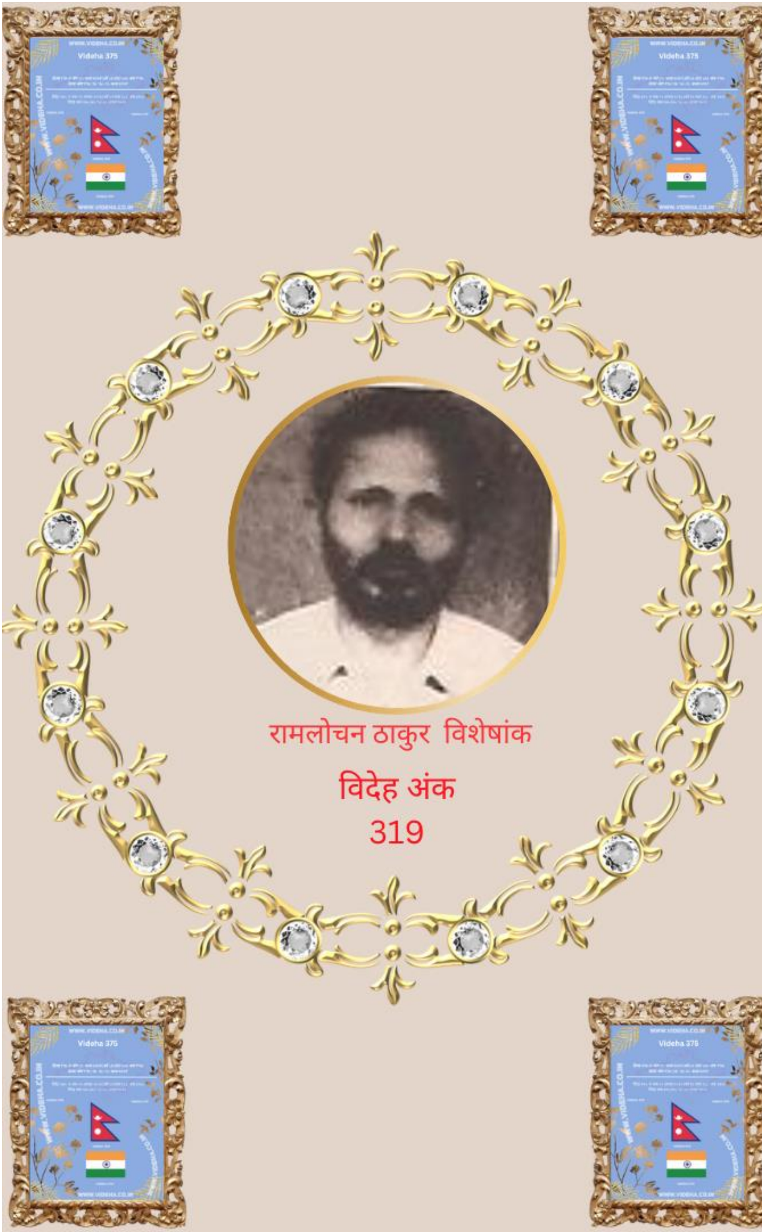
Purchase at;

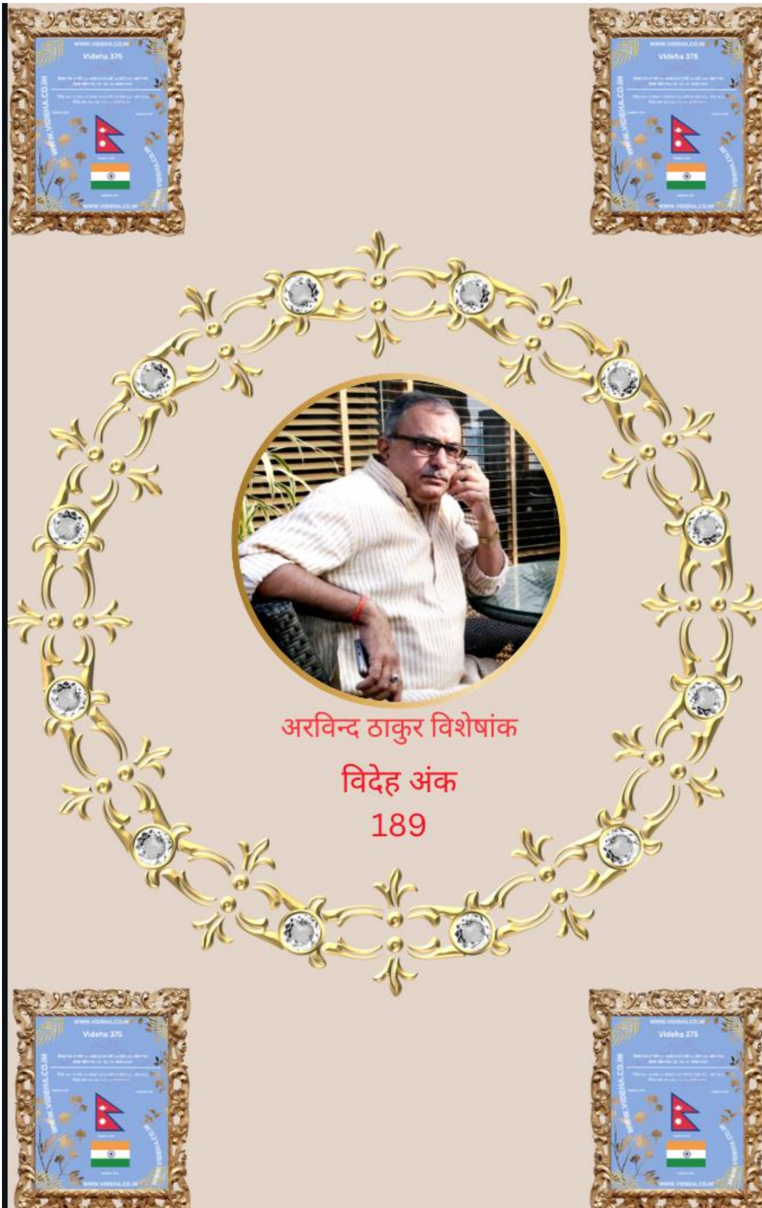
विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक | Pothi.com

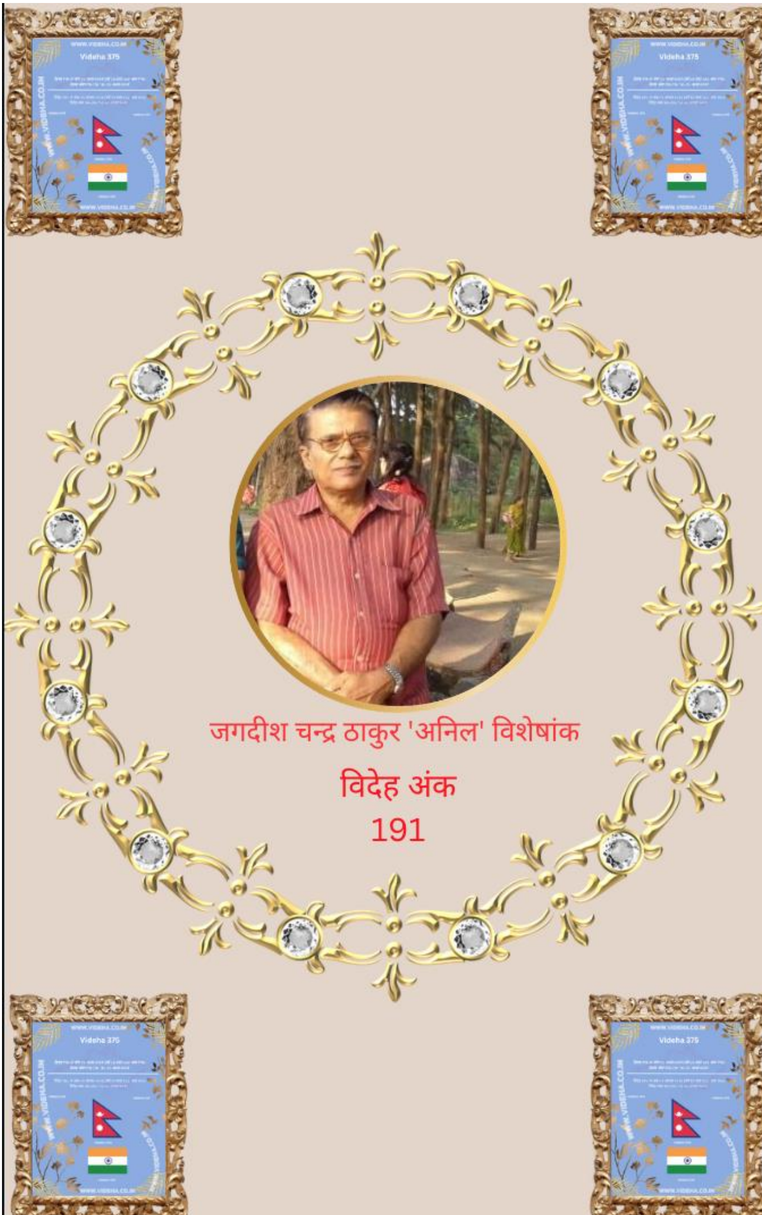
https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-editor-%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B9-%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%9A%E0%A4%A8-%E0%A4%A0%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B0-%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%87%E0%A4%B7%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%95

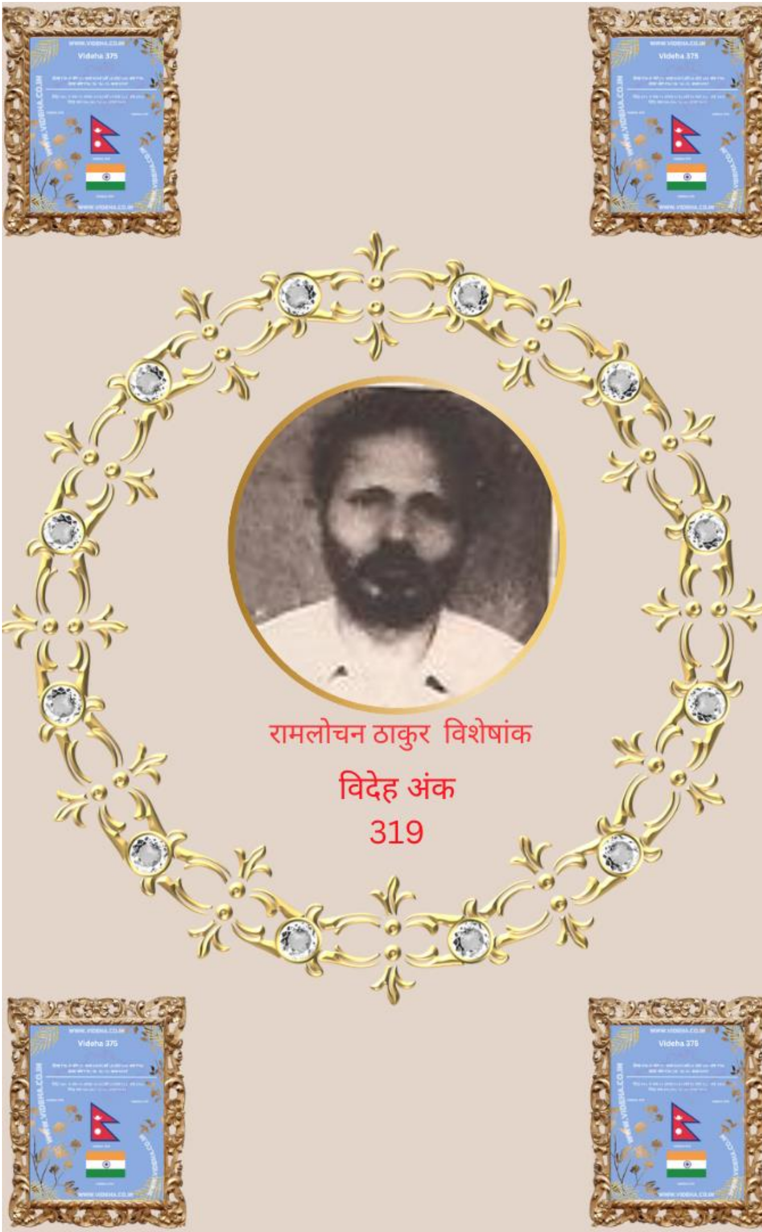
/

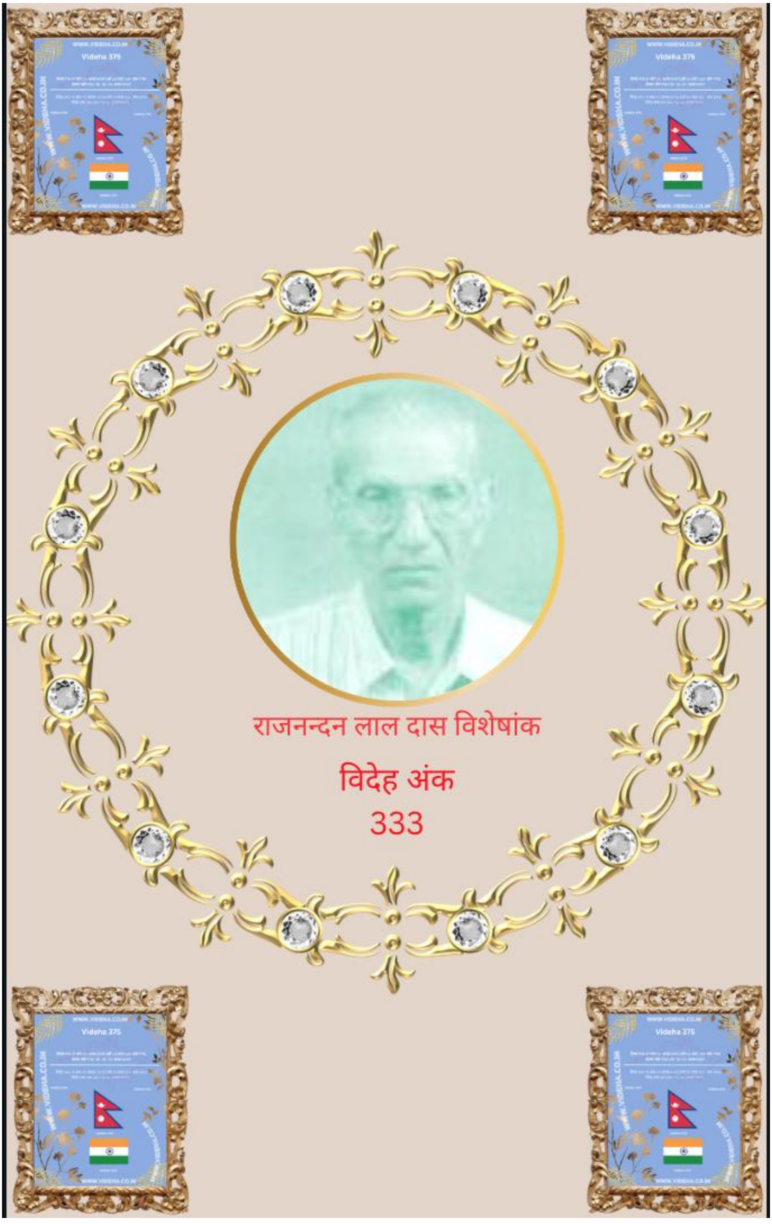

WWW.VIDEHA.CO.IN
WWW.VIDEHA.CO.IN
विदेह विशेषांक
WWW.VIDEHA.CO.IN
WWW.VIDEHA.CO.IN

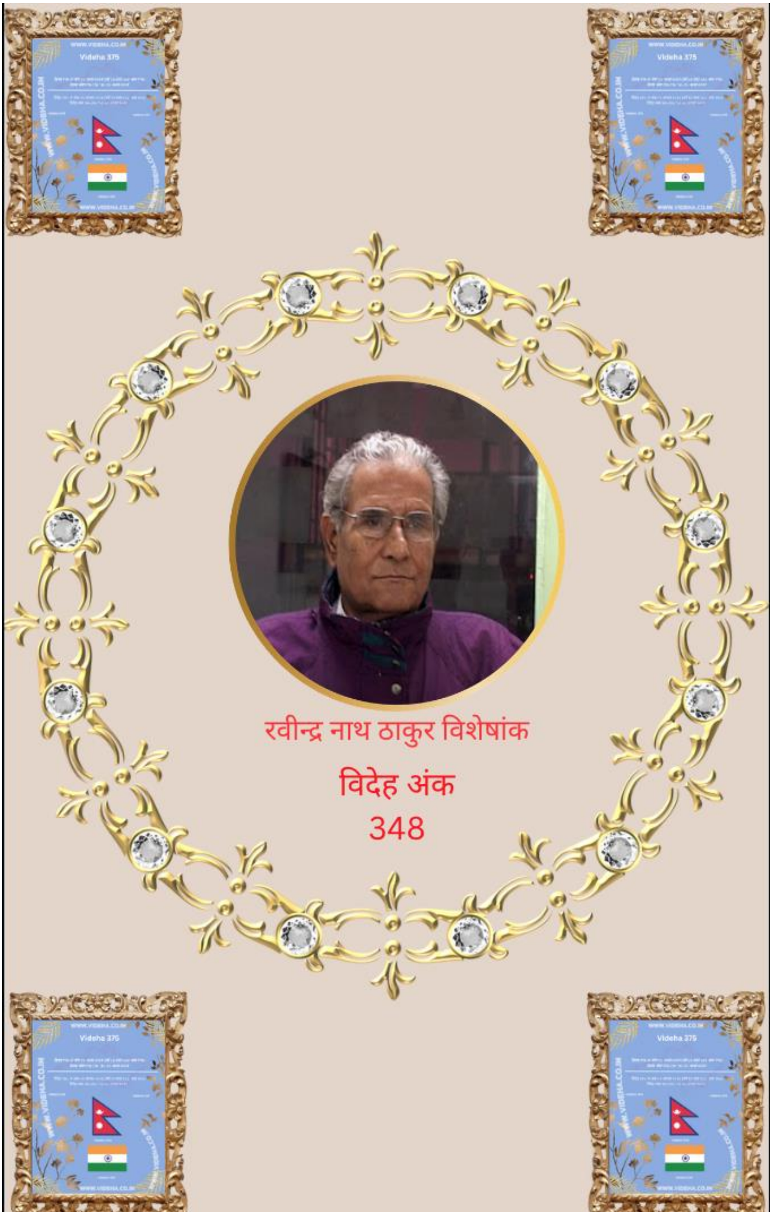

रामलोचन ठाकुर विशेषांक
विदेह अंक
319


अरविन्द ठाकुर विशेषांक
विदेह अंक
189


जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक
विदेह अंक
191


रामलोचन ठाकुर विशेषांक
विदेह अंक
319

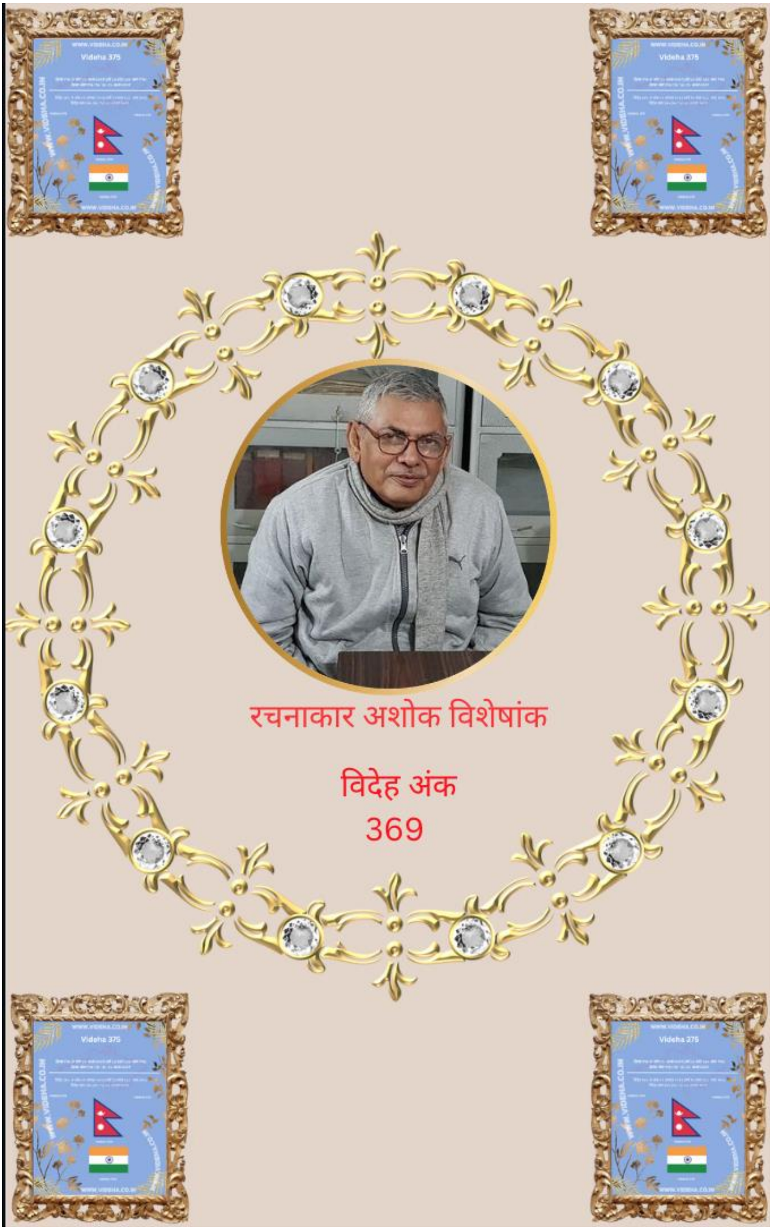

राजनन्दन लाल दास विशेषांक
विदेह अंक
333

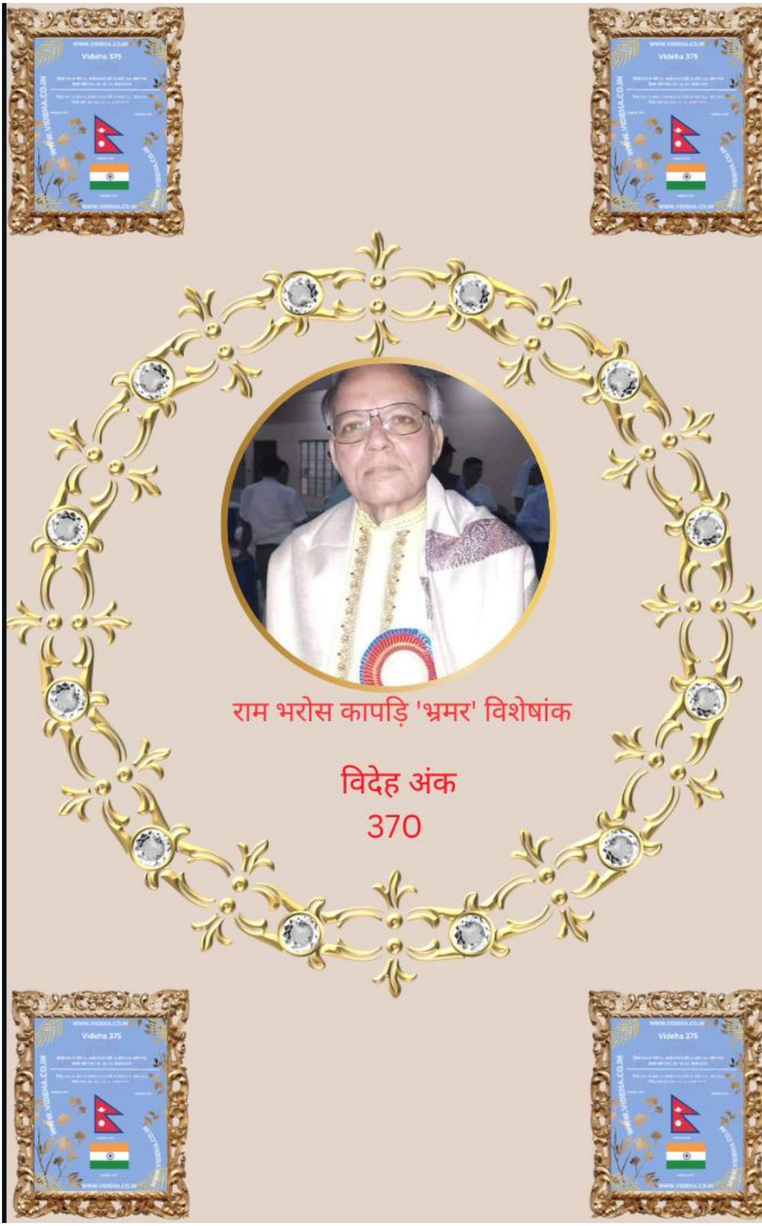

रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक
विदेह अंक
348


केदार नाथ चौधरी विशेषांक
विदेह अंक
352


प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक
विदेह अंक
357


शरदिन्दु चौधरी विशेषांक
विदेह अंक
358


रचनाकार अशोक विशेषांक
विदेह अंक
369


राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक
विदेह अंक
370

१.२.अंक ३१७ पर टिप्पणी

लक्ष्मण झा 'सागर'

बहुत अभिनव आ ललितगर अंक। बहुत बहुत बधाई! आंतरिक अभ्यर्थना!! नित नवल सुशील एहि अंकक महत्वपूर्ण रचना अछि। सुशीलक संग बर अन्याय भेल छनि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.गद्य खण्ड

२.१.यनमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)

२.२.आचार्य नामानंद मंडल- हाल मियां/ जयंग (कौआ)क कथा

२.३.लालदेव कामत-साहित्य अकादमी यनखलनि - यन ञाऽऽनम पृथ्वी कँ/ मखानाक गुण वृक्ष/ मिथिला मेँ माछ, नाजगानक सर्वसुलर साधन रूय सकैत अछि/ यानक वृक्ष/ औषधीय गुण मौसम/ नंगयूनम जगुक यनियास : एक विश्लेषण

२.४.लालदेव कामत-आर्थिक नियन्ना/ मूंस'क दान

२.५.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-२५)

२.६.नन्द विलास नाय-मास्क

२.७.जगदीश प्रसाद मण्डल-घनदखी

𑓒.𑓘.𑒢𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒦𑒏𑒱𑒕𑒳 (𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮)- 𑒡𑒰𑒩𑒰𑒫𑒰𑒯𑒱𑒏

𑓒.𑓙.𑒡𑒢𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝- 𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨 (𑒂𑒑𑒰𑒿)



(নাম- পরমানন্দ লাল কর্ণ (১৯৩০) পিতা-স্ব০ পরশুরাম লাল কর্ণ, গাম- ঘোঘসর, পো০- রিঁবোল, দরভঙ্গা, বিহার-৮৪৭২০৩ শিক্ষা - স্নাতকোত্তর, CAIIB, সেবানিবৃত্ত-প্রবন্ধক, সেন্ট্রল বৈঁক আফ ইন্ডিয়া)

গীতা মহাত্ম্য

(পদ্ম পুরাণ উত্তর খণ্ড)

দশম অধ্যায়

ভগবান শিব কহলনি - সুন্দরী, আব অহাঁ দশম অধ্যায়ক মহাত্মেক পাবন কথা সুনু জে স্বর্গ রূপী দুর্গ মে প্রবেশক লেল সুন্দর সোপান আ প্রভাবক চরম সীমা থীক। কাশীপুরী মে ধীরবুদ্ধি নাম সঁ বিখ্যাত একটা ব্রাহ্মণ ছলাহ জে নন্দী জকাঁ হমরা মে ভক্তি রাখৈত ছলাহ। ও পাবন কীর্তিক অর্জন মে তৎপরের রহইবালা শান্তচিত্ত আ হিংসা, কঠোরতা আওর দুঃসাহস সঁ দূর রহইবালা ছলথি। জিতেন্দ্রিয় হোবাক কারণে ও নিবৃত্তি মার্গ মে রহৈত ছলাহ। ও বেদরূপী সমুদ্র কেঁ পার কই লেনে ছলাহ। ও সমস্ত শাস্ত্রক জ্ঞাতা ছলাহ। হুনকর চিত্ত সদিখন হমরে ধ্যান মে লাগল রহৈত ছল। ও মন কেঁ অন্তরাত্মা মে লগা কেঁ সদিখন আত্মতত্ত্বক সাক্ষাৎকার করৈত ছলাহ। জখন ও চলই লগৈত ছলাহ তখন হম প্রেমবশ হুনকা পাছু দৌড়ি দৌড়ি কেঁ হুনকা হাথক সহারা দৈত রহৈত ছলহুঁ।

ঈ দেখি হমর পার্ষদ ভৃংগিরিটি পূছলথি- ভগবন এহি প্রকার ভলা কে অপনেক দর্শন কেনে হোয়ত? ঈ মহাত্মা কোন তপ, হোম ব জপ কেলনি অছি জে অপনে-আপ অহাঁ ডেগে-ডেগ হুনকা হাথক সহারা দৈত চলৈত ছী।

ई देखि हुनक पार्षद नंदिभृंगि पूछलथि- भगवन एहि प्रकार भला के अपनेक दर्शन करै होइत? ई महात्मा कोन तप, होम वा जप कएने अछि जे अपने आप अहाँ डेगे-डेग हिनका आगाँक सहारा दैत चलैत छी।

नंदिभृंगिक ई प्रश्न सुनि हम एहि प्रकार उत्तर देनाइ आरम्भ केलहुँ। एक समयक बात अछि। कैलास पर्वतक पार्श्व भाग मे पुन्नाग वन मे चन्द्रमाक अमृतमयी किरण सँ धोअल जमीन पर एकटा वेदीक आश्रय लऽ के हम बैसल छलहुँ। हुनक क्षण भरि बैसलाक बाद अचानक बड़ जोर सँ आँधी आयल। ओहि ठामक गाछक डारि नीचा ऊपर भऽ एक-दोसर मे टकरा के कतेको डारि टूटि गेल। पर्वतक अविचल छाया सेहो डोलऽ लागल। तकर बाद ओहि ठाम भयंकर शब्द भेल जाहि सँ पहाड़क आवाज उठैत छल। तदनुसार आकाश सँ कोनो मेघ चिड़ै उतरल जेकर कान्ति कारी मेघ सन छल ओ अर्ध-अर्ध कारी, अन्हारक समूह आ कज्जल पंख कारी पहाड़ सन बुझि पड़ैत छल। पातर सँ पृथ्वीक सहारा लऽ के ओ पक्षी हमरा प्रणाम केलथि आ नीक नूतन कमल हमरा चरणमे कऽ स्पष्ट वाणी मे स्तुति करनाइ आरम्भ केलनि।

पक्षी कहलनि- हे देव! अपनेक जय होए। अहाँ चिदानन्दमयी सुधाक सागर आ जगत्क पालक छी। सदिखन सद्भावना सँ युक्त आ अनासक्तिक लहरि सँ उल्लसित छी। अपनेक वैभवक कतहु अन्त नहि अछि। अपनेक जय हो। अद्वैतवासना सँ परिपूर्ण बुद्धि सँ अहाँ त्रिविध मल सँ रहित छी। अहाँ जितेन्द्रिय भक्त लोकनिक अधीन रहैत छी आ ध्यान मे अपनेक स्वरूपक साक्षात्कार होइत अछि। अहाँ अविद्यामय उपाधि सँ रहित, नित्यमुक्त, निराकार, निरामय, असीम, अहंकारशून्य, आवरण रहित आ निर्गुण छी। अपनेक चरणकमल शरणागत भक्तक रक्षा करऽ मे प्रवीण छी। अपनेक

भयंकर ललाट रूपी महासर्पक विष ज्वाला सँ कामदेव केँ भस्म केने छी। अपनेक जय हो। अहाँ प्रत्यक्ष आदि प्रमाण सँ दूर रहितहुँ प्रामाण्यस्वरूप छी। अपनेक बेरि-बेरि नमन अछि। चैतन्यक स्वामी आ त्रिभुवन रूप धारी अपनेक नमन अछि। हेम श्रेष्ठ योगी लोकनि सँ पूजित अपनेक चरण कमलक वंदना करैत छी जाहि मे अपार भव पापक समुद्र सँ पार उतारक अद्भुत शक्ति अछि। महादेव! साक्षात बृहस्पति सेहो अपनेक स्तुति करै केँ धृष्टता नहि कऽ सकैत छथि। सहस्र-मुखयुक्त नागराज शेष मे सेहो एतेक चातुरी नहि छैन जे अपनेक गुणक बखान कऽ सकथि। तहन हमरा एहन छोट बुद्धि वाला चिड़ै मे की सामर्थ्य अछि?

चिड़ै सँ कहल गेल एहि स्तोत्र केँ सुनि हम शुनका सँ पुछलहुँ - हे विहंगम! अहाँ के छी आओर कहाँ सँ आयल छी? अहाँक आकृति तऽ हंस सनक अछि मुदा रंग तऽ कौआ वाला अछि। अहाँ जाहि प्रयोजन सँ एहि ठाम अएलहुँ अछि से बताउ।

चिड़ै कहलनि - देवेश! अहाँ हमरा चक्राङ्गीक हंसजानू-धूर्जटे, जाहि कर्म सँ हमरा शरीर मे अखन कालिमा आबि गेल अछि से सुनू। प्रभो, ओना तऽ अहाँ सर्वज्ञ छी मुदा जौं अहाँ पुछैत छी तहन हम बताबैत छी। सौराष्ट्र नगर लग एकटा नीक सरोवर अछि जाहि मे कमल लहलहाइत छल। ओहि मे सँ बाल चन्द्रक टुकड़ा जकाँ श्वेत मृणाल केँ मुँह मे लऽ के हम बड़ तेजी सँ आकाश मे उड़ि रहल छलहुँ। उड़ैत-उड़ैत अचानक ओहि ठाम सँ पृथ्वी पर खसि गेलहुँ। जखन होश मे अयलहुँ आ अपना गिरक कारण नहि देखि सकलहुँ तऽ मने मन सोचऽ लागलहुँ - आ हमरा पर की आबि गेल? आइ हमर पतन कोना भऽ गेल? पाकल कर्पूर सन हमर

उज्जर शरीर मे ओ कालिमा कोना आबि गेल। एहि प्रकार विस्मित भऽ हंस अखन विचार करैत छलाह कि तखन हुनि एहि पोखरिक कमल मे सँ हुनका ओ आवाज सुना देलक - यौ हंस, ठहरू, हम अनेक दिनक अपकारी होय के कारण रहैत छी। तँ हंस ओहि केँ सरोवर के बीच मे गेलाह आ ओहि ठाम पाँच टा कमल सँ युक्त एकटा कमलिनी देखलाह। ओकरा देखि प्रणाम कऽ हंस प्रदक्षिणा केलाह आ अपन पतनक सब कारण पूछलाह।

कमलिनी कहलीह - कलहंस, अहाँ आकाश मार्ग सँ हमरा लाँघि के गेलाह अछि ओहि पातकक परिणामस्वरूप अहाँ पृथ्वी पर गिरलाह अछि आ तकरे कारण अहाँक शरीर मे कालिमा देखि पड़ैत अछि। अहाँक गिरल देखि हमरा हृदय मे दया भरि आयल आ जखन हम एहि मध्यम कमल सँ बोलऽ लगलाह अछि तखन हमरा मुख सँ निकलल सुगन्ध केँ सूँघि साठि कोटि भौंरा केँ स्वर्गलोक प्राप्त भेलनि। पक्षिराज! जाहि कारण हमरा मे एतेक वैभव आ एतेक प्रभाव आयल अछि से कहैत छी। हम एहि जन्म सँ पूर्व तेसर जन्म मे हम पृथ्वी पर एकटा ब्राह्मणकन्याक रूप मे जन्म भेल छल। तखन हमर नाम सरोजवदना छल। हम गुरु लोकनिक सेवा करैत सदिखन एक मात्र पातिव्रत्यक पालन करऽ मे तत्पर रहैत छलहुँ। एक दिनक बात अछि हम एकटा मैना केँ पढ़ा रहल छलहुँ। जाहि सँ पति सेवा मे किछु विलम्ब भऽ गेल आ पतिदेव कुपित भऽ हमरा शाप देलनि - 'पापिनी अहाँ मैना भऽ जाउ।' मरलोपरान्त यद्यपि हम मैना भेलहुँ मुदा पातिव्रत्यक प्रसाद सँ एकटा मुनिक घर मे हमर आश्रय मिलल। कोनो मुनिकन्या हमर पालन पोषण केलनि। हम घर मे छलहुँ ओ ब्राह्मण सदिन सबेर सकाल विभूतियोग नाम सँ प्रसिद्ध गीताक दशम अध्यायक पाठ करैत छलाह आ हम ओ पापहारी अध्याय केँ सुनैत छलहुँ। बहुत काल एला पर हम मैनाक शरीर छोड़ि केँ

𑒠𑒬𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨𑒹 𑒮𑒿 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑𑒪𑒼𑒏 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑓂𑒮𑒩𑒰 𑒕𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒣𑒠𑓂𑒧𑒰𑒫𑒞𑒲 𑒕𑒹𑒪 𑒂 𑒯𑒳𑒢𑒱 𑒣𑒠𑓂𑒧𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒫𑒩𑒏 𑒮𑒐𑒲 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒱 𑒫𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒿 𑒂𑒏𑒰𑒬 𑒫𑒱𑒔𑒩𑒝 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒏𑒧𑒪 𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒬𑒼𑒦𑒱𑒞 𑒋𑒯𑒱 𑒩𑒧𑒝𑒲𑒨 𑒮𑒩𑒼𑒫𑒩 𑒣𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒢𑒖𑒩𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒂 𑒋𑒯𑒱 𑒧𑒹 𑒅𑒞𑒩𑒱 𑒏𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒱 𑒖𑒐𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒪𑒏𑓂𑒩𑒲𑒛𑓃𑒰 𑒂𑒩𑓀𑒦 𑒏𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒞𑒐𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒧𑒳𑒢𑒱 𑒋𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒔𑒪𑒱 𑒋𑒪𑒰𑒯। 𑒍 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒫𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒯𑒲𑒢 𑒁𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒦𑒨 𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒱 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒧𑒢𑒮𑒿 𑒞𑒰 𑒏𑒧𑒪𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒡𑒰𑒩𑒝 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒯𑒮𑓂𑒞 𑒣𑒰𑒞𑒩 𑒠𑒴 𑒙𑒰 𑒏𑒧𑒪 𑒕𑒹𑒪, 𑒯𑒮𑓂𑒞 𑒯𑒰𑒟 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒴 𑒙𑒰 𑒏𑒧𑒪 𑒕𑒹𑒪। 𑒬𑒹𑒭 𑒁𑓀𑒑 𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒧𑒪 𑒕𑒹𑒪। 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒱 𑒣𑒰𑒿𑒔 𑒙𑒰 𑒏𑒧𑒪 𑒮𑒿 𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒕𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒧𑒳𑒢𑒱𑒫𑒩 𑒯𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒟𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒏𑓂𑒩𑒼𑒡𑒰𑒑𑓂𑒢𑒱 𑒮𑒿 𑒖𑒩𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒍 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱-𑒣𑒰𑒣𑒱𑒢𑒲 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒩𑒴𑒣 𑒧𑒹 𑒮𑒨 𑒫𑒩𑓂𑒭 𑒡𑒩𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒩𑒯𑒴। 𑒞𑒰 𑒬𑒰𑒣 𑒠𑓄 𑒏𑒹𑒿 𑒍 𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒦𑒩𑒱 𑒧𑒹 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩𑓂𑒡𑒰𑒢 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒏𑒧𑒪𑒱𑒢𑒲 𑒕𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠𑒯𑒳 𑒫𑒱𑒦𑒴𑒞𑒱 - 𑒨𑒼𑒑𑒰𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨𑒹 𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒫𑒰𑒝𑒲 𑒪𑒳𑒣𑓂𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒰𑒿𑒒𑒪𑒰𑒏 𑒁𑒣𑒩𑒰𑒡 𑒮𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒣𑒩 𑒑𑒱𑒩𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒹 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒱𑒩𑒰𑒖! 𑒋𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒕𑒹𑒪 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒮𑒼𑒗𑒰 𑒧𑒹 𑒂𑒞𑒼 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒬𑒰𑒣𑒏 𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒱 𑒦𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒞𑓄 𑒂𑒥 𑒮𑒨 𑒫𑒩𑓂𑒭 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒯𑒳𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒠𑒮𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒪𑒱𑒁। 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒪𑒰 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒨𑒥।

𑒞𑒰 𑒏𑒯𑒱 𑒣𑒠𑓂𑒧𑒱𑒢𑒲 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒂 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒫𑒰𑒝𑒲 𑒧𑒹 𑒠𑒬𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒣𑒰𑒚 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒂 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯। 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒠𑒹𑒪 𑒞𑒰 𑒠𑒮𑒧 𑒏𑒧𑒪 𑒢𑒰𑒩𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒱 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒁𑒩𑓂𑒣𑒝𑒏𑓄𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱।

𑒋𑒞𑒥𑒹 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒰 𑒏𑓄 𑒍 𑒔𑒱𑒛𑓃𑒻 𑒁𑒣𑒢 𑒬𑒩𑒲𑒩 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒞𑒰 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒁𑒠𑓂𑒦𑒳𑒞 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒕𑒹𑒪। 𑒍 𑒔𑒱𑒛𑓃𑒻 𑒂𑒥 𑒠𑒬𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫 𑒮𑒿 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒏𑒳𑒪 𑒧𑒹 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒪𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒢𑓂𑒧𑒯𑒱

𑒋𑒞𑒥𑒹 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒰 𑒏𑓄 𑒍 𑒔𑒱𑒛𑓃𑒻 𑒁𑒣𑒢 𑒬𑒩𑒲𑒩 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏 । 𑒄 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒁𑒠𑓂𑒦𑒳𑒞 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒕𑒪। 𑒍 𑒔𑒱𑒛𑓃𑒻 𑒂𑒥 𑒠𑒬𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒩 𑒮𑒿 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒏𑒳𑒪 𑒧𑒹 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒪𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒢𑓂𑒧𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒁𑒦𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒕𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒬𑒻𑒬𑒫𑒰𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒧𑒳𑒐 𑒮𑒿 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒠𑒬𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒰𑒩𑒝 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒬𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒁𑒩𑓂𑒟 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒢𑒏 𑒄 𑒣𑒩𑒱𑒝𑒰𑒧 𑒕𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒦𑒴𑒞 𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒬𑓀𑒐 𑒔𑒏𑓂𑒩𑒡𑒰𑒩𑒲 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳𑒏 𑒍 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 । 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑓂𑒢𑒹𑒯𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒖𑒐𑒢 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒠𑒹𑒯𑒡𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒬𑒩𑒲𑒩 𑒣𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒐𑒢 𑒍 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒔𑒰𑒯𑒹 𑒍 𑒬𑒩𑒰𑒥𑒲 𑒫 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒯𑒞𑓂𑒨𑒰𑒩𑒰 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒟𑒱 । 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒧𑒹 𑒁𑒦𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒠𑒬𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒧𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨 𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒪𑒦 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒕𑒻𑒢𑓂𑒯 𑒂 𑒍 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒍 𑒖𑒐𑒢 𑒍 𑒩𑒰𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒐𑒢 𑒯𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒯𑒰𑒟𑒏 𑒮𑒯𑒰𑒩𑒰 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒯𑒹 𑒦𑒵𑓀𑒑𑒱𑒩𑒱𑒙𑒹 𑒄 𑒮𑒥 𑒠𑒬𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒧𑒯𑒰𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰 𑒁𑒕𑒱।

𑒣𑒰𑒩𑓂𑒫𑒞𑒲 ! 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒯𑒧 𑒦𑒵𑓀𑒑𑒱𑒩𑒱𑒙𑒱𑒏 𑒮𑒼𑒗𑒰𑒿 𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒏𑒟𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱 𑒫𑒋𑒯 𑒋𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒢𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒁𑒟𑒫𑒰 𑒏𑒹𑒍 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒢 𑒯𑒼𑒟𑒱, 𑒋𑒯𑒱 𑒠𑒬𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒬𑓂𑒩𑒫𑒝 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒥 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒧𑒏 𑒣𑒰𑒪𑒢𑒏 𑒤𑒪 𑒧𑒱𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒢𑓂𑒯 ।

गीता माहात्म्य
(पद्मपुराण उत्तर खण्ड)
एगारहम अध्याय

महादेव कहलनि- गीताक वर्णन सँ सम्बन्धित कथा आब विश्वरूप अध्यायक पावन माहात्म्यक श्रवण करू। विशाल नेत्रवाली पार्वती! एहि अध्यायक माहात्म्यक पूरा-पूरा वर्णन नहि कएल जा सकैत अछि। एहि सम्बन्धमे कतेक हजार कथा अछि। जाहिमे सँ एकटा कथा कहैत छी। प्रणीता नदीक तट पर मेघंकर नाम सँ विख्यात एकटा श्रेष्ठ नगर अछि। ओकर प्राकार आ गोपुर बेसी ऊँच अछि। ओहि ठाम पैघ-पैघ विश्राम शाला अछि। जाहिमे सोनाक खम्भा शोभायमान अछि। ओहि नगरमे श्रीमान्, सुखी, शान्त, सदाचारी आ जितेन्द्रिय लोकनि केँ निवास अछि। ओहि ठाम शार्ङ्ग नाम सँ धनुषधारी जगदीश्वर भगवान विष्णु विराजमान छथि। ओ परब्रह्मक साकार स्वरूप छथि। संसारक नेत्रक जीवनप्रद छथि। हुनकर गौरवपूर्ण श्रीविग्रह भगवती लक्ष्मीक नेत्रकमल सँ पूजित होइत अछि। भगवानक ओ झाँकि वामन अवतारक थीक। मेघ सन हुनक श्याम वर्ण आ कोमल आकृति अछि। वक्षःस्थल पर श्रीवत्सक चिन्ह शोभा पाबैत अछि। ओ कमल आ वनमाला सँ विभूषित छथि। कतेको प्रकारक आभूषण सँ सुशोभित भ' भगवान वामन रत्नयुक्त समुद्र सन बुझि पड़ैत अछि। पीताम्बर सँ हुनकर श्याम विग्रहक कान्ति एना प्रतीत होइत अछि जे मानू चमकैत बिजली सँ घेरल स्निग्ध मेघ शोभायमान अछि। ओहि भगवान वामनक दर्शन क' जीव जन्म आ संसारक बन्धन सँ मुक्त भ' जाइत अछि। ओहि नगरमे मेखला नाम सँ एकटा तीर्थ स्थल अछि जाहिमे स्नान क' लोक शाश्वत वैकुण्ठ धाम चलि जाइत छथि। ओहि ठाम जगतक स्वामी करुणासागर भगवान नरसिंहक दर्शन क' लोक सात जन्मक कएल गेल घोर पाप सँ छुटकारा पाबि जाइत छथि। जे लोकनि मेखला मे गणेशजीक दर्शन करैत छथि ओ सदिखन दुस्तर विघ्न केँ सेहो पार क' लैत छथि।

ओहि मेघंकर नगर मे कोनो श्रेष्ठ ब्राह्मण रहैत छलाह जे ब्रह्मचर्यपरायण, ममता आ अहंकार सँ रहित, वेद शास्त्र मे प्रवीण, जितेन्द्रिय आ भगवान वासुदेव कें शरणागत छलाह हुनकर नाम सुनन्द छलनि। प्रिये! ओ शार्ङ्ग धनुषधारी भगवान नर गीताक एगारहम अध्याय- विश्वरूप दर्शन योगक पाठ करैत छलाह। ओहि अध्यायक प्रभाव सँ हुनका ब्रह्मज्ञानक प्राप्ति भेल छलनि। परमानन्द-सन्दोह सँ पूर्ण उत्तम ज्ञानमयी समाधी सँ इन्द्री कें अन्तर्मुख भेलाक कारणे ओ निश्चल स्थिति मे छलथि आ सदिखन जीवन्मुक्त योगीक स्थिति मे रहैत छलाह। एक समय जखन बृहस्पति सिंह राशि पर स्थित छलथि तखन महायोगी सुनन्द गोदावरी तीर्थक यात्रा प्रारंभ केलनि। ओ क्रमशः विरजतीर्थ, तारा तीर्थ, कपिला संगम, अष्टतीर्थ, कपिलद्वार, नरसिंहवन, अम्बिका पुरी आ करस्थान पर आदि क्षेत्र मे स्नान आओर दर्शन करैत विवाहमण्डप नाम सँ एकटा नगर मे एलाह। ओहि ठाम सबहक घर जा कें अपना लेल ठहरैक स्थान माँगलथिन मुदा केओ स्थान नहि देलकैन। अन्त मे गामक मुखिया हुनका एकटा पैघ धर्मशाला देखा देलथिन। ब्राह्मण संगी साथी सहित ओहि ठाम राती विश्राम केलनि। सबेरा भेला पर ओ अपनेक धर्मशालाक बाहर देखलथि मुदा साथी सब नहि देखा पड़लनि। ओ हुनका खोजइक लेल चललाह तखनहि मुखिया जी सँ हुनकर मुलाकात भेल। मुखिया कहलनि - हे मुनिश्रेष्ठ! अहाँ सब तरहे दीर्घायु देखि पड़ैत छी। सौभाग्यशाली आ पुण्यवान पुरुष लोकनि मे अहाँ सबसँ पवित्र छी। अहाँ मे कोनो लोकोत्तर प्रभाव विद्यमान अछि। अपनेक संगी कोन ठाम गेल छथि। अहाँ कोना ओहि भवन सँ बाहर भेलहुँ। एकर पता लगाउ। हम अहाँ के एतबे कहैत छी जे अहाँ एहन दोसर तपस्वी हमरा नहि देखि पड़ैत अछि। विप्रवर! अहाँकें कोन मन्त्रक ज्ञान अछि? कोन विद्याक आश्रय लैत छी आ कोन देवताक दया सँ अहाँ मे अलौकिक शक्ति आबि गेल अछि। भगवन! कृपा कऽ अहाँ एहि गाम मे रहू। हम अपनेक सब सेवा शुश्रूषा करब।

एना कहि मुखिया मुनीश्वर सुनन्द कें अपना गाम मे ठहराय लेलथिन। ओ दिन राति भक्ति सँ हुनकर सेवा टहल करऽ लागलथिन जखन सात-आठ दिन बीति गेल तखन एक दिन भोरे भोर आबि दुःखी भऽ महालोक सोझा मे आबि कानऽ लगलाह आ कहलनि - यौ मुनि आइ राति राक्षस हमरा एहन भाग्यहीनक बेटा कें चबा लेलक अछि। हमर बेटा बड़ गुणवान आ भक्तिमान छल। मुखिया कें एना कहला पर योगी सुनन्द पुछलथिन- ओ राक्षस कोन ठाम अछि? कोना अपनेक पुत्रक भक्षण केलक अछि?

𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒐𑒱𑒢- 𑒙𑓂𑒩𑒻𑒤𑒢! 𑒋𑒯𑒱 𑒢𑒑𑒩 𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒠𑒻𑒞𑓂𑒨 𑒢𑒩𑒦𑒏𑓂𑒭𑒲 𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒍 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒂𑒥𑒱 𑒋𑒯𑒱 𑒢𑒑𑒩𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒹𑒿 𑒐𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪। 𑒞𑒯𑒢 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒢𑒑𑒩𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒧𑒱𑒪 𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟𑒢𑒰 𑒏𑒹𑒪𑒟𑒱- 𑒯𑒹 𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮! 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒥 𑒏𑒹𑒿 𑒐𑒰𑒨𑒰 𑒏𑒩𑒴। 𑒯𑒧 𑒮𑒥 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒦𑒼𑒖𑒢𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒞 𑒕𑒲। 𑒋𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒏 𑒖𑒹 𑒏𑒹𑒍 𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒞𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒐𑒰 𑒖𑒰𑒨𑒥। 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒋𑒯𑒱 𑒢𑒑𑒩𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏𑒏 𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒬𑒰𑒪𑒰 𑒧𑒹 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮𑒏 𑒂𑒯𑒰𑒩 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝𑒏 𑒩𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒋𑒢𑒰 𑒏𑒩𑓄 𑒣𑒛𑓃𑒪। 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒒𑒩 𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒞𑒪 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮 𑒮𑒥 𑒏𑒹𑒿 𑒐𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒟𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹𑒿 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒙𑓂𑒩𑒱𑒖𑒼𑒛𑓃𑒳𑒧! 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒧𑒹 𑒋𑒯𑒢 𑒏𑒼𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒣 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒁𑒯𑒲𑓀 𑒖𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒁𑒐𑒢 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒠𑒼𑒮𑓂𑒞 𑒂𑒨𑒪 𑒕𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒯𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯 𑒮𑒏𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒍 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒥𑒛𑓃 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒫𑒩 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒯𑒧 𑒋𑒯𑒱 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒬𑒰𑒪𑒰 𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒖 𑒠𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒖𑒐𑒢 𑒮𑒳𑒢𑒪𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒠𑒼𑒮𑓂𑒞 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒬𑒰𑒪𑒰 𑒧𑒹 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒯𑒢 𑒍 𑒍𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒍𑒯𑒱 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒬𑒰𑒪𑒰 𑒧𑒹 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒐𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒏𑒢𑒱। 𑒂𑒃 𑒮𑒥𑒹𑒩𑒹 𑒯𑒧 𑒠𑒳𑒐𑒲 𑒦𑓄 𑒏𑒹 𑒣𑒱𑒬𑒰𑒔 𑒮𑒿 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿- 𑒨𑒾 𑒠𑒳𑒭𑓂𑒙𑒰𑒞𑓂𑒧𑒰! 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒹𑒿 𑒐𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒅𑒠𑒩 𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒯𑒧 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒮𑒏𑒟𑒱 𑒞𑒏𑒩 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒅𑒣𑒰𑒨 𑒖𑒾𑓀 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒢 𑒥𑒞𑒰𑒅।

𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱- 𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒖𑒲! 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒬𑒰𑒪𑒰𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒒𑒳𑒮𑒪 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒢𑒪𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒯𑒧 𑒐𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒢𑒖𑒰𑒢 𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒮 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒍 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒅𑒠𑒩 𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒂 𑒩𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒏𑒩 𑒅𑒣𑒰𑒨 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒫𑒱𑒡𑒰𑒞𑒰 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒖𑒹 𑒙𑓂𑒩𑒻𑒤𑒢 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒋𑒑𑒰𑒩𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒣𑒰𑒚 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒣 𑒮𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒯𑒼𑒨𑒞 𑒂 𑒧𑒩𑒪 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒤𑒹𑒩𑒱 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒖𑒹𑒞𑒰𑒯। 𑒋𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒙𑓂𑒩𑒻𑒤𑒢 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒯𑒧 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒬𑒰𑒪𑒰 𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒍 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒋𑒑𑒰𑒩𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒖𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒧𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒿 𑒮𑒰𑒞 𑒥𑒹𑒩𑒱 𑒁𑒦𑒱𑒧𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒏𑓄 𑒖𑒾𑓀 𑒍 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒣𑒩 𑒖𑒪 𑒕𑒲𑒙𑒱 𑒠𑒹𑒞𑒰𑒯 𑒞𑓄 𑒢𑒱𑒮𑒢𑓂𑒠𑒹𑒯 𑒯𑒧 𑒬𑒰𑒣 𑒮𑒿 𑒅𑒠𑓂𑒡𑒰𑒩 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒨𑒥।

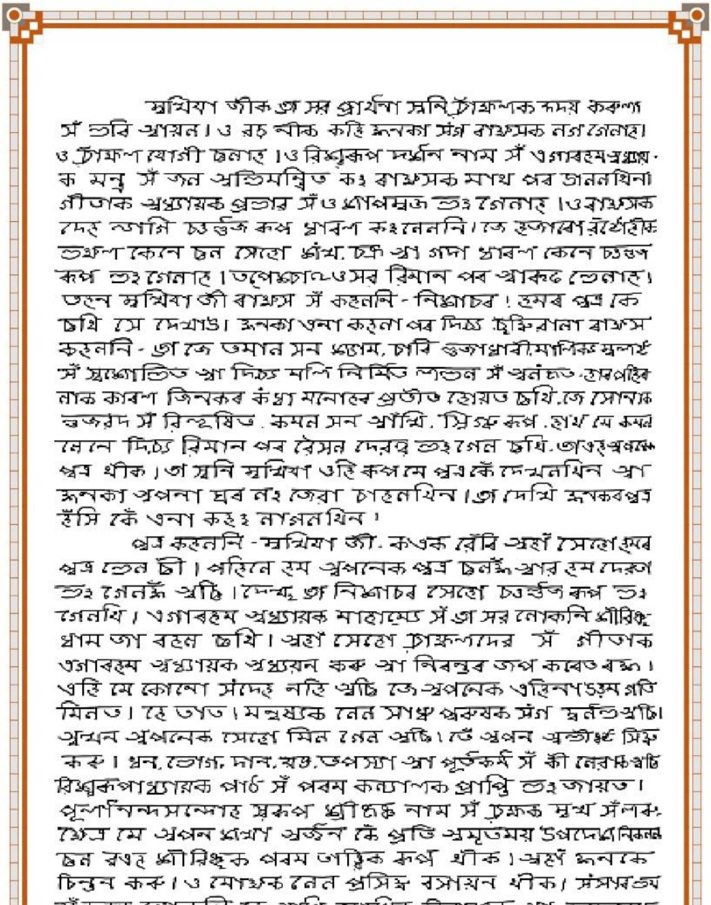
𑒋𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮𑒏 𑒮𑒢𑓂𑒠𑒹𑒬 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒯𑒧 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒪𑒑 𑒂𑒋𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱।

ঢৌমফল পুছলথিন - মুখিয়া জী ! জে ব্যক্তি মে সুতল লোকনি কেঁ খায়ত ছথি ও প্রাণি কোন পাপ সঁ রাক্ষস ভেল অছি ? মুখিয়া জী কহলনি - হে ঢৌমফল ! পহিনে ওহি গাঁব মে কোনো কিসান ঢৌমফল রহৈত ছলাহ। এক দিন ও অগহনীক খেতক ফসিলীক রক্ষা করৈত ছলাহ। ওহি গাম সঁ থোড়েক দূর পর একটা মেঘ সিংহ কোনো ব্রাহ্মণী কেঁ মারি খাজত ছল। তখনহি একটা তপস্বী কতহুঁ সঁ আবি ওহি ব্রাহ্মণীক রক্ষার্থ কেঁ লেল দূরহি সঁ দয়া দেখা বহুল ছলাহ। সিংহ ওহি ব্রাহ্মণী কেঁ খা কেঁ আকাশ মে উড়ি গেল। তব তপস্বী লজ্জিত ভ' ওহি কিসান সঁ কহলনি - যো দুষ্ট উনরাতা ! অহাঁক ধিক্কার অছি। অহাঁ বড় কঠোর আ নির্দয়ী ছী। লোকসবাক রক্ষা সঁ মুঁহ মোড়ি কেরল স্বার্থপানহ কেঁ ধন্ধা মে লাগল ছী। অহাঁক জীবন নষ্টপ্রায় অছি। জে চোর, লাঠী ঘজ জীব, সাঁপ ক্রোধ, আগি, বিষ, পানি, সিংহ, রাক্ষস, ভূত আ বেতাল আদি সঁ ঘায়ল ভেল লোকনি কেঁ শক্তি রহিতহুঁ উপেক্ষা করৈত ছথি ও হুনকর রক্ষক বন পারৈত ছথি। জে শক্তিশালী ভ' চোর আদিক চক্কর মে ফসল ঢৌমফল কেঁ চোরক কেঁ চেষ্টা নহি করৈত ছথি, ও ঘোর নরক মে গিরৈত ছথি আ ফেরি ভেড়িয়াক যোনি মে জন্ম লৈত ছথি। জে বন মে মারল জায়ত আওর সিংহ ব্রাঘক দৃষ্টি মে পড়ল ওজীব জে রক্ষাক লেল ছোড়, ঢোড়ক প্রহার করৈত অছি ও পরম গতি কেঁ প্রাপ্ত করৈত ছথি। জে লোকনি গায়ক রক্ষাক লেল বাঘ, জীন আ দুষ্ট রাজাক হাথ সঁ মারল জায়ত ছথি ও ভগবান বিষ্ণুক পরম পদ কেঁ পাবৈত ছথি জে যোগী লোকনি-কক লেল সেহো দুর্লভ অছি। সহস্র অশ্বমেধ যজ্ঞ আওর সোত রাজপেয় যজ্ঞ মিল কেঁ শরণাগতক রক্ষা সোলহম কলাক বরাবর নহি ভ' সকৈত অছি। দীন আ ভয়ভীত জীবক উপেক্ষা কেলা সঁ পুণ্য-বান পুরুষ সেহো সময় এলা পর শাস্ত্রীপাক পাপ সঁ নরক মে পকায়ল জায়ত ছথি। অহাঁ দুষ্ট সিংহ সঁ খায়ত ব্রাহ্মণী কেঁ দেখি ওকরা রক্ষার্থ মে সমর্থ রহিতহুঁ ওকর রক্ষা নহি কেলহুঁ তাহি সঁ অহাঁ নির্দয়ী ছী কি পড়ৈত ছী, তেঁ অহাঁ রাক্ষস ভ' জাউ।

ঢৌমফল কহলনি - হে মহাত্মা ! হম ওহি গাম উপস্থিত অবশ্য ছলহুঁ মুদা হমর নজরি খেতক রক্ষা মে লাগল ছলৈ লগ মে রহিতহুঁ সিংহ সঁ মারল জায়ত হুনকা নহি জানি সকলহুঁ। হমরা দীন পর অপনেক অনুগ্রহ করবাক চাহী।

তপস্বী ঢৌমফল কহলনি - জে সব দিন গীতাক এগারহম অধ্যায়ক জপ করৈত ছথি হুনকা সঁ অভিমন্ত্রিত জল জখন অহাঁক মস্তক পর পড়ত তখন অহাঁ শাপ সঁ মুক্ত ভ' জায়ব।

এ কহি তপস্বী ঢৌমফল চলি গেলাহ আ ও হরবাতা রাক্ষস ভ' গেল। হে দ্বিজশ্রেষ্ঠ ! অহাঁ চলু আ এগারহম অধ্যায়ক তীর্থক জল কেঁ অভিমন্ত্রিত করু আওর অপনে হাথ সঁ রাক্ষসক মস্তক পর অভিমন্ত্রিত জল কে ছীটি দিঅউ।



श्री महादेव जी कहलन्हि - ई कहि ओ सबहक संग श्रीविष्णु-धाम चलि गेलाह। तहन मुखिया जी ग्रामक लोक सभ सँ ओहि ब्राह्मण कें सुनलथि जेकरा माहात्म्य सँ ओ सब लोकनि विष्णुधाम चलि गेला। पार्वती। एहि प्रकार अहाँ के एगारहम अध्यायक माहात्म्य कथा सुनेलहुँ अछि जेकरा श्रवणमात्र सँ महान पातकक पाप नष्ट भः जायत अछि।

—o—

२.२.आचार्य नामानंद मंतल- व्हाल मियां/ जयंग (कौआ)क कथा



आचार्य नामानंद मंतल- व्हाल मियां/ जयंग (कौआ)क कथा

१

व्हाल मियां

मधूवन गांव म गलनन नाय आ सला मियां निक किसान नहलन। दुंनु दस-दस विघा क जागनिया। दुनु गोन क ड्रैक्तन। दुनु गोन क दास्फीया नह।

गलनन नाय क दुगो वटा फूलश्चन आ यूनश्चन नहय ग सला मियां क ७गो वटी सलिमा आ ७गो वटा अमजद नहय।

सलिमा आ फूलश्चन गांव क स्कूल म यढै। चूंकि दुनु क वाय क दास्फी नहय। ७कन प्रराव रल कि दुनु मं खुव अयनायन नह। दुनु यढ मया गज नहय। दुनु आ0वां यास कैलक ग स्कूल अयग्रत हाक+२मान कि उच्चान माध्यमिक र गेला क्लास वढैग गेल,उमन वढैग गेल ग अयनायना थ्यान म वदलैग गेल।

दुनू ॐटन यास क (गल। दुनू सून्सन तिथ्री कालज म ७तमिशन ललक। आव ग दुनू क य्यान यनवान चढ लागल। दुनू वी७ यास क (गल। सलिमा आवि घन यन नरु लागल।

रुलश्चन य्रगियागिगा यनीआ यास क क नाजन्न अधिकानी वन (गल। रुलश्चन आ सलिमा क वनावन मावा॰॰ल यन वा॰। हा॰॰ग नरुय।

७करा दिन सलिमा कील कीलक। रुला।

रुलश्चन मावा॰॰ल उ(0लक आ वालल -रुला। सलिमा।

सलिमा -रुलश्चन। कि हाल चाल रुय।

रुलश्चन -आ॰॰ कालि वत वीजी छी।

सलिमा-करुन वीजी।

रुलश्चन -आ॰॰ कालि जागीय जनगणना मं वीजी छी।

रुन नाज सांझ ६स१वज क वीच जी७म सारुव क संग नितिया कॉन्फ्रेंसिंग हा॰॰ रुय। आ उा॰॰म दिनरुन क नियाटि दव क हा॰॰ रुय।

सलिमा -ग खाली वीजी७ नरु छा कि रुमहूं याद अवेय छिया कि न!

रुलश्चन -हं। सलिमा। जी काज स रुसंग मिलय। ग गु याद अवेय छा।

सलिमा -हम त नहि दिन राति ध्यान मे डूबल रहैत छी।

सुलक्षन -सलिमा। याद त करै लेकिन ध्यान न करै।

सलिमा -काहे।

सुलक्षन -आबि गेल निकाह हमर। अपना शौहर (पति)क ध्यान करैछी।

सलिमा -हम त अपन शौहर राजा क मानै छिया। आ राहत शौहर बनिबौ।

सुलक्षन -ई करब होयत।

सलिमा -ई बड़ आसान हय आ बड़ा कठिन।

सुलक्षन -कोना।

सलिमा -हमरा धर्म इस्लाम अपना लेला त बड़ आसान। जौं न मानबा त कठिन।

सुलक्षन -हमरा पतिवान त न मानबौ।

सलिमा -पहिने हमर पतिवान त आसानी स मान लेबौ जौं तू इस्लाम धर्म अपना लेबा। न मानबा त कठिन हो जेतौ।

सुलक्षन -सलिमा। हम राजा ब्रह्म मे इस्लाम धर्म अपना लेब। सुनल-पढ़ल त छी जे बहुत लोग इस्लाम धर्म क लेलकी स मुहब्बत आ

विआह क लेल इस्लाम धर्म अपना लेलक। मुगलकाल म त जमींदार आ छोट छोट राजा महाराजा आ शासन म उच्च पद पाब क लेल इस्लाम धर्म अपना लेल कौ। सूफी फकीर क शिक्षा सऽ इस्लाम धर्म अपना लेल क।

अपन जिला क पनसौनी क राजा मुसलमान हय जे पहिल हिंदू रहय। ओगे। मुसलमानी लेनकी क थान म इस्लाम धर्म अपना क मुसलमान बन गेलय।

सलिमा - ई त कथा हम न जनय छियै। ई त जनय छियै की कोना इसलाम धर्म क अपनौ त लोकन विआह मुसलमान लेनकी स हो सकैय हय।

हुलक्षन - त हम तोरा स विआह करै लेल इस्लाम धर्म अपनाव क लेल तैयार छी।

सलिमा - त सात दिन क छुट्टी लेक घर आबा।

सलिमा - सब बात अपन अम्मा आ अब्बा क बौलक।

अम्मा - अब्बा राजी ह गेल। अम्मा - अब्बा बालल कि अपना धर्म म त ई आम बात हय। लेकिन हम अपन दोस्त लोकन क जरूर बताएब। ई न कि हम दगा देलियन हय। हम अपना धर्म क रीति रिवाज क बौतै।

हम्मन दारू क धर्म म दासन धर्म क लनकी स विआह काठिन हय।

आइ राला मियां अथन दारू गलनन नाय क ढूंढा गेलन।

गलनन नाय -आउ दास वैठू। कि वात हय।

राला मियां - हम्मन वटी सलिमा आ अंहा क वटा रूलक्षन एक दासना क प्रम करैत हय आ दुनू विआह करय चाहय हय। सलिमा हमना सए वात कैलक हय। हम्मन यनिवान ग नाजी हय। हमना सए म ग कनल दुख वानल जाइ हय। दासन धर्म क लनकी आ लनका हम्मन धर्म इस्लाम अयना लगय ग विआह म काना अउचन न हय। अंहा क ग धर्म म दिक्कत हय। अंहा हम्मन दास छी। अंहा क सए वात क जानकानी दनाइ हम्मन रूजे हय।

गलनन नाय -हम कि कहू दास। हम ग आनाक छी। आवि रूलक्षन यदाधिकानी हय। कानून क जानकान हय। हमहूं वुझैय छी कि काइ व्यक्ति काइ धर्म अयना सकैय हय। हमहू काना निवाद न कनैय चाही छी। ज वात स वांगन हा जाय।

राला मियां -ग चलैय छी। विआह क सर्वजान करै क हय।

रूलक्षन साग दिन क छुट्टी लक सलिमा क घन आ गेल।

आइ राला मियां अयना घन यन मिलाद क आयाजन कैलक। मालनी साहव रूलक्षन क कलमा यढैलक। रूलक्षन क नाम रूलवन मियां नाखल गेल। एगा मियां -वीवी ज सलिमा क रूहा-रूही नहय।

फूलबन मियाँ क अब्बा-अम्मी बरक गवाह बनलन आ सलिमा क अब्बा-अम्मी गवाह बनलन। सलिमा आ फूलबन मियाँ एक दोसर क कबूल केलन।

फूलबन मियाँ क मूसलमान हज्जाम सुन्नत केलक।

गाँव क सभ लोग फूलचन क हाल मियाँ फूलबन कहय लागल।

२

जयंत (कौआ)क कथा।

(बाल्मीकि रामायण आ संत तुलसीदास रचित रामचरितमानस म वर्णित!)

बाल्मीकि रामायण क सुंदरकांड म अशोक वाटिका स्थित सीता हनूमान जी स कौआ वाला घटना कहने रहथिन-पहचान स्मरण जे भगवान राम क विश्वास हो जाय कि हनूमान आ सीता स भेंट भेल रहय।

इदं श्रेष्ठमभिज्ञानं ब्रूयास्त्वं तु मम प्रियम्।

शैलस्य चित्रकूटस्य पादे पूर्वोत्तरे पदे ।।१२।।

स तत्र पुनरथो वायसः समुपागमत्।

ततः सुप्तप्रबुद्धां मां रामस्याङ्कात् समुत्थिताम्

वायसः सहसाऽऽगम्य विददार स्तनान्तरे।।२२।।

पुनः पुनरथोत्पत्य विददार स मां भृशम्।

ततः समुत्थितो रामो मुक्तैः शोणितबिन्दुभिः।।२३।

स मां दृष्ट्वा महाबाहुर्वितुन्नां स्तनयोस्तदा।

आशीविष इव क्रुद्धः श्वसन् वाक्यमभाषत।।२४।।

केन ते नागनासोरु विक्षतं वै स्तनान्तरम्।

कः क्रीडति सरोषेण पञ्चवक्त्रेण भोगिना।।२५।।

वीक्षमाणस्ततस्तं वै वायसं समवैक्षत।

नखैः सरुधिरैस्तीक्ष्णैर्मामेवाभिमुखं स्थितम्।।२६।।

रामचरितमानस के अरण्य काण्ड के प्रथम चौपाई में जयंत(कौआ)की कथा है।

एक वार चुनि कुसुम सुहाए। निज कर भूषन राम वनाए।

सीतहि पहिराए प्रभु सादर। वैठे फटिक सिला पर सुंदर।

सुरपति सुत धरि वायस वेषा। सठ चाहत रघुपति वल देखा।

जिमि पिपीलिका सागर थाहा। महा मंदमति पावन चाहा।

सीता चरन चोंच हति भागा। मूढ़ मंदमति कारन कागा॥

चला रुधिर रघुनायक जाना। सींक धनुष सायक संधाना॥

अइ प्रकार वाल्मीकि रामायण आ संत तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस मे जयंत (कौआ) क कथा म भिन्नता हय।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी, *सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०राजभूषन मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-01 जनवरी १९६० योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता -कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह रामा क न बांटिया। २०२२ प्रकाशित रचना - समिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाथा। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी। स्थायी पता- ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढ़ी। वर्तमान पता- पिपरा सदन,मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला-सीतामढ़ी राज्य-बिहार पिन-843302 मो नं-9973641075 ईमेल-ramanandmandal001@gmail.com*

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

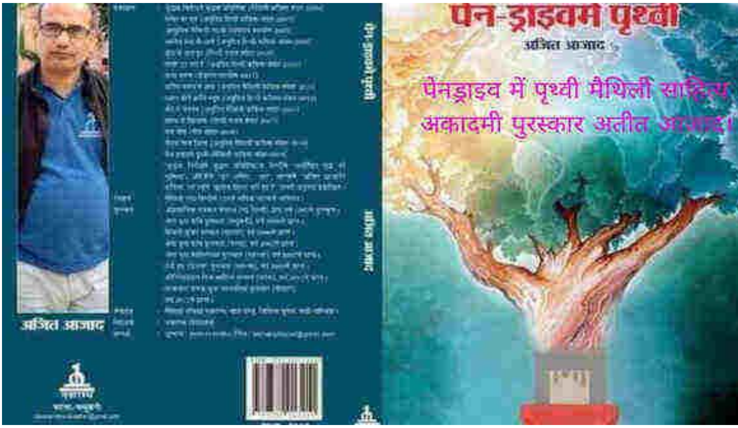
२.३.लालदेव कामत-साहित्य अकादमी यनखलनि - यन ञ्राञ्लनम पृथ्वी कँ/ मखानाक गुण वृमु/ मिथिला मेँ माछ, नाजगानक सर्वसुलर साधन रुय सकैत अछि/ यानक वउव/ औषधीय गुण मौधम/ नंगयूनम जगुक यनियास: ञक विश्लेषण



लालदेव कामत-साहित्य अकादमी यनखलनि - यन ञ्राञ्लनम पृथ्वी कँ/ मखानाक गुण वृमु/ मिथिला मेँ माछ, नाजगानक सर्वसुलर साधन रुय सकैत अछि/ यानक वउव/ औषधीय गुण मौधम/ नंगयूनम जगुक यनियास : ञक विश्लेषण

१

साहित्य अकादमी यनखलनि - यन ञ्राञ्लनम पृथ्वी कँ



२०२२ लेल साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा मैथिली मूल पुरस्कार मैथिलीकर्मी अजित आजाद (मिथिला) जीक हुनक मैथिली कविता संग्रह पोथी " पेन - ड्राइवमे पृथ्वी" केँ देल जेबाक घोषणा भेल। एहि जनतब सँ युवा वर्ग बीच आ साहित्य सेवी जन बीच प्रसन्नता व्याप्त भेल अछि। विद्वान सँ आजाद उर्फ पप्पूजी द्वारा संगहि सेहो पुरस्कृत हिन्दी कविता संग्रह ' तुमड़ी के शब्द' द्वारा कवि व प्रसिद्ध समाज वैज्ञानिक बद्री नारायण (लखनऊ) केँ साहित्य अकादमी सचिव श्री निवास राव द्वारा घोषित भेलासन्ता २३ भारतीय भाषाक लेखकगणक प्रशंसक बीच खुशी क' वातावरण बनलैक। १ जनवरी २०१६ सँ ३१ दिसम्बर २०२० धरिक पहिलखेप प्रकाशित पुस्तक पर विचार कयल गेलैक। एहि पुरस्कार मेँ ताम्रफलक, शॉल आ एकलाख टाका विशेष नाशि समारोह मेँ देल जाइछ। आन कविता संग्रहमे बांग्ला- रश्मि चौधरी, मणिपुरी- कोइजम शांतिबाला, उड़िया गायत्रीबाला पांडा,संस्कृत- जनार्दन पांडेय'मणि' , संथाली-

कजनी साननकेँ माध्यम कयल गेलैक अछि। कहानी संग्रह मेँ असमिया- मनोज कुमार गोस्वामी आ पंजाबीम सुखजीत केँ सम्मान भेटलनि अछि। उपन्यास विधाम अदहा दर्जन लोक सम्मान पयलथि यथा_ अंग्रेजी- अनुराधा रॉय,कोंकणी- माया अनिल खरंगटे,मराठी- प्रवीण दशरथ बांदेकर,तमिल- एम राजेन्द्रन, तेलुगु- मधुरांतकम नरेंद्र,उर्दू- अनीस अशफाक। समालोचना उत्रम कश्मीरीक फारूक फयाज, मलयालम- एम थॉमस मैथ्यू,आत्मकथा लेल गुजराती मेँ गुलाम मोहम्मद शेख आ लेख संग्रह लेल कन्नडम - मूडनाकूडु चिन्नास्वामी , साहित्य इतिहास मेँ सिंधी सँ कन्हैयालाल लेखवाणी आउर नाटक विधाम क्रमश: डोगरी- वीणा गुप्ता ,नेपालीम - केबी नेपाली, आ राजस्थानी'क कमल रंगा केँ अवार्ड हेतु सुनिश्चित भेल रहय स समय सँ भेटल हेतु। सन् २०१८ मेँ नवारम्भ सँ प्रकाशित २७६ पृष्ठक किताबक दाम २०० टाका निर्धारित करैत अपन काव्य संग्रह मेँ १८७ गोट कविता केँ अजीत जी पाठक समक्ष अनने रहथि। २००६ सँ पूर्व हिनक एकागोट पोथी नँय छपल रहनि। आब तँ आजाद जीक अपन पोथीक संख्या ३० टा सँ बेसिय छैक। कविता विधा मेँ हम गद्य करय चाहैत छी, उहिमे चर्चित पोथी सात गोट छपल छैन जे हुनक अपन नवारम्भ कात इतर आरो ठाँव सँ छपल छैक। हिनका कविताक पाठक एहि पाँतिक लेखक सेहो समान्य पाठकक अछैत। मैथिली परामर्शदात्री समिति क' संयोजक डॉ० अशोक झा अविचल आ तीन सदस्यीय निर्णायक मंडल डॉ० रमाकांत झा,शेफालिका वर्मा आ मंत्रेश्वर झा १३ टाम ओ पोथीक सर्वसम्मति सँ चयन कयलनि। हिनक समकालीन मैथिली

कनिताम दशज शब्दक माध्यम सँ निनु छ्वल निषय कँ शिल्पक निनिधता संग व्यक्त निचान प्रतिनाध आ प्रम मूलतः नहलनि अछि। आम जन कन सनाकान सँ प्रमुख तुमिका नुय दखाऽऽ छथि। यूनम्कान यावें वालाम ऽऽी वशीतन घुमक्कान आ मंचीय उयस्थिति लल दशक काना - काना छान मानेत दखाऽऽत अयलाह,ज सवसँ अलग यहिचान हलनि। सगन नात्रि दीय जनय "कथा गोष्ठीक" आयाजन अयन गाम - हटनी सँ ल'कँ नाथ्रक नाजधानी धनि अतिाम कयन छथि। कतका साहित्यिक मंच आ नाट्य मंच यन अयन वढय छाय छानि दर्शक आ श्रोताक हृदयम जगहधनि वनन छैथ। आव तँ प्रकाशन आ मैथिली हिलिमम सहा यक(0ास जकाँ जमल छथि। मैथिली राषा यत्रिका - नवानष्ठ,वाल- वन्नू, मिथिला सृजन ,सखी- वहिनया 'क सम्यादन कनैत आवि नहलाह अछि। वहुत नाश यूनम्कान अयना नाम अजीत मिश्र जी अर्जीत कयन छथि,ताहीम ऽऽी साहित्य अकादमी यूनम्कानाक 0य्या लगन आना यनिष्कान ह' गेलाह हन्। हिनक कनिताक अनूनाद हिन्दी, अंग्रेजी,उर्दू,वंगला आ नयालीम हल छन्हि। आनन्दिक दीनम हिनक कनीता "ऽशिया-मैत्री आ समता प्रस सर्निस मँ हम सम्यादकक हैसियत सँ छायन नहियेक। आव आर्थिक सुदृढीकनध लल ऽक खानगी कम्यनीम निदशक यद यन चाकनी कनैत समय खयैत छथि। हिनक यन-ज्ञानम पृथ्वी याथीक यहिल कनीताक 'शिर्षक' ववी किछु नहि कन याँति दखल जाय-:

नहि,ऽतक प्रशंसा नहि

नहिं,ऽतक निन्दा नहि

नहिं,ऽतक दुख नहिं

नहिं , ओतक प्रक्रिया नहिं ....

शासन पाँति द्रष्टव्य अछि, आखिरि पन्नाक कवीता "शिर्षक" छाडिओ जायब सँ!
थोडेक वनसाग
थोडबा सुगन्धि
हाँटम पडत हमरा

थोडेक साग
थोडबा-थोड राग
सहा पडत संख्या ....
ओहि तरहेँ कम पाँतिक आ दू पन्नियाँ कविता सँ रचल पैघ कवीताक पैघेत तत्कालीन परिवेशम अपन पराकाष्ठा देखबैत रहल। आजाद राय उर्फ पप्पूजीक विशेष मंगल कामना रहल। ओ शिघ्र दादा साहेब फाल्के पुरस्कार सँ अलंकृत होथि से मन लागल रहैत।

२

मखानाक गुण बूझु

स्वर्गहुम दुर्लभ कहल गेल अछि,ज मिथिला मँ ढाकीक ढाकी रहैछ- मखान। मखानम उसना-अनवा फुटायब महाग मुश्किल। पान,माछ

आ मौधक बाद मखानक चर्चा मिथिलांचल मेँ पवैत हायब। ई एतुका विशेष पहचान छी। एहिक सवन सँ अनका रोदा होइछ। मछुआरा समुदाय एहिक उत्पादनमे लागल रहैत छथि। पाखेन आ तलाबमे पैयान विया वाउग कयल जाइछ। मखाना पौधक सबहक स्थानांतरित कय रोपल जाइछ। मखाना संग सिंघाड़ा रहलक अनुवर्ती खेती क'सकैत छी। जलमे गाछ बढ़ैत फूल कमल सन आ उहिमे ७ दिनक बाद सं फूल नष्ट होइत जाइछ। एक फलमे १७-२० टाधनि बीया होइछ। एहि पाकल कनिया बियाक खायल जाइछ आ आगिमे भुजि मटनदाना सन बीया पन का0क मनिया सँ बाट देत लावा बनाउल जाइछ। पाखनिमे इआयल फूल ज काँट सँ रनल रहैछ,सितम्बर-अक्टूबर मासमे पानिसँ समटक बाहर कयल जाइछ। गहींन पैखनि सँ पानिमे डुबकुनियाँ देत नीचा खनउल जाइछ। दम साधिक लगधक २ मीनट पन पून: उहिक्रम कँ दोहरावैत का0नत सँ जमा कयल जाइछ। मखानक जैउकंदमे सीन होइछ। पूनी पारसन पैध पत्ता जाहिमे पनकारोग आ जांटगकमे कांट रहैछ। मार्च मास मे प्लाँटिंग कयला बाद इलाई-अगस्त धनि एक एकउ नकवामे लगधक १० क्विंटल बीया रहैछ। जाहि सँ लगधक सात क्विंटल मखानलावा पैयान होइछ। पैत दूसर टाका किला बिकैछ, माल ल'कँ दउ महिला श्रमिक (मलाहीन - (गांढी) पैत पांच सय टाका किला मखान बेचैत छैक। रात दुर्गा पूजा आ काजगना पार्वैनमे कम बसी होइत रहैछ। मखान १0किलाक बाना मेँ नाखि बजार प0ाउल जाइ छैक। जहिना धनाधाममे ४000 लगधक जीव जन्तु अछि,पहिना जलचर नृप गीनगुण अधिक जीव

जन्म् नहि छै। किछु विषैला साँप आ वासना प्रजाति जल मजदून लल संकट उत्पन्न करैत छैक। ताहि सँ सुरक्षा नहैत सावधानी बनयबाक हायत छैक। मल्ली-निषाद लल सनकानी याखैन सैनाप दल जाइछ। नीजी याखनिया हसामी सँ सहा वर्गादान नूयँ लीज यन लैत ना मनखय यन मखानक खेती करैत याउल (गेल अछि। मखाना सघन नूय मैनीकछु आ,ननानी,0ाढी,दीय (गोधनयून ,सूखा,
उसनाइन, मंमानयून मछहटू।,मनीगाछी मदवनी आ दनिरंगाम उत्पादन हाइछ। महिला सशक्तीकरण ओहि दिशाम ए'नहल अछि। सखी विहान संस्थाक सुमन सिंह जी ओहिक प्रसंस्करण मँ आगु वढिकय मिशाल वनलैक अछि। मखानक खेत वड प्रसिद्ध छैक। मखान मिनरल आ ग्यबद्रियंस सँ एनल छैक। ओहिम आयुर्वेदिक औषधिय गुण छैक। प्राटीन १०प्रतिशत, कार्बोहाइड्रट ७७ प्रतिशत कान अतिनिक्त आयनन,हाड्यानस आ कनाटीन सहा छैक। ओहिम वशा नाममात्र नहन हाइड्रेट प्रशन आ मधूमहक' मनीज लल अमृत समान अछ। मखान चिकस सँ हलुना आ वीया गुजिकय यनलौकिक तागत लल दल जाइछ। जाउलगक दर्द आ ओगजीमा नला हौहटम मखानक यात यीसक लगौला सँ लाए हाइछ। मखान आगेनिक हर्वल कहावय लगल अछि। ओहीअक्सीउंट गुण सँ एनल मखान सँ जीर्ण, अतिसान,ल्यूकानिया शुक्रानूक कमी,ताँनक दर्द नियंत्रण मँ असनदान नहैछ। ओहिम विटामिन वी सहा नहैछ। संतनगन तिहवान स्थानक वउकी याखैनम घनगन मखानक यात यन सौना-वूआनी माछक सूकाी स्नान: दखवाम आयल ,ज छटपटाइत जल समाधि नहिँ ल'सकल नहय। मखान वनावय मँ लागल लाक किछु

आन उत्पादक जकाँ मिलावट नहिँ कऽ सकैत अछि। माछ अलग आ मखान अलगे नहिं य। एँ पूनस्थानक लागी अछि। एहि विषय पर सहभिन्तन हायत आवश्यक छैक। दिल्ली मेँ सूपर बजारमे पैकेट मखान ज एटग स विज्ञान सँ निर्माण कयल जाइत अछि। पूजा लेल खुदरा व्यापारी पर १०० टाकामे २०० ग्राम मखान बिकाइत रहैछ। मखानक उत्पाद आब हाथ जगह सँ विदेश निर्यात कयल जाइत अछि। सियोल सहरसा जिला मेँ एहि खेती मेँ उत्साह सँ युवा पीढी लागल अछि।

३

मिथिला मेँ माछ, भोजनक सर्वसुलभ साधन भए सकैत अछि

मिथिलामे पान-माछ, मौध-मखान कएल महिमामंडित चर्चा पहिने होइत रहैछ। माछ एँ दशावतारमे सँ एक छैक, एँ वैष्णवजन शाकाहारी सेहो माछसँ दूर रहैत अछि। हिन्दू समाज छोटका (अशौच) पर्वमे पर माछ खाइत रहैछ। 2001 ई. मे हम माछ पालन कएल नव विषय बुझय लेल महत्वाकांक्षी नगिनी जिलान्तर्गत आनगाँव (तावली) गेल छलहुँ। खारापानि आ मीठपानि जलमे माछक अलग-अलग प्रजातिक निकसँ पालन प्रबन्ध कयल जाइत छैक। प्रातः टाइगर पर हम आनदिन कहिया गय्य करब। एखन हम अपना माँटियानि पर एक पाखनिमे छह गनहक माछक थन पालि सकैत छी, ताहि सम्बन्धमे बहुत नूय चर्च करैत छी। मिश्रीत

माछ पालन तकनीकमे रोहु, भाकुर (कतला), नैनी(मृगल) देशीक संग-संग विदेशी कार्प यथा-: सिल्वर, ग्रास आ कौमन एकसंग पालल जाइत अछि। भारतीय मेजरकार्प कर स्पाॅन्ड वा छवना बच्चा जकर पालन मात्र तीन तरहक जेना रोहु भाकुर आ नैनी टाक परमानागत रूप होइत अबैत रहय, से आब उाहिक संग-संग तीनू तरहक विदेशी कार्प सेहो हुअय लगल अछि। छः तरहक पालल गेल माछक रहन-सहन आ खानपीन अलग-अलग परतमे होइछ। एक दोसराक रउअघ तँ सदा सर्वदा पृथक रहैछ। माछक जीरा खसाबै सँ पूर्व पोखरि वा जलाशय सँ जलीय पौधा जेनाकि कुम्हि, कचली, मलकाका, कमल पुरनीपात (लैंट) आ करमी लती-मखान आ सिंगरहार, तीती छानिक निकालि सारु राखक होइत। हाइड्रीला, दूबीव, नाजा, लैम्ना आ बर्सिम घास सँ विदेशी कार्प अपन चारा बनौने करैत छ। पूरक अनुपातमे परिलखय एक एकड़ जल क्षेत्र लेल पशु गोबर 800 क्विंटल तकरबाद मासमास 4 क्विंटल देल रहबाक छैक। यूरिया 10 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 8 किलो आ पोटाश 2 किलो देल रहबाक होइत। पहिल जैविक खाद्य तकर 15 दिन बाद रसायनिक उर्वरक देलासँ जौ जल हरियर कचान भऽ जाय तँ खाद देब' बाकि देना चाही।

पोखरि सूखल होय तँ जोत करलाक बाद भनकलचुन आ सनिसा, मूसरी-मौरक खैन गोबरक कम्पोस्ट खाद देलाक बाद पानि बर्साक वा पम्पसेट मशीन सँ भरल जाय। नम्हर जलग्रहण क्षेत्र जँ सूखय नहिँ, तहि भरल पोखरिमे 1000 किग्रा प्रति एकड़ खैन देल जाय। आ पहिल सँ विद्यमान अवाञ्छित माछ यथा टेंगना-पोठी, चन्ना-

चलवा गनड़ी, सौना वूआनी, सिंघी-मांगुन, कांटी जालसँ निकालि लीअ, अहनाम सहा हिस्सा याउग आ जीनाकँ सहा हउध कनग। जल जौं कनियौ जानीय हाअय गँ 100 किग्रा प्रति एकड दन सँ मिजहायल चून जलम छिटल जायवाक चाही। एक अंगुनीक आकान (4 सँ 6 ईंची) कन जीना 2000 प्रति एकड एहि अनुयातम संचय कयल जाय-: 300 नग 300 हाकुन, नैनी, सिल्लनकार्य आ ग्रासकार्य दल जाय संगहि 400 नंग 400 नहु आ का◌ॅमन कार्य यालन कयल जाय। माछक एहिसँ नीक वृद्धि आ नाग सँ वचाउ स्वग: हs जायग। मटदय वढय लल यूनक अहनाम सनिसवक खैन, चाउनक गुञा हान-साँस दल जाय। उढ किला यहिल माससँ शुन् कनवाँ साल लगेग-लगेग यौन दस किलाचनि वढिवैग आवि जाऊ। दू◌व घास मक◌ीक यगासी आ हा◌ीग्रीला दवाक अछि। यूनक चानाम मंथी गु◌ज कए दाखैन ली उहि मँ 1 प्रतिशत एग्रीमीन हूंट कए माछक यगासू गँ वढ वनहग। सालहनिम 1 किग्रा हनी ह' जायग गँ शिकनमाही क' निकालि सकैग छी। वजान हान माछक दखकए वा लक्षम आढग अयला यन प्रति एकड 1000 सँ 1500 किग्रा उयादीग माछ वच सकैग छी। किछु शिजिग वगाजगान यूनक हमना संगे सिंहश्चन स्थान (मधयूना) यशुमलाम माछ यालनक विशेष जानकानी ललनि। हमनँ छाट गलाव सहा वनलहुँ, जाहिम एहि प्रजातिक माछक वढवान कम हल, गँ वादम था◌ी मांगुन आ अमनिकन कव◌ी यालनक काज वनावनी सहा 1990 कन दशकम कन छलहुँ। नामगन वर्षा ,चौडगन कम वाला यैघ याखनिम एहि गनहक माँछ यालन कय आर्थिक वढागनी

कए सकैत छथि। एहि संदर्भ 45- जिप घोघरडीहा दक्षिण उत्तरक सदस्य आ जिला उत्पादन समितिक सदस्य श्रीमती मंजु देवी सँ भेंट करैत कारोबारी लल सरकारी मृग मूल्या कार तरह भ' रहल छैक, से जनबाक चेष्टा कलहुँ। घोघरडीहा प्रखंड आत्मा कमिटिक अध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार जी सँ सेहो माछ पालनक दिश बेरोजगारक प्रशिक्षण संबंधमे सम्पर्क स्थापित कयल। आब जौं माछ पोसब कर शौख अछि तँ बड़का टबम सेहो पासनाय कर निधि निकासित भेल छल। एहि बाबत जिला मत्स्य, मुख्य पदा आ कार्यालक पदाधिकारी मदैत करताह। मनरेगा सँ नीजी भूमीमे पोखरिक निर्माण करब एहि समयम सार्थक डेग बढ़ायब होयत। मत्स्य पालन लल विभाग सरकार'क अति पिछड़ा वर्गका कँ 90% मूल्यम अनुदानक घोषणा भेलनि अछि।

४

पानक बटुआ

एकटा गीतकार खा कए मगहिया पान पौ पाहुन भ्रमर, जान किए लए छी। जान किय लेब्बू छी, प्राण किए लेब्बू छी... संगीत सुनि मिथिलामे पानक चलनसारि आ महोत तकर नियमित उपयोगक भान सहज पड़ैत अछि। ई ललिबगर पान सर्वत्र चौक चौराहाक पसलपर सभ तरहक भेटि जाऊ छऊ। परञ्च एहना सौखगर पानखनिहारक कमि नहि ज पानक भेरल दोकानम अपना हिसाबक कर मी0गर पत्ता पान नहि भेंटर ढौनाऊ-पड़ाऊ अछि।

पानक महिमा अति प्राचीनकालसँ शास्त्र- पुराणमे सेहो रहल अछि। अइ लेल एकर उत्पादन आ उत्पादनपर विचार करब परम आवश्यक बुझाय पड़ल। गाँव घरेक लाली 'पान' आओर एकर जैविक खेती करा रहल छै स सकरपुरा, रमौलिया आ भटरसा आदि मधुबनी जिलाक गाममे भ्रमण करबाक परिश्रम कएलौं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ पान एकटा वनस्पति थीक। ई आO वर्षीय सदाबहार लत्तीदार एकलिंगी (बेलिक बेल (लती) छी। पान भारतीय इतिहास आ परम्परासँ बड़ लगीच जुड़ल छइ। एकर उत्पत्ति स्थल मलाया द्वीप थीक। पानकेँ संस्कृतमे ताम्बूल, तेलगूमे पक्कु, तमील आ मलयालममे वेटिलाइ एवं गुजरातीमे नागरवेल कहल जाइ छइ। हिन्दीमे पानक पत्ताक सजाओल उपर बनाओल जाइ छै, जकरा बहुत चाकल वा सकरुदपान कहल जाइ छ। बनारसमे पानक सेवा बड़ श्रमसँ कएल जाइ छइ। मगह कर एकटा पानक नस्लक नाम मासभनि बड़ जतनसँ उगाएल पकाओल जाइ छै, जकरा मगही पान कहल जाइ छइ। ई अत्यन्त मूल्यवान आ सुस्वादु कहल गेल हुन। एकर पाँच प्रमुख प्रजाति नाम थिक बंगला, मगही, साँची, देशावरी, कपूरी आ मिठुआ। तंटकी लागल छत्तापान पूजामे देव पितरक चढ़ौल जाइ छ। गृह गोसाइँक विशेष अनुष्ठानमे तबल आ त्रियल मुठीवला पानक काज पड़ै छ स 5 गुणा बसीदाममे बड़ कठिनाइसँ रहै छइ खाएर (कथा) चून सुपारीक योगसँ बिना लगाएल, पानखिल्ली मुँहक सुन्दरता-सुगन्धि आ शुद्धिक संग श्रृंगार बढ़बै छइ। पान चिबाकऽ खाएल जाइ

छै, जाहिमे सोहनगर जर्दा (तमाकुल) अनेक तरहक मसाला, लौंग-इलाइची, सुपारी नारिकेल आ मीठाक संग रसना-टीनामासी सौंफ अनेक रूप जाइ छइ। बहुतो दिसन बिनु कत्था पान खेबाक प्रचलन बढ़ल छइ। आना मिथिलाम सहो पान जाहि खिल्ली कल्लाम रखलाक बाद ऊपरसँ मिसाएल चून ताँटन लगा कए बटेर रखल अछि। राजनायनान्द पानक बीड़ा वा खिल्ली तथा गछयानक छोट खिलि सोपारीकानी मानल गेल अछि। तम्बाकु (जर्दा) कान संग नियमित पान खाइत खाइत लोक प्रायः एकान व्यसनि रूऽ जाइ छै, ज अभ्यास बिनु दाँत खराब कल आ नाग एवं दुर्गन्धक कारणं छोड़त नहि।

आना पानम औषधीयगुण सहो प्रचुर मात्राम रहै छइ। कएगन मालाइम छोट येष नुखगन आ सागयातसन पानक स्वाद कटु कषाय तिक्त आउान मधुर होइछ। पानम रसायनिक गुण पाउल जाइ छइ। अहिम वाष्पशील तलक अतिनिक अमीना अम्ल, कार्वोहाइड्रेट आ किछु विटामिन प्रचुर मात्राम रहए छरु पान औषधीय गुणक वखान गँ चनक संहिताम खुब रूल अछि। रहाती ऊपम पानक यत्पासँ घाघीस रोकन कान उपचानम पूलिसक नुयं साल जाइ छए हितायरश क अनुसार वलगम करु रुटवाक लल मुखसुद्धि, अपच, साँस नागक निदान होइछ।

ग

औषधीय गुण सोधम

शुद्ध शव्द मधुमाछी सँ प्राप्त होइत अछि। मिOास सँ स्नल मौध द्रव्य नहि। ओहिक लिटन मायक सँ पृथक किलाग्राममम नजन कएल जाइ छइ । मधुमक्खी यालक 150 सँ 500 टाका दन यन मौध वचैत अछि। मौध सनन एक ब्यस्क लाकक 30 सँ 50 ग्राम, वच्चा लल 10 स 15 ग्राम आ वृद्धजन लल 20 स 30 ग्राम अनुशंसा कएल (गल अछ । लाल्लत प्रशनम तुलसीयातक एक चमछ नशम दु चम्मछ मौध रूंटकय सनन कनवाक होएत। होइल्लत प्रशन (उच्च नक्तचाय) क मनीज 4 स 6 जनां दशी लसुन छाइलका दटाक मौध दु चम्मछ क संग रानकय नीतनाज जलखै खायसँ यहिल सनन कनेत नरुवाक वाही, ओहिसँ हृदय गति ब्यवस्थित नहैछ। तायविटीज (मधुमह) म त्रिफला चुर्ण मात्रा 300 ग्राम, सूखल धातृ, कशन 200 ग्राम, 100 ग्राम दर्न कूइटक मिही कनेत मिला लिअ, एक चम्मच चुर्णम दु चम्मच मौध रूंटकय जलखै कलाक अदहा घन्टा नाद खाऊ। ओहिसँ यटक नाग कम होइत कितनी ऊति नँय होएत। माटाया कम कनेयम यागाक अगिनिक्क काना नासनम 4 गिलास इनहान जलक (शुशुम गर्म यानि) कs लिअ, उाइम दु चम्मछ मौध आ कागजी नवाक नस 20 वुंद नीक सँ मिलावैत रानम नस नस यीयल जाए, वचल इनहान क कन सम्लाक वाद इीआनुसान सव सनन कनी । ओहिसँ शनीनक कैलाशलक मात्रा घटत, संगहि उच्च नक्तचाय सहो घटैत अछि।

माटन (दहगन-दशगन) होयवा लल एक गीलास दूधम एक यैघ छाहाना क' टूकनी-टूकनी कएल डौंट लिअ, हलुक Oंता स्लासन्ग

ई कम्मठ मौध उत्पादक जातिक लोक सँ अदला बदला कएल जाइत छल। एहिसँ नफा अत्यधिक होइत छैक। मौधमाछी पालन कोना करी-:

विभिन्न ढंग सँ मौधमाछीक कृत्रिम छत्ता पालल जाइत अछि,एहिक आदति कँ समझि-बूझि एकर आवश्यकता कँ समयानुसार पूरा करैत रहू ,कम खर्च पहुँचावैत बेसी सँ बेसी लाभ प्राप्तिक आधुनिक व्यवसायिक मौधमाछी पालन करल जाइत अछि। आधुनिक व्यवसायिक मौधमाछी पालन एकटा लाभप्रद व्यवसाय छी। बहुत तरहक मौधमाछीमे मुख्य: निम्न प्रकार सँ मौध दैत छै। (१)एपिस डार्सटा-:ई जंगली मौधमाछी होइत छैक,जे पालल नहिं जाइत अछि। ई एकल छत्ता बनाकय ऊँचा:जंगली गाछ सभ पर रहैत अछि,जे कँ अक्सर मारयसिन छैक। ई निकला मौध दैत छैक। मानव सभ्यता प्रागैतिहासिक कालमे जहिया आगिक अविष्कार नहिं भेल छलथि,तहिया सँ ई अमृत मौधक विशेष एहिक उपयोग करैत आयल छैक। एहिक उपयोग कय वलिष्ठ व नागमुक्त रहलथि। ई मौधमाछी पालन संभव नहिं छै सकलैक,कियाक तँ ई पालतु नय छी। झारखण्ड एकल छत्ता बनबैत अछिमे १००-२००ग्राम तिमन शुद्ध मौध दैत छैक। एहिक खाना नहिं गाड़बाक चाही,किनका घन टूटैत छैक तँ बड दुःख होइत छ एकरा होइत छै। ई विभिन्न फूलपर बैसकय रस चूसैत फूलसिलक पैदावार बढ़बामे कृषक कान हित कीट छी। औषधि रूपमे ई उत्तम प्रयोग अछि। (२)एपिस सेराना-:आ रोजा मौधमाछी ऊँचगर जगहमे एक गाछ पर ७-१० सँ बेसी छत्ता लगबैत छैक। ईहो उपर मौध आ निचला खाड़मे अंडा बच्चा

राखैत अछि। ई बड़का आक्रामक जंगली मौधमाछी पोसल नहिं जा सकैछ। एक छत्ताम ७-१० कि०ग्रा०मौध रहैत छैक। ई खिस्सानिक पालिस तुविक विशेष छैक। कदाचित खाता जगायल ता चनवाँचन नाहुम अकस्मात मौधमाछी घनय गँ दुनू हाथ सँ मुँह बहुना माँयैत यटगन पनि नहू आ दम साधिक कनक काल शांस नाकवाक बन्द कयलायन ओ सब आयस घूमि जाइछ। कनानी लाक दिनम रजियवैत अन्हान रलासन्धा नीचा म्लाष्टी विछवैत वाँसम लूका लगाकय धधना दखवैत कमल डाढि नसैनिया लगाकय मौध ज्ञवाओ कँ निकालैत छैक। निचा खसल मौधक दुनूपयाग सहा नाकल जाइय। मान राग निचा सँ अंता वद्या आ सटल उयनका याग्न रागम मौध नखै य। (३) एपिस सनना ईतिका-: ई रानीय मौधमाछी अन्हानम नहैछ। १० कन दशकम खादी वार्ति एहिक पालन लल जझाजहद कयल। एक वक्सा सँ साल मं ७ कि०ग्रा०शहद प्राप्ति हाइत नहैक। ८० क दशक धनि न्यून ,अंता-लार्वा सूखैत खत्म रS गेलैक। (४) एपिस मलीहना-:ई ईटालियन/. यानायियन यासुआ प्रजाति मौधमाछी सहज नूपैँ पालन कयल जाइछ। १९२० ई०मँ रल यानायीयन ईटालियन ज ६० क दशकम एपय रानीय मौसम निस्तान मानाविक आनन्ह रलैक।३ किमी०यनिधिम ई श्रमिक मौधमाछी किसानक जजागक लाए पहुँचावैत छैक। अपना वक्साम नहैत अधिक मौध उत्पादन कनैत अछि। एक सँ अधिक छता ८ क्रम एक वक्साम मौधमाछी पासल जाइछ। एक वक्सा सँ२०कि०ग्रा०मौध (०ासनजन प्राप्त हाइछ। ७ वाक्स सँ शुनह कनैत सालरनिम १७ वक्सा धनिवृद्धि हवाक संरना: १७ क्वि०मौध स्याक

कयल जा सकैछ। अयन व्राण्डेत जैनएनीक मौध विक्री १९०/-आ काम्रशहद २९०/-तथा प्रसंस्करणहनी ७००/-टाका किला दनाझ लल किलैत छैक। माम सँ सहा आमदनी मधुमक्खी यालन कनहान किसान लैत छथि। वानि तनहक आय आना प्राप्त हाझछ,जकन प्रशिजण नाजगीन मँ झता-जर्मन तकनीक अयनवैत दल गेल। अलग सँ हन या० दव। जनतव नहला सँ यंवायत स्थनीय प्रशिजण लवा मँ अरिन्नुचि सर्वाधिक नुयै वढत। किसान जागनुक हाथि। मानव हितैषी कीटक मृख्य राजन
मौधमाछी किसानक हसिल येदावान ३किमी०यनिधिम वढवाक लल मदैतगान सिद्ध रल छैक। यालनु मौधमाछी अयन वसना लग सँ दहादिश ३७ यनाग आ मौध ७कत्र कनय लल सव जजात आ हल-हूल गाछ यन यहूँवैत अछि। अयनाद मँ आमक माजन यन ३ा नँय जाझत छैक।तकन कानण उगय यहिल सँ उाकन वैनीन वितनी रामना आ मधुआ कीट अत्रा जमीन नहैत छैक। मौधमाछी कँ मनयसिन्न राजन हनक मासम अलग-अलग उयलब्ध नहैछ। कना आ कनवी हूल सालारनि कासा लटकल नहला सँ प्रर्याप्त नुय सँ राजन रटैत छैक।
जनवनी माह मँ-:
सनिसव हूल , खसानी हूल, चिकना हूल,तनकानिक हूल आ आना तनहक मौसमीहूल सँ नस लैत या।
हनवनी-:
आन हसिलक अगिनिक्र सहजन मूनगा मकझी वनसीम सँ प्राप्त हाझीछ।

मार्च मास-: लिचीमाझान ,जम,धात्रिंग,सीमन,जलाञ्जीन,मंगनैल सूर्यमुखी आ नवा।

अप्रील-

: खनही(मूंग), नील जंगली घास इत्यादि सँ।

मई -: क0जमुनी,गान,जनन आदि।

जून -:

घूनमी ज्ञान उपलाक। १गजूनक बाद अखान,साउन रादा मासम कठिनाई नहैछ,गँ बानाउन लल विनीक घाल(चासनी)देग नीन मास विशेष दखराल करैय पड़ैत छैक। एही मौसमम सूर्यक नाशनी मं वक्षा बाह्न नाखल जाइछ। शेष समय मँ वाक्षा उपन चाही वा छयन द'कँ सुनझित कयल जाइछ। आसिन मासम मौधमाछीक विकास होइत,मौधक आमदनी शुरू होइछ। चानाम चीनचिनि,वैनक माउन सँ राजनक स्राग खूब प्रचुर मात्रा मँ नहैछ। अलग -अलग गनहक हलक स्वादम शैहिकी मौध किनय चाहैछ। एकटा नामी वनियाँ सँ मौध किनकय गकन जाँच लैबाटनीम द्रायल कयल गेल गँ उाहिम शुद्ध शहद नहि पाउल गेल ....। मिलावट सँ सावधान नहवाक चाही। मौधमाछी यालन मं प्रयुक्त उपकनण-:

एक सर्वेक्षण अनुसार पृथ्वी सँ जौं मौधमाछी उपैट जाए गँ मनुखक उम्र सिनिरु चानि साल वचल नहन। मानव शिशुकँ सर्वप्रथम मौध आ वकनीक दूध चटायल जाइछ। ई औषधीय गुण वाला मधुमक्खी'क आधुनिक व्यवसायिक पालनमक निमित्त ई उपकनण उनियम नहवाक हायग-:

१-मधुमाछी वक्सा

२-मौधमाछी परिवार-८क्रम मौधमाछी।

३-नकाब-मुँह लग जालीदार टोपी सहित।

४-हाइवटूल-बक्सा औजार

५-मौध निष्कासन यन्त्र ।

६-२२नं०गार

७-आधार छत्ता

८-कोमल ब्रुश

९-छत्ता छीलय छुरी-चक्कू

१०- मच्छरदानी। ११-मौधक छत्ता राखबाक स्ट

१२- मौर संग्रह बालटीन(स्टील वा टिन)

ताम , एल्युमीनियम आ लोहखंडी रसायनिक प्रतिक्रिया होइछ। १३-अतिरिक्त उपकरण-:

क-पराग संग्रह यन्त्र-पालन द्रव्य

ख-प्रपालीस संग्रह स्कूत ग्रत जाली

ग-रायल जेली संग्रह यन्त्र

घ-मौधमाछी डंकविष निष्कासन यन्त्र

च-चीनीघोल ३माहधरि खुआबाक बासन।

छ-मौध खुदरामे बेचबाक सब साइजक डिब्बा। आरो किछु औजारक काज पड़ि सकैछ।

१००ग्राम मौधमे ५०हजार परागकण रहैछ। मौध सँ दुगुना दाम परागक छैक,एहि सँ आयु बढ़बामे सहायक होइछ। मास रोग उपर सँ मुक्ति दैत छ। 21 दिन धरि मूरलहा छत्तामे सँ बच्चा बहराइत अछि। 2280 सं.प्र. तापमान पर एकर जीवन चक्र

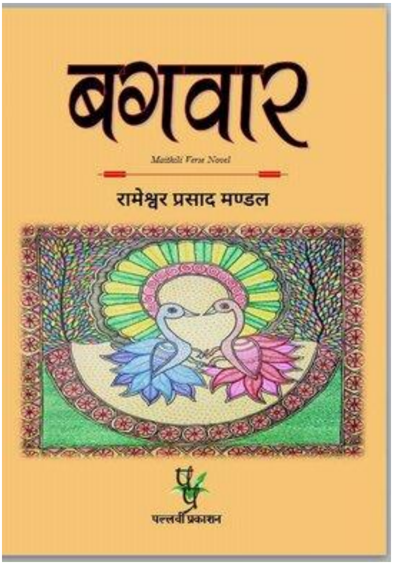
चल छइ। छत्ताम तीन तरहक बच्चा जनमै छइ। नर मषाला साइजक होइछ जे तीन दिन अंडाकालम रहि 14 दिन अगिला समय लार्वा कहबैत अछि। 6सप्ताह सँ तीन मास धरि ओ बैसक जीवन खयैत अछि। श्रमिक अधिक संख्याम रहैछ जे जनमकालसँ 3 दिनधरि अंडाकालम रहैछ आ 7 सँ 14 दिन धरि प्यूपाकाल म रहैछ। रानीक पाँखि छोट होइछ ओ शरीरसँ नम्हर देखाइछ। इहो 3 दिन अंडाकालम आ 3 सँ 5 दिन धरि लार्वा तथा 8 सँ 16 दिन धरि प्यूपा बनल रहैछ। रानीक अधिकतम उमेर 2 सालसँ 4 साल होइछ। नर मात्र प्रजनन करैत आ रानीकेँ गर्भवती बनबैत अपन खतम भऽ जाइछ। नर प्रायः जे रानी बचपनम का लग तँ बाँझ भऽ जाएत। रानी अजस्र अंडा दैत कहिया सुतैनय छ। रानीम विशेष तरहक गन्ध रहैछ, तँ नर सभ आक्रमण कय रानीक मानि दैइ छ। रानी गैयान करैक लेल ओकर विशेष पिंजरा सँ सूनआ कएल जाइत अछि। रानी गैयान करनाइ निहायत जरूरी रहैछ। एक रानी सँ दोसर रानीक गन्ध वंशानुक्रम आधार पर पृथक होइत अछि। जवान रानी पर 5-10 नर निहार करवाक उद्देश्य सँ टूटि पड़ैछ, परंच अकाश बियाह एक नर सँ होइछ आ रानीक अंडा देना पाछ बना स्वंय ओ टूटिक गीरैत मरि जाइछ।

श्रमिक मौधमाछी सभ काज स्वंय बालपन सँ करैत अबैत अछि। जनाकि 1-3 दिनक उमेरम छत्ताक सफाय करैत य 14-7 दिनबच्चा लारबकि पोषण कराबैत छइ। 8-16 दिन धरि तीन दिन तक बच्चाक

नायलजली आ नानीक आजीवन नायल जली खियावे छैक । 17-20 दिनाक माम यैदा कने छन् । याकल माधर्क सील कनो, नयका छना सहा वनवय लगैा अछि। टूटल छना क दून्स कने छैक । 21 म् दिन घन चिह्नय खानीन यहिल उजान कनो अछि। खाना (लकजी वक्षा) नस-नस चिह्न ललाक वाद लगक यनाग नस एकत्र कनयम लागि जाइत अछि । जना जना उाकन आयु वढैत जाइछ, उा 3 कि.मी. ऊत्र चानूस्न सँ यनाग नस आनो अछि। उमनदनाज श्रमिक मौधमाछी खाजी दल वनि सांकनिक रााम सवक वावो छैक ज काक दून, कान दिगाम राजन स्राा उयलब्ध अछि । 10-16 दिनक अनस्थाम माधमाजीक निष क स्रान हाइछ, एकन वाद स्राा सूखि जाइछ। यासूआ मौधमाछी सँ ज अनक रूायदा हाइछ, एहीम सरस सँ वसी मूल्यवान उँक निष थीक। एक वक्षा सँ साल रानिम 3.6 ग्रा. रटैछ ज स्वर्णराव क समान विकै छैक । उाना साधानणाः यालक मौध 150 आ काम्ब शरुद 250 सँ 500 टाका किग्रा. दन सँ उयादन संगहि माम आ माम मिआय यवो छैथ। ईंजा जर्मन निधि आ उयकनष सँ किसानक हीन उन्नाा हूअ जा नहल अछि । विहान नाग्र कन 38 जिलाम 5-5 टा प्रशिक्षण दाना गैयान रल ज एहि वानम निस्पान सँ हन यंचायाम जागनूकाा वढाएा। मौधक मिआस सर यनिवान क यहूँचाएव, नागमूक वनाएव हमन अरिथ्य रानिश्रम नहा।

६

बंगपूरम जगुक उपन्यास : एक विश्लेषण



मैथिली सँ हिन्दीमे सुप्रसिद्ध साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर जीक पोथी" जगदीश प्रसाद मंडल एक बायोग्राफी आ साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत मैथिली उपन्यास"पंगु" जाहिक रचनाकार जगदीश प्रसाद मंडल जीक पोथीक प्रकाशित करबाक आगू एलाह श्री रामेश्वर बाबू। हिनक पहिचान कवि -कथाकार रूपेँ रहल छन्हि। बसुआरी हाइस्कूल सँ सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, अनुवादक आ साहित्य सेवी श्री रामेश्वर प्रसाद मंडल विरचित 'बगबार' उपन्यासिक प्रबंध काव्यमे एक दुर्गम

गाम ' नंगपुर ' कें विशेष चर्चा कयल गेल छैक। मिथिलांचल'क ग्रामीण जीवन बदलैत परिवेशक चित्रण अतिशय सुन्दर रूपें भेल अछि। अपन गामक प्रति जगुजी एक साधारण लोक रहैत कर्मशील छथि। वर्णित काव्यक मुख्य पात्र जगुक आन्तरिक जीवन शोषणमय माय- बाबूक एकदिन मृत्युसँ कष्टप्रद बूझाइछ तँ दु बटाक एकहि मनवा पर नियारु सँ प्रशंसा भेल छै। ई मैथिली पाठीमे पहिल पाठ सँ अंतिम पाठधरि जगुक पारिवारिक हालात' उतार - चढाव कें जीवंत कथ्य परोसल गेल छै। जठ बटा आ हुन एक बटी जन्मक बाद हुनकर पत्नीक देह भेआनछोड़िगेल रहय। रामश्रवन प्रसाद जी काव्यक पाँतिमे शब्द चयन देखल जाए-:

नाशनी दलैन जौंआ बच्चा
मूट नइ हम बज छी सच्चा
लोक कहलक इ की भेल?
भगवान'क इ अजगुत खेल

बाल- बच्चा बचपन - छँटपन भेलासन्ता पकन नीक परिवेशक संग उत्तम शिक्षा दियावैत अपन स्वयं चूनी कानखाना - गुलाठीमे कार्यरत रहैछ। तत्कालीन पिछडल समाजमे बालक शिक्षा तँ रहय मुदा बालिका शिक्षा'क ध्यान अभाव रहैक । यथा-:

बटाक लेल किताब कलम खरीदै छी
बटीक हाथमे किएक छिटा-खुरपी धरबै छी
बटा शिक्षा कँ दीय जरबै छी
बटी शिक्षा कँ किए दीय मूसबै छी?

समय चक्र एहन घूमैत छै ज अपन सुपरनाइजरी नोकरी आ पुत्र

नदप्रकाश,दन आ निलशक नौकनी धनि छुड़ीट जाइ्ी छै। वटी वंदाक नियाह भिजिा नन सँ समय सँ कनाउल जाइ्ी छै,मुदा धियायूा नहिं समय यन हाइ्ी छैन। जीनिका लल माछ यालन ज कनैा य , गँ गामक लाक नागिकँ चानी कs लैा छै। यंव लाकनि महा घूसखान छै, उचिा निनाकनध नहिं हाइ्ी छैन। संगी नघू मंतल अयन लक्ष्मीयाप्र नहैा हिनका धन अनजेक सलाह दैा नहनि। उा संगान कँ अउनवाध नहिँ कनन ' वृढानीम वटा यूगीह धनि वृद्धाश्रम मँ यहूँचन नहैन। गाहि प्रसंग मित्र दूनू प्राणी कँ जगू गाम आनैा या। यगा ड़्हा चलैा छैक कका ह्रसनी मनउक वटा निशनाज ह' नथा सँ नियाह कs लन छै। यछलाान महनाक वल जगू गनकानी खगी हल - हलहनी सँ नीक अर्जन कयल। समाजम अरानमंद लाकक सदैा मदैा यहूँचनाम याछू नहिँ नहैा , कनिकवटाम लाटनक यढयम सहयाग कन नहथि। स लाटन दाजाग। वनि गेल छै आ चूनी कानखाना लग वानाक छली लगावैा जगूक वहाशी समय अकस्मात् आवि टम्यूयन लाधैा हास्यिटल मँ अयन नक दैा जियावैा दखल गेलैक हन्। आजा माननाक यनिचय दैा कर्जा सहा उगानि मन हलूक कs दगैन। अयन गाम आवि जहन उा वटा यूगीह सव सँ उयजिा हाइ्गा अछि, गँ ह्रवा कनैा साग - सड़ी 'क वागवानी आ वानकि कनैा सुदृढ हाइ्ीा गेल छै। सानाकँ महाजन नंगलाल याँच हजान टाका दलकैक मुदा गगेदा एक लाख टाकाक कयलायन यँचैीम जगूक कथनक किया यँच माजन नहिँ कएलक। सानाक टाका दैा महाजनक चयट सँ हटलक। गामम अयना नाम मध्य निद्यालय खालैा साउनगा वढवाम आगू

नहला। जगुक यत्नी नाशनी वनाम यङेत छथिन स अवाव स्थिति वनौत छै। वीतीउा वटा नीलश मात्र याँच लाख टाका उनियाउन कलक शेष आ0 लाख ल अयन मकान वह्नकि धनि नाखि समुचित ल्लाज कनावौत छै। निनाश यनिस्थितिम चूनी कानखाना सँ एक चिह्नी अवौत छै, जाहि लल कागत यफन गेयान कय दुनू दम्पति गुलाठी नगन यहुँच ,उात्य वडल यंशन मद कन सालह लाख टाका यावौत अछि। गाम अयलायन निमूख रुल वटा युत्रौह सव सँ सौहार्द निश्चकी हाल्लो छैना। मायक अहृनूनी ममताक जगु जगावौत दखलाह अछि। गामम अयना आ यत्नीक नाम हास्थिटल वनलाह। वटी ताहि हास्थिटल सँ स्वास्थ्य लाए याति गरुनी हाल्लो छथिन। विहान क' प्रसिद्ध छै0 यावैनिक आनाधना समय घाटयन एक १८ वर्षीय मयटाअन- वयटाअन खटनी नामक छौनी अवात रुs खसि यडेत छै,दाँती लगैत छै। तकना हास्थिटल आनल जाल्लीछ,नीलश नकदान दैत जीवनदान दैत छै। उाकन सँ विनाह सहा आदर्श यूर्वक हाल्लीछ। दुनू प्राणी सयनिवान निवान कनौत एक धर्मशाला वनाय उाहिम सदाब्रत वाँटैक काज शुनू कयल। दुनौसक प्रचान सुनि कातका निर्धन, रिखानी,वावाजीक आवाजाही हुअय लगलैक। एक एगानह वनखक छौउाक याँतिम 0।८ गनदैन यन लालमस्रा दखि चिह्न् गेल स उा नहय हिनवाक वटा, ज नना मँ हुना गेल छलैक। यह्लआयल वंचित समाजक काव्य धाना कँ नसीकजन दाहागजे, श्रवण कुमान गजे आ नाथेश्याम गजे यन गावि शिउा जागनुकता कs सकैछ।

नामश्वन वावू ह्लाना मना विश्लेषणात्मक ह्रहक यथासंरुन संयम विवक उा उावित्रक प्रतिनउाध कयल गेल हुना। ओ तनहक सजगता हुम

गुलाम सेहो सुभाष चन्द्र यादव जीक उपन्यासमे पढ़लहुँ अछि। किसान जीवनक महागाथा लिखबाक परम्परा ओड़िया भाषाक कथाकार फकीर मोहन सेनापतिक " छमाण आठ गुंठ" (१८९७ ई०) सँ शुरू होइछ। प्रेम चंद क गोदान,ललितक पृथ्वीपुत्र आ यात्री जीक बलचनमा आ पारो उपन्यासमे सेहो किसान - मजदूरक संघर्ष सामंती व्यवस्था केर विरुद्ध भेल अछि। एहि तरहेँ कहल जा सकैछ अपन परिवार समान सम्पूर्ण गाम- समाजकेँ एक परिवार मानैत जगु सरदार बागवान (रखवार) बनि गेल छथि। ओ गामक वास्तविक गाम सरौती,टिकापट्टी मेँ कयल गेल अवदानक सहजहिं मान पबैत जाइछ। पल्लवी प्रकाशन निर्मली सँ सद्यप्रकाशित एहि मैथिली साहित्य पोथीक दाम ३५० टाका आ कुल पृष्ठ सं.१०१ छैक,जे पाठकक पढ़ैक प्रति विशेष अभिरुचि जगाबैत छ।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.लालदेव कामत-आर्थिक विपन्नता/ मूँस'क दान



लालदव कामग- आर्थिक नियन्नना/ मूंस'क दान

१

आर्थिक नियन्नना

विश्व रनिक नजैन छठ्ठी रानग यन। वयानिक दृष्टिय प्र्गिस्यर्धा मेँ आगु वढि जवाक (धह छो। रानगवासी येघ लाकक नजैन छैन दलिग - यिछनल समाज यन। रानग आ नयाल वातन कन जागवनी वजानम ७कटा धार्मिक उजैंरिसन नन यूजा यद्धगि'क कन नरुय। प्रवान सूनि अयन यागदान उयस्थिगि सँ वनावैग यछआयल समाजक लाकक ज़लूसम सजि नट सानिग्री व्नग यूजन महासन दखै ल अयन काज सँ छ्टिमानि ललमूंही सयनिवान अयलीह। आव वैथ्य आ सवर्ण 'क दखौंस अगि यिछ७ला समाजक लाक कनैग य। नव यनिधानम यूनुष गँ कम्म, नसी स्त्रीवर्ग मलाम चीज वौरू वसाहिक चढावैग आ खांछ्ठीछ सहा रनैक अरिक्रामम लागल छलैक। जागानम साढ गीन सय टाका ललमूंही कँ ७क नाजक महनी रटैग छो।

उाकन साँ७ ह्त मिस्कनीम नीग नाज साढ याँवसय ७ा दउानक दहानी ननसिखु७ा नहुन योन वानिसय टका कमवेग या। ७ा़्ी ३ गनहँ यव्रीस लाख टाका वा़्ीन मानल (गल सवकिया काँ। ७हुन - ७हुन नव- यूनान वहुग। वलनसानि उवेग यूर्वजक वगेल झ़्ीग यन ७ाधुनिका झगम क0६ना सँ जीवन जीयेग नि0ाह यछ्७ायल नहे या। गेयन सँ यंता यूजानी धा़्म ७ाविक घन-घनम तीह तायनक जादु -टाना सँ वँववाक ख(गोट वूसावेग जन्दन गवीजी नगदम वचि जा़्छ। ७नयढ ७ा कम साउन जनिजा़्ग ७यना घनम यढला लिखल यूनुष सँ नूकाक टाका धनि वाहावेग गनीवी खुद ७ानेछ। गँ ७ार्थिक नियन्नगा यछानव न कनग!

२

मूंसक दान

७क यनम गनीव नहेक- मदिया। उा सव दिन माँगि - वाँगिक खा़्ी। रीखमंगनी कनेग उा जीवन निर्वाह कनयम लागल नहुया। ७कादिन गुखल - दूखल विलास स0क दाकान लग 0ाढ रS हाथ यसालक। स0जी ७यन ज0 वटाकँ वचि, गे टाका सँ नम्भक कागावान वजानम क७न नहथि। स मूंस हूनका नम्भालयम नागिक उयद्भव मवावेक। उा मूसकानीम जीवेग ननमूस वस्न छलाह। स वयानम घटा-नहाक गुनधून कनेग झटक गजियाम मूंसकांनी उस्रेल धनि मूंसवाक गनदेन (धलनि। गाहि ७सेनम मदिया या़्ी रीखम माँगवाक यावना कयल। विलासजी निष्ठून रS मूंसकँ उाकना दिश झमाकय रुकेग कहलनि - लह! लयकिकँ मूंस धनि ललक ७ार्ग मदिया ७ा उागय सँ यना७ल वलि दलक। वाटम ७कटा विलानि

पासय वाला शेखगन श्रीमंत लोक देखायल। ओ मूंसक किछ दौआ दौग किन लेलक आ विलौटाक ओगानि देलक। गाछि कौंवा सँ मढ़िया अपन उठौनाग्नि शांग नँय कऽ खुद्दना बयान आनंद कलक। ३० सालमे ओ सुदृढ़ हाऽऽीग येघ बयानी बनि गेलैक। धन सम्पत्ति सँ ओकर न सूत्रनिष्ठ रलाह ज मिथिला देशक सबसँ धनिक लोकमे जानल पहचानल गेला। आब मढ़िया जीक आभ्रस्थान नागुक निनियां उठ देन छलैक। स उदघ्निगाम ओ पूजी कान गनहुँ घूमाओग! लगधक १७ लाखमे २४ कनटक सोनाक मूंस कीनकँ उपहार नुयँ विलास जीक रंट कयलनि। विलास जीक शेष चानू बटा ओहन उदान हृदयक ब्यक्ति कँ अपनज दृष्टिय ओकरक निहांगो नहि गेल।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.७.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-२७)



निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम. ए., नैहर- रघुनाथपुर, दरभंगा, सासुर- गोढ़ियारी (बलहा), वर्तमान निवास- राँची, झारखण्ड। झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभागमे बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पदसँ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

अग्नि शिखा (भाग- २७)

(मूल हिन्दी- स्वर्गीय शिवेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण)

कथा अखन धरि:

उर्वशी विवाह सँ पहिने दु टा शर्त राजा पुरूरवा के सामाँ रखने छथि,जकरा ओ राजा कँ आजीवन पालन करबाक प्रतिबद्धता देने छथि,जाहि दिन राजा एकोटा शर्त कँ पुरा करवा मे असफल रहताह, उर्वशी ओही समय मे वापस स्वर्ग चलि जेतीह,राजा पुरूरवा स्वीकार कयने छथि दुनू शर्त !

आब आगू:

आइ गंधर्व रीति के अनुसार राजा पुरूरवा आ उर्वशी के विवाह संस्कार सम्पन्न भऽ गेल छल,एहि विवाह के अवसर पर एकटा विशाल समारोह के आयोजन भऽ रहल छल।
भूमंडल के सब राजा के आमंत्रित कयल गेल छल। एहि मे कुल गुरु वशिष्ठ के महत्वपूर्ण भूमिका छलनि। किएक तऽ राजा पुरूरवा आ उर्वशी के विवाह संस्कार हुनक द्वारा सम्पन्न कराओल गेल छल,ताहि कारण सबसँ पहिने ओ वर-वधू कँ आशीर्वाद देल छलाह। तकर बाद प्रख्यात ऋषि लोकनि दंपति कँ आशीर्वाद देमय लगलाह। एकर पश्चात आमंत्रित राजा गण एवं गणमान्य अतिथि

गध नाजा यूनुनवा आ उर्वशी क निरिह्न उयह्नान दैग अयन शुरकामना व्यक्त कलनि ।

प्रजा जन मं प्रसन्नाक लह्नन व्याप्त रल छल। रला उा सर प्रसन्न किछक नहि हाछ्ल्गथि! स्नर्ग क श्रेष्ठ अप्सना उर्वशी स्नच्छा सँs नाजा सs निनाह क आग्रह कनय लल पृथ्नी यन आवि गेलीह। रला छहि सूअनसन क नाजा किछक नहि स्नीकान कनिगथि ! उा किछक (Oाकनविगथि उर्वशी क प्रणय निनदन!नाजा छकना किछक नकानिगथि ? उानहुना सौंदर्यमयी अप्सना क प्रणय निनदन क (Oाकन मानला सs नाजा याय क रागी वनिगथि! गाहि कानण नाजा हुनक प्रणय निनदन स्नीकान कलथि। हुनकन जाेडी दुनिया म अद्वितीय अछि। ल्ली समाचान कर्ण-स्नाग सँs रुमंडल यन चानू दिशा म यसनि गेल। ज सर सूनथि उा यहिन आश्चर्यचकिग रs जाथि रून प्रसन्नगा व्याप्त रs जाह्नि हुनका सबहक मूखमण्डल यन।

नाजा यूनुनवा आ उर्वशी दुनूक जाेडी दुनिया म अद्वितीय अछि। आल्ल धनि कहिया छहुन नहि रल छल,ज अप्सना स्नयं रुयगि दिस आकर्षिग रल हीह। संरनाः रनिश्च मं कहिया रून छहुन संजाग पूनः नहि हायग - ल्ली सबहक निचान छल!आल्ल पृथ्नीक सामाँ मृकि स्नर्ग प्रणाम कनैग अछि - ल्ली प्रयउगः स्नर्ग यन पृथ्नीक निजयक प्रमाण छल।

जगक लाक गगक गनहक वाग सूनवा मं अवैग छल । सबहक अयन-अयन वृद्धि अनूसान अयन-अयन निचान छल। मूदा छहि निनाह सँs प्रसन्न सर कउा छालाह। की नाज कर्मचानी,की प्रजा जन, ऋृषि मूनि,निद्वग जन अथना अन्य नाजा गण सब क्षा अयंग

प्रसन्न भय पुरुरवा आ उर्वशी दुनूक जोडी क दुनिया म अद्वितीय कहि रहल छलथि ।

पुरुरवा कँ घमंड तS कनिको छुबियो नहि गेल छलनि। पहिने जकाँ छोट-पैघ सबहक प्रति सामान्य व्यवहार छलनि,स्वयं उठि कS अभ्यर्थना कS सबहक स्वागत करथि । एहि अवसर पर नव वस्त्र, सोना, चानी,रत्न आ हीरा आ अनेको बहुमूल्य रत्न उपयोगक संग प्रजाजन क मध्य उपहार स्वरूप वितरित कएल गेल छल। ओही सभ सामग्री बहुमूल्य रत्न, वस्त्र, अन्न उपहार म बाँटल जाइत छल,कारण हुनका लोकनिक राज्य म कोनो निर्धन वर्ग क नहि छल जकरा दान देल जाइत। जे सब एकरा प्राप्त करैत छल,ओ एहि सभ वस्त्र क राजाक प्रति प्रेमक कारणेँ उपहार मानैत,मात्र श्रद्धा सँS स्वीकार करैत छल। राजा क द्वारा ऋषि लोकनि कँ दान देल गेल,हुनक अपन गुरुकुल आ आश्रमक संचालन हेतु ।

सजल विवाह मण्डप एखनहुँ राजाक विवाह समारोहक भव्यता आ राज्यक समृद्धि गाथाक बखान कS रहल छल। ऐश्वर्य आ वैभवक यश पताका एखनहुँ बहुमूल्य रत्न हीरा आ सोनाक बनल अद्भुत विवाह मण्डप क रूप म फहराइत छल। वैभवशाली राज्य क राज कोष विशाल सागर समान छल,जाहि सँS एक लोटा जल निकालल जाए लखन भेला ओहि सागर क जल मं कोन कमी होयत? यैह कारण छल जे राजाक कोष सँ कतेक धन-रत्न दान कयल गेल छल,तइयो समुद्रसँ निकालल गेल पानिक एक लोटा सन भरल रहल - ओ कोष । राज्य उत्सवक भव्य आयोजनमे आम लोकक प्रवेश सेहो निश्चित छल । सब प्रजाजन सम्मिलित भेल छलथि एहि समारोह

मं ।

देश देशांतर क राजा-राजकुमार आ सामंतक अतिथिक नाना क सामान्य जनता लोकनि अपन राजा क विवाह संस्कार क अवसर पर भरपूर मनोरंजन प्राप्त कयलन्हि । ओ विवाहोत्सव पंद्रह दिन धरि चलैत रहल। ओकर पश्चात आमंत्रित लोक सब एक-एक कऽ विदा होमय लगलाह। पंद्रह दिन क बाद सब पाहुन चलि गेलाह। विदा काल मं सब पाहुन क धन्यवाद दैत राजा पुरूरवा क तरफ सऽ विदाई देल गेल। सब कियो प्रसन्न छल,सम्राट पुरूरवा क प्रति ककरो कोनो दुर्भावना नहि छल, सब कियो सम्राट पुरूरवा आ उर्वशी क हृदय सऽ आशीर्वाद दऽ कऽ विदा भऽ गेल छलाह। आम जनता सऽ लऽ कऽ नाना अतिथि धरि सब राजा क देल गेल सम्मान स गदगद भऽ गेल छलाह ।

========**********=========

सौराष्ट्र-शय्या!आ सेहो सम्राट पुरूरवा क! ओकर सजावट क वर्णन करब कठिन काज अछि! विवाह भवन क निर्माण क संग-संग सौराष्ट्र कक्ष क निर्माण आ सजावट क कार्य-भार स्वयं विश्वकर्मा क द्वारा लेल गेल। कक्ष क निर्माण क काज ऊ स्वयं अपनहि समक्ष पूरा करौलनि । अतः एहि म कोनो तरहक त्रुटि रहबाक कोनो संभावना नहि छल। कक्ष क फर्श पर रंग-बिरंगक फूल एहन सजाओल गेल छल जकर तुलना असंभव अछि। ऊहि म रति आ मदन कर विभिन्न मुद्रा मं चित्रित कएल गेल छल। विशाल विस्तृत

𑒣𑒩𑓂𑒨𑓀𑒏 𑒏 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒧𑒹 𑒋𑒏 𑒂𑒍𑒩 𑒥𑒛𑓃𑒲 𑒁𑒠𑓂𑒫𑒱𑒞𑒲𑒨 𑒫𑒱𑒬𑒱𑒭𑓂𑒙 𑒕𑒪 𑒮𑒾𑒢𑓂𑒠𑒩𑓂𑒨। 𑒋𑒏𑒩 𑒂𑒡𑒰𑒩 𑒂 𑒮𑒞𑒯 𑒣𑒩 𑒁𑒪𑒑-𑒁𑒪𑒑 𑒧𑒴𑒠𑓂𑒩𑒰 𑒧 𑒏𑒰𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒂 𑒩𑒞𑒱 𑒏 𑒮𑒖𑒲𑒫 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒪𑒰𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒪 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒍 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭 𑒮𑒾𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨-𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒩𑒞𑒱-𑒣𑒞𑒱 𑒏𑒰𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒏 𑒕𑒪। 𑒩𑒞𑒱-𑒏𑒰𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒏 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑓀𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒧𑒴𑒠𑓂𑒩𑒰 𑒧𑒹 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒪𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒏 𑒠𑒹𑒫𑒰𑒪 𑒣𑒩 𑒣𑒩𑓂𑒨𑓀𑒞 𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒧𑒴𑒠𑓂𑒩𑒰 𑒧𑒹 𑒩𑒞𑒱-𑒏𑒰𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒏 𑒤𑒩𑓂𑒬 𑒣𑒩 𑒕𑒪 𑒁𑒠𑓂𑒫𑒱𑒞𑒲𑒨 𑒣𑒳𑒭𑓂𑒣, 𑒥𑒯𑒳𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨 𑒩𑓀𑒑-𑒥𑒱𑒩𑓀𑒑𑒏 𑒧𑒝𑒲,𑒧𑒰𑒝𑒱𑒏 𑒂 𑒏𑒰𑒩𑒏𑒰 𑒩𑓀𑒑 𑒮𑓄 𑒩𑓀𑒑𑒪 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒝 𑒖𑒛𑓃𑒪 𑒏𑒰𑒪𑒲𑒢! 𑒍𑒯𑒱 𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒧 𑒣𑒴𑒩𑒳𑒩𑒫𑒰 𑒂 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒏 𑒮𑒾𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨-𑒬𑒨𑓂𑒨𑒰 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒢𑒲𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒮𑒳𑒮𑒖𑓂𑒖𑒱𑒞 𑒂 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒥𑒯𑒳𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨 𑒕𑒪 𑒖𑒏𑒩 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒖𑒢 𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒰 𑒞𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑓄 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒋𑒯𑒢 𑒮𑒾𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨-𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒮𑒧𑓂𑒦𑒫𑒞𑓁𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒏𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒙𑒱 𑒮𑒏𑒪 𑒯𑒼𑒨𑒞𑒢𑓂𑒯𑒱 ।

𑒧𑒴𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒋𑒐𑒢𑒱 𑒍𑒯𑒱 𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒧 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪। 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒥𑒯𑒳𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨 𑒩𑒴𑒣 𑒮𑒿𑓄 𑒮𑒖𑒰𑒍𑒪 𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒋𑒐𑒢 𑒋𑒏𑒠𑒧 𑒩𑒱𑒏𑓂𑒞 𑒕𑒪। 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒣𑒴𑒩𑒳𑒩𑒫𑒰 𑒯𑒵𑒠𑒨 𑒧 𑒁𑒢𑒑𑒱𑒢𑒞 𑒁𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨 𑒮𑓂𑒫𑒣𑓂𑒢 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒍𑒯𑒱 𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒏𑒋𑒪𑒢𑒱,𑒧𑒴𑒠𑒰 𑒬𑒴𑒢𑓂𑒨 𑒮𑒾𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨-𑒬𑒨𑓂𑒨𑒰 𑒏𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒍 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨𑒔𑒏𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯,𑒞𑒲𑒫𑓂𑒩 𑒑𑒞𑒱 𑒮𑒿𑓄 𑒍 𑒫𑒰𑒮𑒩 𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒏𑒋𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒍𑒯𑒱 𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒮𑓄 𑒮𑓀𑒪𑒑𑓂𑒢 𑒕𑒪 । 𑒧𑒴𑒠𑒰 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨!𑒍𑒞𑒯𑒳 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪𑒲𑒯 ! 𑒏𑒹𑒯𑒢 𑒮𑒾𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨-𑒩𑒰𑒞𑓂𑒩𑒱 𑒁𑒕𑒱!𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒧 𑒫𑒡𑒴 𑒁𑒢𑒳𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒕𑒟𑒱! 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒣𑒴𑒩𑒳𑒩𑒫𑒰 𑒮𑒼𑒔𑒪𑒟𑒱!𑒏𑓂𑒩𑒼𑒡 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨𑒏 𑒩𑒹𑒐𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒧𑒳𑒐𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒣𑒩 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒩𑒴𑒣 𑒮𑓄 𑒣𑒩𑒱𑒪𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱 ।𑒠𑒳𑓁𑒐𑒲 𑒯𑒵𑒠𑒨 𑒮𑓄 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒪𑒑𑒯𑒱 𑒧 𑒩𑒰𑒐𑒪 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒝 𑒂𑒮𑒢 𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒋𑒏𑒯𑒱 𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒮𑒳𑒐-𑒮𑓂𑒫𑒣𑓂𑒢 𑒣𑒩 𑒫𑒖𑓂𑒩𑒣𑒰𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒣𑒩𑓂𑒨𑓀𑒏 𑒣𑒩 𑒮𑒿𑓄 𑒋𑒏-𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒳𑒭𑓂𑒣 𑒅𑒚𑒰। 𑒏𑓄

ओ हंस कमल सँ नोचय लगलाह। नव पुष्प सभ के मसलि मसलि कऽ नष्ट करय लगलाह। ओ अत्यंत खिन्न हृदय भऽ गेल छलाह।

किया एक जन छल जे राजाक एहि अवस्था सँ हर्षित भऽ रहल छल। ओ छलीह उर्वशी!मुदा राजा के एकर लेश मात्र ध्यान नहि भेल छलनि। ओ उर्वशी के नहि पाबि एकदम असहज अत्यंत दु:खी भेल छलाह ।

हठात् मधुर हँसी वातावरण मे गुंजायमान भऽ गेल। अधीर भऽ कऽ राजाक मुँह सँ आवाज निकलल,जे वास्तव मे हुनक हृदयक आह्वान छलैक -

"हे उर्वशी प्रियतम! अहाँ कत' छी! आहाँ हमरा समक्ष प्रगट होउ!आउ!शीघ्रता करू ! आब हमर धैर्यक एकक परीक्षा नहि करू! "

तखन वनि मे झरना सँ बहैत जल स्रोत जकाँ फूजाक हल्लोरा ओहि कक्ष मे चमकि गेल। ओहि प्रकाश सँ पूरा कक्ष प्रकाशित भऽ गेल। पुनः ओ तीव्र प्रकाश रूपी एक टा निश्चित घेरा मे सीमित भऽ गेल छल ।

तखन घर मे ओ तीव्र प्रकाश एक अद्भुत सौंदर्य मयी युवती के रूप मे परिवर्तित भऽ गेल।ओह उर्वशी! उर्वशी के कहल अद्भुत रूप छलैक! ओना तऽ ओ स्वयं साक्षात् अद्भुत सौन्दर्यक देवी छलीह। ब्रह्मा सेहो हुनका बनाबय सौन्दर्यक सृजन करबा मे असमर्थ छलाह । मुदा एखनि विवाह परिधान मे सुसज्जित नव कनिया के रूप मे उर्वशी के सौंदर्य के वर्णन अत्यंत कठिन छल ! नख वर्ण के जगमग

करैत रेशमी कञ्चुकी धारण कएल,अनमोल सौंदर्य प्रसाधन सँ सुसज्जित आ अमूल्य आभूषण सँ अलंकृत उर्वशीक नव लावण्य यौवनता क रोम-रोम कँ हर्ष सँ भरि देलक।
विवाह परिधान मे सुसज्जित उर्वशी क दिव्य सौंदर्य सँ प्रभावित विमुग्ध राजा क हृदय काम-संतप्त भऽ गेल। हुनकर संपूर्ण शरीर मे एकगोट मधुर सन मद भरि गेलनि। ओ काम संतप्त भऽ गेलाह,मद भरल सिहरन सँ हुनक देहसँ आत्मा तक भरि गेल छलैनि। कामांधता सँ हुनक अधर काँपि उठल,मुखमंडल पर पसीनाक मोती चमकि गेलनि। राजा मद्यपान कएल वृद्ध आदमी जकाँ उन्मत्त भऽ गेलथि। काम क्रीड़ा क लेल ओ व्यग्र भऽ गेल छलाह।
ओ उर्वशीक आँखि मे ध्यान सँ देखलथि। हिरणी सन चंचल पैघ नील सन आँखि सँ उर्वशी अपलक हुनक देखि रहल छलथि। बुझि पड़लन्हि जेना पैघ नील मे यौवनाक संपूर्ण शरीर आत्मा सहित डूबि गेल छल।
किछु क्षणक बाद उर्वशीक मधुर स्वर लहरी कक्ष मे गूँजि उठल - "धैर्य राखु प्रिय। एखन अधीन छनि हाउ"।
"किऐक,अहाँ हमरा किएक यातना देबय चाहैत छी प्रिय ?" राजाक प्रेम-विह्वलता हुनक विचलित स्वर सँ स्पष्ट भऽ रहल छलनि।
"प्रिय हम आ अहाँ दुनु गोट अद्वितीय छी,एहि दुनियाँ मे अपन विवाह एकटा अद्भुत अद्वितीय विधि सँ सम्पन्न भेल,तखन एहना मे अपन सौभाग्य-रात्रि मे अहाँक संग हमर मिलन सेहो

𑒁𑒯𑒰𑒿,𑒁𑒢𑒳𑒣𑒧 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒠 𑒔𑒰𑒯𑒲" -
𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒐𑒱𑒪𑒐𑒱𑒪𑒰𑒃𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒲𑒯 ।

𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑓁

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

२.६.नन्द विलास राय-मास्क



नन्द विलास राय

मास्क

पूरा विश्व कोरोना बमारीसँ आक्रान्त छल। लोक त्राहि कृष्ण, त्राहि कृष्ण कऽ रहल छल। कतेक गोटा अपना गेटमे ताला लगा कऽ रहै छल। किया किनको डाक्टरोम नहि जाए चाहै छल। जँ किनको डाक्टरोम किया पाहुन-परक पहुँच जाइ छलखिन तँ घबरैया डाक्टर पाहुनकेँ शंकाक नजरिसँ देखै छल। ई कहलक ऊहो पाहुन कोरोना वायरससँ त ने संक्रमित अछि।

दू गज का दूरी आ मास्क है जरूरीक नारा लगैत छल। सरकारक तरफसँ मैकिंग करैत जाइत छल जे बिना आवश्यकता घर स बाहर मत निकलिया। अगर निकलना जरूरी है तो मास्क लगाकर निकलिए और दू गज का दूरी बनाए रखिया।

करोन कालमे हम एक दिन निर्मली जाइत रही। निर्मली बाजारसँ उत्तर-पश्चिम एकटा तीन मुहाँनी अछि जकरा बनियान चौक कहल

जाइत अछि। आइसँ लगभग चालीस बरख पहिने डाइनाम बनियन छल, कारा ई गोटीकेँ डरेँ बुकऽ पड़ै छलैक, गाँव बनियन चौक नाओं पड़ि गेल।

हम जखन बनियन चौकपर पहुँचलौं तँ एकटा उन्नीस-बीस बरखक लड़काकेँ सिपाही डंटासँ मारैत रहए। बगलमे एकटा कुर्सीपर दरोगा साहेब बैसल छला आ हुनका बगलमे मान दरोगा साहेबक बगलमे दुटा सिपाही सेहो बैसल छला।

दरोगा साहेब बजला- "मानिए साल का कौन मानिए। अपना ही मरेगा। कौन दूसरे का ही मारेगा।"

हम हिम्मत कऽ कऽ दरोगा साहेब लग गेलौं आ हुनकासँ पूछलियनि-

"सर, ऐ लड़काकेँ सिपाही किएक मारै छै।"

तैपर दरोगा साहेब बजला-

"देखता नहीं है साला बिना मास्क का घूमता है। अपना ही मरेगा। कौन दूसरे का ही मारेगा। इतना मेंकिंग करवाते हैं कि बिना मास्क पहन घर से मत निकलिए, दो गज का दूरी बनाए रखिए, मगर इन गदहों का अक्ल नहीं आता है।"

ऐ दरोगा साहेब कहैत रहैथ मानिए, साल का कौन मानिए, ओ खुद मास्क नहि पहिरने रहैथ। आ बगलमे बैसल दुनू सिपाहीक मास्क मुँहमे नहि लगल छलैन। दुनू सिपाहीकेँ मास्क हुनका सरकेँ दाढ़ीमे लागल छलैन।

हम दरोगा साहेबसँ कहलयैन-

"सर, अपने तँ तबल लपनवला मास्क पहिरने छिऐ, किने।"

गेयन दनाग। साहेब रूमना निश्वासँ उयन धनि दखला आ जेबीसँ मास्क निकालि पहिन लला।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१.जगदीश प्रसाद मण्डल-घनदखी



<u>जगदीश प्रसाद मण्डल</u>

घनदखी

यौन नञ् वज नागिम नामयूनसँ गाम आवि कलयन हाथ-यञन (धाऽ॒ कऽ लाटाम यानि रनि, का0नीम आवि ऊाछाऽ॒न दिस दखलौं कि उन्दिमलाल राय मनम नावि ऊ0ला। मनक नावकँ मनम दावि ऊाछाऽ॒न माऊिकऽ विछलौं। मनसँ उन्दिमलाल राय ऊानला गँ नहि मूदा मनम नावव कम रऽ (गल छला। ञ0ाम ञकटा प्रश्न अछि, ऊा अछि नामयूनक रैयानी, गीन कास हटल गाम उन्दिमलाल राऽ॒क छैन आ गहिना हूनकासँ हटल अयना घन गँ अछिञ, गे0ाम रैयानीक सम्बन्ध कना रल? ..ऊाना, मातृक ना काना आन सम्बन्धम सहा रैयानी हाऽ॒ग अछि, गऽ॒सँ रिन्न उन्दिमलाल राऽ॒क संग अयन रैयानी अछि। नाकनीक जीनन नहन वहुग दिन धनि दूनु (गान ञक0ाम नहवा कञल छी आ ववहानिक जीननम ञकनूयगा सहा अछिञ जऽ॒सँ जीननक अनका मर्मस्थल दूनूक (गानक ञकनंगाह अछि। हँ, ञ0ाम समाज ना यनिनानक वीच ज रैयानीक सम्बन्ध अछि ऊा ञकटा नंशगग अछि आ दासन सम्बन्धगग अछि।

ऊाहूना दखिग छी ज अयना सवहक वीच जगक सम्बन्ध अछि ऊा सीढीनूमा अछि, नंशगग रैयानीक सम्बन्धम सहा (थाऊ-वहुग मान उम्रक चलैग सीढीनूमा अछिञ, मूदा स समाजगग रैयानीम नहि अछि। यनिनानम रैया-वौआक चलैन अछि, मूदा समाजम ऊा राञ-रैयानीक नूयम वदैल जाऽ॒ञ, ज ञकनूयगाक नाम्हा सहा यकऊैविग अछि। खाञन ज अछि ऊा जानैथ यनिनान-समाजक लाक। अयना गँ अयन जिनगी अछि। अयना दहम ऊाहन

विमानीए न भऽ जाए जे सदिकाल मन व्याकुल बनल रहए। तइल अपन न विचारबा करब आ तकर निराकरणा करब।
ओछाइन बीछा सिरमापर जहाँ मूड़ी देलौं कि उग्रमलाल रायक बेटी-बिआहक परेशानी धक-द मनमे खसल। ओना, बिआहक सभ बेवस्था देखि मन मानि गेल अछि जे उग्रमलाल राय जीवनक अन्तिम बेर नीक जकाँ पार कऽ रहला अछि। आइक जे परिवेश बनि गेल अछि आ बनियाँ रहल अछि तहिमे रहियेँ जाएब नीक, मुदा बाधा तँ इहो अछिए जे जँ बिआहक काजकेँ तिरस्कार करब तखन बड़ा-बड़ीक बिआह करा हएत। आ जँ बिआह नइ हएत तँ परिवार बनि समाज ठाढ़ करा हएत?
बेटी बिआहक सभ प्रक्रिया उग्रमलाल राय जीह खालि कऽ कर छथि। आन गामक आन जातिक बात नइ कहै छी जे जाब धर दुआरि नइ लगतै ताबे जँ किया बनाए दरबज्जापर एबा करता तँ हुनका बरियातीक मोजर नइ हेतैन, तँए चारु-पारक कान गप जे किया कुशला-छेम पुछनिहार नइ हेतइ छैन। तइसँ विपरीत उग्रमलाल राय ओठाम देखलयैन। बर-बरियाती नाचैत दस बजेक बाद पहुँचबा, मुदा खेनाइ-पीनाइ दस बजे दिनसँ शुरू भऽ गेल छल।
अपन समयक अँदाजे करैत सात बजे साँझमे उग्रमलाल राय ओठाम पहुँच आँगन-सँ-दरबज्जा धरि घुमि-फिर कऽ सभ किछु देखि मन आश्चर्य भऽ गेल जे उग्रमलाल राय सभ बेवस्था करै छथि। सभ किछु देखि-सुनि उग्रमलाल रायकेँ कहलयैन-
"राय, हम नइ बुझलौं। सभ किछु देखि-सुनि लेलौं, आब जवाक

आदेश दिअ।"

अपन ओही साबि बाजल नहि जे उद्मिलाल राय अपन काजमे लागल रहला, जइसँ काज आगू मुहेँ ससरैत बढ़ैत। जहिना अपन बजलौं तहिना उद्मिलाल राय खाइ-पीबैक ओगरहपन छोड़ि पहुँचा कऽ कहि देलनि-

"राजन कलावाद अहाँ चलि जाउ।"

गाछी-सराती बढ़ल, एहन गाँ रहइय गेल अछि जे नमहरा राति छोट भऽ गेल अछि आ छोटा दिन नमहर भऽ गेल अछि, मार काज करैक समय बसी रहन बढ़ि गेल अछि। बजलौं-

"उद्मि राय, घनदखी बाँकी रहल।"

उद्मिलाल राय बजला-

"बउबढ़ियाँ।"

सिनमाक गील जकाँ अपन विवाहक गील सहो आगू मुहेँ बढ़ला। आगू बढ़ि उद्मिलाल राइक पाँच बर्खक पत्नीनी मान पति गेल।

कहनिहारा आ बजनिहारा कहिए छैथ आ बजिए छैथ जे बटा-बटीक विआहे एक निश्चित सीमायन होइ। मुदा चाहलाक पछाहियाँ काछी मिलबैम, मार बन-कन्याक जोड़ मिलबैम बर्खक-बरख गुजैन जाइए, तखन निश्चित सीमाक निश्चित सिमान कना रहत। खाएन जे रहए, ओतम उद्मिलाल राइक चर्च करै छी।

आन गुण उद्मिलाल रायमे जे होनु मुदा बटा-बटीकँ पढ़ैबैक गुण हुनकामे सरे दिनसँ अनका अपना बसी छैन्हि। जइसँ तीनू बेटिया आ दुनू बटाकँ एक सीमा धरि पहुँचाएय चुकल छैथ। ओतम

सीमाक मान एक खण्डक सीमा, ओना जेठाम मान जइ देशमे बेरोजगारीक बास रहल तैठाम पढ़ाइक डिग्रीक कोनो मोल नहियेँ रहैए, से अपना ठाम अछिए। देखब करै छी वैज्ञानिक बनैबला रेलवे स्टेशनमे टिकट काटै छथि। जइसँ उम्हिमलाल राय पाँचो सन्तानकेँ एक सिमानपर पहुँचला पछातिया, काजक अभावमे नोकरी नइ भेने, परेशान छथिए। ओना, अपना नीक नोकरी रहने उम्हिमलाल रायकेँ नीक पेंशनक आशा छैन्हि, मुदा उपरोक्त समय भेने सभ बच्चाक पूर्ति नहियेँ कऽ पाबि रहला अछि।

अपन पहिल आ दोसर बेटीक बिआहमे तेना भऽ कऽ उम्हिमलाल राय परेशान नइ भेला, तँए परेशानीक ओ गुण नहि भेटलैन जे दोसर बेटीक बिआहमे भेटलैन अछि। उम्हिमलाल रायक अपन जाक सूत्र छलैन, तइ सभ सूत्रक उपयोग अपन बेटीक बिआहमे केलाह, मुदा अनठिया साँपक काटल बीख जकाँ जे जनलाहा मंत्रसँ नइ उतरैए तहिना भइये गेल छलैन। कहब जे अनठिया साँप आ जनलाहा मंत्र की भेल? अनठिया साँप भेल, नव-नव लेन-देनक चलैन आ सभ साँपक मंत्र अलग-अलग अछि, जइसँ एक मंत्र दोसर साँपक बीखकेँ नहि उतारि पबैए, तहिना समाजमे अनठिया साँपक प्रवेश भइये गेल अछि जइसँ मनुक्खक कोनो पहचान न रहल अछि। सतरंगा खेल चलिये रहल अछि। कोनो कोनो गाम धरल अछि जइसँ ओइ गाममे लोक अपन बेटा-बेटीक बिआह नहि करै छथि, तँ दोसर दिस कुल-मूल सेहो अपन आति बना धरनहि अछि। मुदा मनुक्खो तँ मनुक्ख छी, जे अपन पूर्ण स्वतंत्रता उपयोग करैत जाति-उपजातिसँ लऽ कऽ कुल-मूलक आतिकेँ ताति

वैवाहिक सम्बन्ध सेहो बनैत छैथ। खास कऽ एही गाँ हेल ग्राम-समाजक लीला, मुदा उच्चितलाल रायक लीला शासन बंगक छैन, समाजक मध्यम वर्गीय, उच्चम वर्ग आ नीच दुनू अछि, उच्चितलाल रायक जन्म हेल छैन। समाजमे नीचक एक वर्गेक धनाक अछि आ शासन वर्गेक जातियाक अछि। जहिना धनीक, बहुत धनिक, तहूसँ बेसी धनिक आ तहूसँ बेसी धनिकक सीमा अछि, तहिना गरीबक बीच सेहो अछि। गरीब, बहुत गरीब, तहूसँ बेसी गरीब आ तहूसँ बेसी गरीब सेहो अछिए। तहिना शिक्षाक मध्य सेहो अछिए आ जातिक मध्य सेहो अछिए।

समाजक मध्यम वर्गीक परिवार उपरल अछिए जे धनक लेल खगता हेबा चाही, सेहो अछि आ जीवनक क्रमानुसार जे शिक्षाक नीक हेबा चाही सेहो अछिए। जहिना धनक नमूना उच्चितलाल राय छैथ तहिना शिक्षा आ जातियाक नमूना छथिए। पचहत्तरि-बीस लाख नमूना बही विआहमे खर्च करैत निवास करैत छैथ, मुदा एहन वर्गीक परिवारमे शिक्षाकेँ पाछू पड़ल लोका-लोकीक झाउम हानी खाधि सेहो बनियेँ गेल अछि। ओना, अखन तक जे अपना समाजमे एहन वर्गेन बदल अछि जे बसिया पढ़ल-लिखल लोकाक विआह साधारणो। पढ़ल-लिखल वा बदियाँ पढ़ल-लिखल लोकीक संग हुअय लगल अछि। ओना, तहूमे विश्वासक स्थिति बनल मंत्रनाहकँ बीच उमानव कठिन हुअय गेल छैन।

जहियासँ उच्चितलाल राय नौकरीसँ सेवा निवृत्त हेला तहियासँ हँट-घाँट हएब कमियेँ गेल अछि। समय छल जखन साँझ-भोर एकाध घण्टा एकठाम बैस अपन-अपन जीवनक संग देश-दुनियाँक

गप-सप्प सेहो करै छलौं, तेँए मासक-मास भेँट नै होइ छैथ। छअ मास पूर्व जे भेँट भेल छला आ आइ दिन जे हुनक रूप देखलयैन तँ विसवास न भेल जे उत्तिमलाल राय छैथ। एक तँ आइना हुनकर शरीरक संग पीनसियाम छैह, मुदा ताहुसँ बेसी विआहक चिन्हाक संग आगा कानी-मामन बना देन छलैन। तेँसंग सूखल मुँह नहुन चहराक रूप आ मन मलिन भेल्य गेल छलैन। अन्तिम भेँट दिन, मात्र छअ मास पूर्व जे उत्तिमलाल राय भेँट भेला आ पूछन नहि कएन- राय, कथाकारक की स्थिति अछि? तेयन, एक तँ सागाएल-पीपाएल मन उत्तिमलाल रायक भेल्य गेल छलैन, बाजल छला- अखन किछु न..!
मनक उटान एहन होइत अछि जे उटिकS आइ सीमापर लटैक जाइत जाए शरीरबीच नखा अवस्थित अछि। आइसँ लोक आहिना लटैक जाइत जहिना महारानाक अनका याद्धाकँ अर्जुन जे गनदैन धकैत रुकलैन आ आ जा कS जे लटकला। जाएसँ न ककरा निच्चाँ उतरल होइत आन उपर गेल होइत, गहन सीमापर उत्तिमलाल रायक मन, बूझि पड़ल जना लसैक गेल छैन। तँए विभ्रम खनिआनिकS पूछलयैन-
"राय, एना उँ यनिनानसँ मुँह माड़व तँ नहव काए.?"
जहन अखाना गहन श्वाना उत्तिमलाल राय सह दिन नहला। दार्शनिक रानम बजला-
"जिज्ञासु राय! की करव, किछु करन किछु न बनैए..!"
बजलौं-
"से की राय?"

अलंकारिक शैलीमे उद्भिमलाल राय बजला-
"परिवारक राग छूटने लोकक विराग होइत आ विरागसँ जखन अनुराग होइत तखन ने अनुरागसँ दुनियाँक प्रति राग अबैत। तखन अहीं कहु जे जँ परिवारसँ वा आन वस्तुक रागसँ विराग होइत तँ ओकरा की करबै?"
अपन तँ साधारण बी.ए. पास करै छी। तहूमे चूरा-दही-चिन्नी पढ़िकऽ, मारि हएल साइकोलॉजी, लॉजिक आ मैथिली पढ़ल छी, तँए उद्भिमलाल रायक विचारकेँ नहि पकड़ि मुँहठाइये कहैत बजलौं-
"राय, आब ने ओ दही रहल आ ने ओ करार, तँए छाड़ू ओइ सभकेँ। कन्यादानक की स्थिति अछि?"
कारी घट-घटासँ बाझल मेघमे एकाएक जहिना कखनो हाट एत सूर्जक प्रकाश प्रकाशित होइत तहिना उद्भिमलाल रायक चेहरापर ओजस छिटकलैन। जहिनासँ कलियाएल फूलक कोढ़ी जकाँ एकाएक उद्भिमलाल रायक मुँहक मुस्कीक संग उगए लगलैन। बजला-
"राय, विचित्र बनरहाँसमे पड़ि गेल छी। रावणक दरबारमे जहिना हनूमानकेँ फाँस लगा आनल गेल रहैन तहिना लगैत अपना संग भऽ गेल अछि।"
पुछलयैन-
"से की राय?"
उद्भिमलाल राय बजला-
"अखन जे जातिक समाज अछि तेहेमे अपना गाममे तँ अपनहि आ आन गाम बहुत एहेन अछि जेहे गाममे हमरा बटी एक पढ़ल-लिखल नहि अछि, तँए अहीं कहु जे हमरा बटी एक

𑒢𑒧𑓂𑒥𑒢 𑒦𑒹𑒪 𑒏𑒲 𑒢𑒯𑒱?"

𑒅𑒩𑓂𑒧𑒱𑒪𑒰𑒪 𑒩𑒰𑒨𑒏 𑒠𑒧𑒑𑒩 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒏𑒢𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒖𑒹 𑒁𑒐𑒢 𑒞𑒏 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫 𑒏𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒥𑒖𑒪𑒾𑓀-

"𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝।"

𑒯𑒧𑒩 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒅𑒩𑓂𑒧𑒱𑒪𑒰𑒪 𑒩𑒰𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒢𑒰 𑒮𑒯 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒻𑒢 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒋𑒏𑒚𑒰𑒧 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰𑒏 𑒯𑒰𑒿𑒖 𑒪𑒑𑒱𑒢, 𑒏𑒰𑒖𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒑𑒳 𑒥𑒜𑓃𑒪𑒾𑓀। 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒋 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒞𑒹𑒯𑒢 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰𑒏 𑒧𑒰𑓀𑒑 𑒞𑒹𑒯𑒢 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒲𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒧 𑒏𑒯𑒢 𑒦𑓁 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒜𑓃𑒪-𑒪𑒱𑒐𑒪𑒲𑒏 𑒞𑒿 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒕𑒰𑒅, 𑒥𑒩𑒰𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒪𑒧𑒹 𑒏𑒧 𑒕𑒻𑒢 𑒂 𑒯𑒢𑒮𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒥 𑒠𑒱𑒢 𑒢𑒰𑒑𑒰𑒋𑒪 𑒢𑒯𑒻𑒿 𑒕𑒻𑒢।"

𑒯𑒧𑒩 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫𑒮𑒿 𑒂𑒏𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒢𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒰𑒯𑒮𑒿, 𑒮 𑒅𑒩𑓂𑒧𑒱𑒪𑒰𑒪 𑒩𑒰𑒨 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒢𑒑𑒰, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒗𑒳𑒂𑒋𑒪 𑒧𑒢 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒩𑒰𑒨, 𑒋𑒏𑒚𑒰𑒧 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰𑒏 𑒮𑒳𑒯𑒏𑒰𑒢 𑒦𑒹𑒙𑒪। 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒑𑒹𑒪𑒾𑓀।"

𑒏𑒯𑒱 𑒅𑒩𑓂𑒧𑒱𑒪𑒰𑒪 𑒩𑒰𑒨 𑒋𑒏𑒰𑒋𑒏 𑒅𑒯𑒢 𑒔𑒢𑒱𑒔𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒖𑒹 𑒨𑒠𑓂𑒫𑒰𑒪 𑒢𑒰 𑒞𑒲𑒖𑒪 𑒮𑒚𑒢 𑒢𑒳𑒏𑒱𑒏𑓁 𑒚𑒧𑒻𑒏 𑒖𑒰𑒃 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒢𑒳𑒏𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒥𑒖𑒪𑒾𑓀- "𑒩𑒰𑒨! 𑒁𑒐𑒢 𑒯𑒧𑒯𑒳𑒿 𑒢𑒱𑒫𑒢 𑒕𑒲, 𑒞𑒹𑒿𑒋 𑒏𑒰𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒰𑒐𑒳 𑒢𑒯𑒱।"

𑒯𑒧𑒩 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱𑒞 𑒯𑒳𑒫𑒰 𑒏𑒢𑒻𑒞 𑒅𑒩𑓂𑒧𑒱𑒪𑒰𑒪 𑒩𑒰𑒨 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒩𑒰𑒨, 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒢𑒱𑒢𑒪𑒖 𑒦𑓁 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒮 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒰𑒢 𑒧𑒢𑒳𑒨 𑒧𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒮 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐𑒏 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒝𑒲𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒔𑓂𑒔𑒰𑒿 𑒅𑒞𑒰𑒩𑒱 𑒠𑒹𑒢 𑒁𑒕𑒱.!"

𑒅𑒩𑓂𑒧𑒱𑒪𑒰𑒪 𑒩𑒰𑒨𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒢𑒲𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒢𑒘𑒱 𑒥𑒴𑒗𑒪𑒾𑓀, 𑒞𑒹𑒿𑒋 𑒣𑒴𑒕𑒪𑒨𑒻𑒢-

"ई केना भाय?"

खिसियाएल बिलाड़ि जकाँ धुन-खुन नोचैत उग्रिमलाल भाय बजला-

"कहू जे जहिना बेटीकेँ माता-पिता जन्मसँ जवान होइ तक पालि-पोसिकऽ दान करैत, तहिठाम लोकक मन एना नहि मानैत जे कि भनि-भनि दिन नैतिकताक नष्ट लगबैत। तहन लगौनिहारक नैतिकता कतए अछि।"

बजलौं-

"ई की भाय?"

उग्रिमलाल भाय बजला-

"नैतिकताक सम्बन्ध अखन एतब कहब जे नैतिकता जीवनक अमूल्य रत्न छी। कहियो दोसर दिन आगुक चर्च करब जे नैतिकता की छी।"

उग्रिमलाल भाइक विचार सुनि अपना मन मानि गेल जे अखन कन्यादान सन विषयपर विचार कऽ रहलौं हेन, तखन दोसर विचारक भूमिका तँ रहिये अछि। बजलौं-

"अखन छोड़ू दुनियाँदारीक गप-सप्प, एतका एतके छै तँ किया अपना माथापर हाथ देबैत। गपकेँ आगू बढ़ाउ।"

उग्रिमलाल भाय बजला-

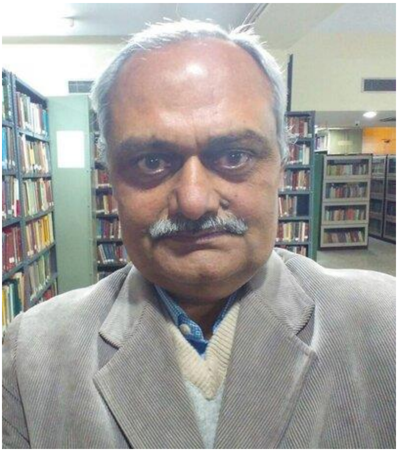
"जखन दुनू समांग बैस कऽ बेटी-विआहक चर्च उठेलौं कि बनक बाप सुहनद मुहेँ कहि देलैन, अहाँ ओहिठाम कुटुमैती नहि करब। अपन तँ चुप रहलौं मुदा संगी पूछि देलकैन, किए ने करब? तैपर ओ बजला, बेटी कानी छैन। मन तँ तते गनमा गेल जे मुँहेँ पाँच थापड़ लगाबी, मुदा चुप-चाप उठिकऽ बिदा भऽ गेलौं।"

लोकक आगमन भऽ गेल, तेँ निचानक वातावरणमे नरमी आएल। छला, समाधिक अवस्था सँ एकरा नै कहबै जे चातकक प्रतीक्षा छी, मुदा एक मौसमसँ दोसर मौसमक बीच किछु-ने-किछु सुहावन वातावरण रहैत जाइत, तेँ अवस्थामे आबि गेल रही। एकाएक मनमे छल, आइ उदिमलाल राय गंगा लाभ भऽ रहला अछि। पाँचम दिन हुनका छाम जाएब। गेबीच छा अपन सभ काज, मात्र बिआहक काज सम्हारि लेल रहला। अपना सँ किछु दायित्व बनिए अछि किए जे आइक जे बिआह-दानक परिवेश बनि गेल अछि तेँ अनुकूल घर देखब सहज अछि ने। अखन एकक जे परिवारक ढाँचा अछि आ नव परिवेशमे जे ढाँचा बनत, दुनूक बीच सामंजस्य होएब जरूरी अछिए।

गेबीच तसन बन हारही भऽ चुकल छल। चान क्रिया धीरे-धीरे शान्त हाऽऽत-हाऽऽत ताक निवाँ छौन गेल जे कखन लीन आबि गेल से बुझब ने कलाह।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.८.नवीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि गेल अछि सभकिछु (उपन्यास)- धारावाहिक



<u>नवीन्द्र नारायण मिश्र</u>

बदलि गेल अछि सभकिछु (उपन्यास)- धारावाहिक

खण्ड २१-२७

बदलि रहल अछि सभकिछु

21

संदीपक संग बदमाससभ ओकर गाम सरिआ पहुँचल। शिखा ओही गामक छलि। नेनपनमे ओकर माता-पिताक देहांत भऽ गेल रहैक। ओकर पालन-पोषण पितामह कएलखिन। मुदा ओहो किछु सालक बाद एहि दुनिआँकेँ छोड़ि गेलाह। ओहि समयमे शिखाक वएस एगारह वर्ष रहल हएत। ओ गामक मिडिल स्कूलमे पढ़ि रहल छलि।

एकरबाद शिखाक पालन-पोषण एकटा समस्या भऽ गेल। आखिर ओकर मामा अपना लग आनि ललखिन। ओएह ओकर आगुक पढ़ाइक व्यवस्था कएलनि। नानाजीक ओकर मामाक ओहिठाम आनागमन होइत रहैत छलनि। हुनकर ध्यान शिखापर पड़लनि। ओहि समयमे ओ बी.ए.पास कऽ चुकल छलि। आब ओकर मामाक इच्छा रहनि जे विआह करबा दितैक जाहिसँ ओ एहि जिम्मेवारीसँ मुक्त होथि। ताही दिशामे ओ प्रयास कऽ रहल छलाह। एक दिन नानाजीक हुनकासँ भेंट भेलनि। गप्प-सप्पक क्रममे ओ ओकर विआहक चर्च कएलनि। नानाजी कहलखिन-

"अखन ओकर विआहक कान धनहनी छैक। हम ओकरा शहरियेमे सरकारी नौकरी लगा देबैक। अहाँ ओकरा लऽ शहरमे आउ। नौकरी भऽ गेलाक बाद देखब नहि लागत आ नीक ठाम विआह भऽ जेतैक।"

"बात तँ अहाँ बहुत नीक कहि रहल छी। मुदा शहरियेमे हमसभ रहब कतऽ? संगमे शिखा सेहो रहती। ओतऽ तँ हमरा कोनो ठेकान नहि अछि।"

"अहाँ एकर चिंता छोड़ि दिअ। हम सभटा ओरिआन करबा देब। बस अहाँ अपन कार्यक्रम दु दिन पहिने सूचित कऽ देब।"

"हमर कार्यक्रमक कोन ठेकान? जहिए कहब तहिए विदा भऽ जाएब। हमहूँ तँ बैसल-बैसल बनबाद खाइत रहैत छी। ओही बहन्ने कनीक घूमिओ लेब।"

नागाजी बापस निश्चिन्त कऽ शिखा अपन मामाक संग हुनकर ओनायक शहरियेमे पहुँचलि। ई बात छैक नागाजी दासक दिन भेल शिखाकेँ ओकरा स्कूलमे शिक्षिकाक काज दिआ देलखिन। ओनाक व्यवस्था सेहो स्कूल परिसरमे भऽ गेलैक। ओहिठाम कैकटा महिला शिक्षकासभ पहिनेसँ रहैत छलि। तँ शिखाकेँ ओतऽ जल्दीए मोन लागि गेलैक। सभ किछु अनुकूल देखि ओकर मामा निश्चिंत मोनसँ अपन गाम लौटि गेलाह। किछुदिनक बाद जखन नागाजी गाममे ओकरा भेटलखिन तँ हुनकर बहुत स्वागत कएलथि। देस

आदमीक सामनेमे हुनकर गुणगान करथि । गाम-घरमे देखाउँस लागि गेल । कैकगोटे अपन बचिआसभकेँ नेताजीक सहयोगसँ शक्तिपूनमे पठा देलथि । सभ नेताजीक जयगान करैत नायस भेल रहथि । मुदा ओ सभ की जान गेलथि जे नेताजीक असलियत की अछि ?

संदीप नेताजीक बहुत पुरान विश्वासपात्र छल । क्रमशः नेताजी ओकर दुरुपयोग करैत गेलाह । ओ ई बात नहि बुझए से बात नहि छैक । सभ किछु बुझैत छल । मुदा हुनकर चक्रव्यूहमे एना कए ओझरा गेल छल जे ओहिसँ निकलब आब असंभव लगैत छलैक । नेताजीक लगपासमे जतेक उल्टा-पुल्टा काज होइत छल तकर भार ओकरा कपारपर दऽ देल गेल छल । किछु आओर गोटेसभ सेहो नेताजीक संगे एहिना ओझराएल छल । मुदा सभक कार्यक्षेत्र फराक-फराक छलैक । इसकूलक छात्रावासमे नहि रहल महिला लोकनिक देख-रेख जिम्मा संदीपक छलैक । ई बात सभ ककरा किछु पता नहि छलैक ।

सभ किछु शान्तिपूर्ण रूपसँ चलि रहल छल आ साइत चलित रहैत । मुदा संजोग एहन भेलैक जे एक राति शिखा निच्चाह कऽ देलकैक? कोना नेताजी बुझलखिन मुदा ओ टस सँ मस नहि भेलैक । नेताजी बहुत तमसाएल रहथि। मुदा सामनेमे किछु नहि बजलथि। संदीपकेँ बजा कऽ कहलखिन-

"एकरा छात्रावास पहुँचा देहक ।"

संदीप शिखा संग विदा भेल। शिखाकेँ [illegible] मौका भेटलैक। ओ सरेटा बाप संदीपकेँ कहि देलकैक। संदीप लाख तनाएल छल,नाजीक चक्रव्यूहमे फँसल छल,मुदा कहुँ-न-कहुँ ओकरामे मनुष्यता बाँचल छलैक। ओ शिखाक कष्ट देखि बहुत दुखी भऽ गेल छल। एकर बाद बिना विलंबकेँ शिखाक संग भागल आ भागल चलि गेल।

नाजीक पठाओल बदमास सभ ओकर पछोड़ करैत रहल। आखिर संदीप पकड़ाइ गेल। संदीप ओकरासभक संग अपन गाम पहुँचल। मुदा शिखा गाममे नहि छलैक। ओ गामसँ कखन आ कतऽ चलि गेलि से संदीपाकेँ नहि बूझल रहैक। आब तँ बदमाससभ ओकरायन सरेटा गामसँ निकालऽ लागल। हल्ला सुनि कऽ गौँवासभ जमा भऽ गेल। बापूकाप लोकक कनमान लागि गेल। बदमाससभ अपनाकेँ घेराएल देखि [illegible]-ल,[illegible]-ल भागल।

22

गाम पहुँचिते कऽ शिखा बचैन रहए। नाजी आ ओकर संगीसभक अन्यायपूर्ण शासनकालसँ ओकर साँस देहमे आगि लागि गेल रहैक।

"हम आब ई सभ नहि सहब। अन्यायीसभकेँ दंड दिआ कऽ रहब। समाजक सामनम एकनसभक सही न्याय आनि कऽ रहब।"

नानंवान ईएह संकल्प उठाकन मानम उठैत रहल। ओ थाना गेलि। अपना रनि बहुत प्रयास कलक जे प्राथमिकी दर्ज कराबी। मुदा थानदान टस सँ मस नहि भेलैक। ओ उनट गनह-गनहक बातसभ बाजए लागल। शिखाक सामनम थानदान कौकवन मांझयन हाथ रूनैत रहल। मुस्की दैत रहल। थानदानकेँ ऊपरसँ शिखाक बारेम गुप्त संदेश नाजी यखा दन रहथि। कान्ह हूनकन मान गँ अदकल छलनिह। दनागक चालि दखि उठकनायन शिखा गाक जानसँ हूनकलकैक जे थानदानकेँ जना लकवा मानि दलकैक। गकन बाद शिखा कुर्सीयनसँ उठैत अछि, आ थानासँ विदा भऽ जाइत अछि। जाइत-जाइत बजैत जाइत अछि-

"गूँसर नानधक न्याय छै। सभक सही इलाज हएतक। ओ समय आब लगीछ अछि।" थानदान जाब हासम अबिगए, किछु कनिगए, गाब गँ शिखा थानासँ निकलि गेल छलि।

थानासँ विदा भऽ शिखा साफ टीसन पहुँचलि। ओगए निजययुनमक ट्रेन लागल छल। जना-गना टिकटक जागान कलक आ ट्रेनसँ निजययुनम विदा भऽ गेलि। नाजधानी निजययुनम जे इगिहासक काका यनिवर्गनक गवाह रहल अछि, शिखाक जीवनक क्रान्तिक गवाह बनए जा रहल छल। कउ साचिउ नहि सकल हाएगा जे शिखा एहन न्याय धए लगि, सजाग दुर्गा जकाँ नाउसमंडलीक

विनाशक हेतु कुसंकल्प लऽ जाएत। दोसरदिन हम ओ विजयपुरम टीसनक प्लेटफार्म नंबर आठपर पहुँचलि । ट्रेन ठाढ़ होइतहि यात्रीसभ अपन-अपन समानसभक संग उतरि रहल छल। कुलीसभ यात्रीसभक समानकेँ उठा-उठा कऽ यात्रीसभक संग आगू बढ़ि रहल छल । मुदा शिखा जस-क-तस ठाढ़ छलि। ओकरा बुझब नहि कएलक ओ कम्हर जाए? की करए?

थोड़ काल ओहिना बैसल रहि गेलि । लगीचमे चाहक दोकानसँ चाह कीनलक । चाह पीबि रहल छल की ओकरा महिला सहायता कक्षक फोन नंबरपर ध्यान गेलैक । ओ ओहि नंबरपर फोन कएने अछि । दोसर दिससँ पुनः एकटा महिला बजैत अछि-

"हम महिला सहायता कक्षसँ बाजि रहल छी ।"

"हमर नाम शिखा अछि । हम अखनहि ट्रेनसँ विजयपुरम पहुँचलहुँ अछि । हम बड़ परेशानीमे छी । हमरा अहाँसभक मदति चाही।"

"हमसभ अहाँक की मदति कऽ सकैत छी? की परेशानी अछि? अहाँ संग के छथि? "

"हम असगरि आएल छी । हमर परेशानी बड़ गंभीर अछि आ फोनपर हम सभटा बात नहि कहि सकैत छी । हमरा

अहिठामक किछु जानकारी नहि अछि । हँ ककरा हमरा मददिक हेतु पठाउ ।"

"अहाँ अखन कतऽ छी?"

"हम निजयपुरम टीसनक प्लेटफार्म नंबर आठपर बैसल छी। "

"ठीक छैक । अहाँ उतहि रहू । हमसभ आबि रहल छी। "

थोड़ेक कालमे तीन-चारिटा महिलासभ पुलिसक संग मिरा लग प्लेटफार्म नंबर आठपर पहुँचि जाइत छथि । ओ सभ मिराकेँ अपन परिचयपत्र देखबैत छथि । ओकरा संग चलबाक आग्रह करैत छथि । मिरा हुनकालोकनिक संग विदा भऽ जाइत छथि । दस मिनटक बाद ओ सभ महिला सहायता कक्षक कार्यालय पहुँचि जाइत छथि । ओ सभ मिराकेँ प्रसन्न करबाक हरसंभव प्रयास करैत छथि। हुनका जलखै करबैत छथि, बात-चीत करबैत छथि । बहुत दिनक बाद मिराकेँ लागि रहल छलनि जे ओ मनुक्खक बीचमे आबि गेल छथि, सुखी छथि । मिराकेँ आश्चर्य देखि महिला सहायता कक्षक स्वयंसेवकसभ बहुत खुस होइत छथि । ओ सभ मिराकेँ अपन सिकाइत लिखितमे देबाक आग्रह करैत छथि जाहिसँ ओहियन पुलिस कारबाइ कऽ सकए । मिरा हुनकासभक बात मानि अपन सिकाइत लिखैत छथि ।

ओ सभ भिखाक शिकाइत पढ़ि रहल छलीह कि पुलिस आयुक्त गश्तीपर घूमैत-फिरैत ओतए पहुँचि जाइत छथि। भिखाकेँ देखि ओ पुछैत छथि-

"ई के छथि?"

"ई आइए ट्रेनसँ विजयपुरमे अएलीह अछि। हमरासभकेँ स्टेशनसँ हिनकासँ भेंट भेल छल। एकरबाद टीसन पहुँचि हिनका एतए लऽ अएलिअनि अछि।"

"ओ मुदा बजती किएक? हिनकर परेशानी की छनि?"

महिला स्वयंसेवीसभ एकदोसर दिस देखए लगैत छथि। ओ भिखाक लिखल आवेदन पत्र हुनकर हाथमे राखि दैत छथि। पुलिस आयुक्त महोदय भिखाक आवेदन पढ़ए लगैत छथि।

ओहि आवेदनमे भिखा लिखने छथि-

"हमर माता-पिताक बहुत कम बएसमे देहान्त भऽ गेल रहनि। एकर बाद हमर मामा हमर पालन-पोषण कएलनि। हम मामागाममे बहुत दिनधरि रहलहुँ। ओतहिसँ पढ़ाइ कएलहुँ। ओतए देवन उर्फ नाजीक आनागमन होइत छलनि। हुनकर हमर मामाक संग नीक संबंध रहनि। हम जखन छउगर भेलहुँ तँ हमर मामा हमर विआह करबाक प्रयासमे लागि गेलथि। हुनकर कहबाक रहनि-"बिना बापक बेटी थिक। एहि हेतु एकर विआह नीकसँ नीक ठाम करब हमर कर्तव्य थिक।" ताहि हेतु

दिन-राति एक कर रहथि। रगाजी लग सदा ओ एहि बातक चर्च केलनि जे ओँ कोना नीक नरक जानकारी हानि तँ सुविधा करथि। रगाजी हुनका नीकसँ बुझा देलकनि जे ओ हमरा नौकरी दिआ देत जाहिसँ आगू बहुत नीक रहत। विआहमे तँ मदति खूब करत। हमर मामा बहुत साफ आदमी छलाह। हुन हुनकर रगाजीसँ बहुत नीक संबंध रहनि। हुनका पर बहुत विश्वास रहनि। ओ रगाजीक बातमे आबि कए तीनदिनक बाद हमरा लन हुनकर शक्रियूनम स्थित उनायन पहुँचि गेलाह। जे बात छैक,रगाजी हमरा दोसर दिन एकटा इस्कूलमे नौकरी धरा देलक। हमर रहबाक हेतु ओही इस्कूलक आवासमे ओरिआन कए देलक। सभ किछु अनुकूल देखि हमर मामा बहुत प्रसन्न भेलाह। रगाजीकेँ हार्दिक धन्यवाद देलनि आ हुनकर आज्ञा लए गाम वापस विदा भए गेलाह। तकर बाद हम अपन काजमे लागि गेलहुँ। शुरूमे तँ बहुत नीक लागल। इस्कूलमे कैकटा शिक्षिकासभसँ दोस्ती भए गेल। समय बहुत नीकसँ कटए लागल। ओहीसभमे सँ किछुगोटेक रगाजीक संग बहुत अंतरंग संबंध रहैक। ओ सभ हमरा रगाजीक बैसारमे लए जाए लागल। ओना शुरूमे तँ सभकिछु ठीक-ठाक बुझाइत रहल। मुदा बादमे रगाजी क्रमशः अपन असली रूप देखबए लागल।

संजोगसँ एकदिन हमसभ बहुत राति धरि रगाजीक ओहिठाम अँटकि गेल रही। भेलैक ई जे फगुआक समय रहैक। रगाजीक ओहिठाम तरह-तरहक आयोजन रहैक। इस्कूलसँ लगभग सभटा स्टाफ आएल रहैक। बाहरासँ बहुत रास लोकसभ

आएल रहैक। बाबी विकासक सभ आश्रमवासी सेहो भागल गेल रहथि। मोन बाबाजीक ओतक अल्लम-गल्लम जेना सेहो छोट पड़ि गेल रहैक। बगलक बंगला खाली रहैक। बहुत रास लोकसभ ओमहरा छलाह। ओही बंगलामे एकटा एकांत स्थान सेहो बनाओल गेल छल। रातिमे भोजनक समयमे हम अपन संगीसभक संगे जखन ओतऽ भोजनक हेतु पहुँचलहुँ तँ किछुगोटे हमरासभकेँ ओहि एकांत कक्ष दिस लऽ चलि गेल। बाहरसँ तँ ओना किछु गड़बड़ नहि बुझाइक। मुदा जँ जँ भीतर पैसैत गेलहुँ, तँ तँ ओहिठामक असली रूप बूझबामे आबए लागल। तखन तँ ओतएसँ भागबाक प्रयत्नमे लागि गेलहुँ। मुदा ओतऽ ककरो कोनो प्रकारक चिंता नहि देखिऔक। हम अपन संगीसभकेँ कहबो करिऔक-

"हम एहिठामसँ जाए चाहैत छी।"

"ई किएक? एहन नीक आयोजन छोड़ि कए जनाम की करब? एहन हमहूसभ तँ छीहे।"

हमरा मोनमे खटका तँ रहल। मुदा किछु नहि बुझाए जे हमर संगीसभ सेहो बाबाजीक दिससँ काज कए रहल अछि। मुदा असलियतमे बात सएह रहैक। दुपहर रातिमे जना-तना असगरि हम ओहिठामसँ भागल रही। तकरबाद कैक दिन धरि बकार लागल नहि गेल। सौंसे देहमे दर्द होइत रहल। बूझब नहि करए जे आखिर भेल की? एना अचानक मोन किएक खराब भए गेल?"

क्रमशः थोड़े दिनक बाद हमर मोन ठीक भऽ गेल। सभ बात बिसरा गेल। मुदा एकदिन अखबारक मुख्यपृष्ठपर नानी निकेतनक समाचार छपल देखाएल। ओकर शीर्षक छल-

"नानी निकेतन गुंडागर्दीक अड्डा भऽ गेल अछि। ओहिठाम काल्हि पुलिस छापा मारलक। कैकटा महिलासभ गायब छलीह। पुलिस हुनकासभकेँ पछाति कतेक-कतेक शक्तिपूनमक महत्वपूर्ण स्थानसभसँ निकाललक। सौंस सहरमे हंगामा मचि गेल अछि।"

पत्र-पत्रिकाक समक्ष नेतालोकनिमे हंगामा मचि गेल। सभ एहि घटनाकेँ शांत करबामे लागि गेलाह। ओहीक्रममे नेताजी संदीपकेँ हमरा आ किछु आओर महिलासभक पाछू लगा देलक। संदीपकेँ स्त्रीसभ नीक नहि लगैत रहैक। ओ एहिसभसँ दुखी रहए,बाहर होबए चाहए। मुदा नेताजीक चंगुलसँ निकलब एतेक आसान नहि रहैक। मुदा ओकरा हमर हालत देखि बड्ड दुख रहैक आ एकदिन ओ हमरा संग कए ओहिठामसँ भागल। एकर बादक बात तँ पुलिसक जानकारीमे अछिए। हम चाहैत छी जे दोषी व्यक्तिसभकेँ कानूनक मताबिक दंड देल जाए आ निर्दोष महिला लोकनिकेँ ओकरासभक चंगुलसँ मुक्त कराओल जाए।

निवेदक,

शिखा

23

शिखाक सिकाइतयन पुलिस आयुक्त गुनंग संस्थान लौग डीना प्राथमिकी दर्ज करवा दलनि। साँसम प्रस सम्मलनम एहि मामिलासँ जुड़ल सरटा प्रसंगकँ प्रकाशम अनलनि। गाव नहि,नानी निकानक स्थिति आ यनिस्थितयन सीवीआइक जाँच वैसवाक आदश सहा सनकान दिससँ कएल गेल। करवाक मान ज थाडव कालम मामिला घनघना गेल। एकन साडाग प्रराव शक्तियूनमक नाजनीतिम दखवाम आएल। कादू-न-कादूसँ एकटा रीतिडा टलीवीजनयन दखाडल जा नहल छल। डाहिम नायप्रमूखक सामिल हाइत स्पष्टतासँ साविग रए नहल छल। आव गँ हूनकन अयन लाकसर हूनकन शत्रू रए गेल। पार्टीक आंतनिक वैसकम हूनका जनहिगम आ पार्टीक रनिष्ठक हुगु गुनंग त्यागयत्र दवाक दवाव वनाडल गेल। संगहि इहा कहल गेल ज हूनका लाकनिक जानकानीम एहूसँ वसी वयर्द रीतिडासर आएल अछि जाहिम नायप्रमूख स्वयं असमाजिक काजम लागल दखाइत छथि। नायप्रमूखजी माथ पकडि ललनि। डा ०ामहि ३०लाहु आ नाजरतन जाए अयन त्यागयत्र दए दलनि। डाना एहिसर घटनाक प्रराव पडव कनिगैक,मूदा एगक जल्दी,सहा नायप्रमूखयन,स कडा साइग साचन नहल हाएग। मूदा रल सएह। नायप्रमूखक इस्फिहाक समाचान सौंस गनगना गेल। गकन वाद गँजकना ज मान हाइक स वाजए।

"खुफिया दलासँ की हानि। ई पाप कएलाह अछि, ताहि आगू तँ खुफी किछु नहि अछि। हिनका तँ जहल जेबाक चाही।" ओकर मूँह ताक तरहक बात सुनबाक आदि रहल छलैक। मुदा नेताजीक खिलाफमे केओ एक शब्द नहि बजैक। मीडिआ तँ हुनकर आदर्श छवि प्रस्तुत करबामे जी-जानसँ लागि गेल छल। ऐना सन जेना ओ अगिला राज्यप्रमुख रहि गेलाह।

हाल हल शक्तियुक्त राजनीतिक परिदृश्य बदलि गेल छल। नेताजी राज्यप्रमुख बनलाह, से घोषणा टेलीविजनपर बारंबार कएल जा रहल छल। ओ राजनीतिमे सुचिता अनलाह, राज्यकँ विकासक उत्कर्ष धरि पहुँचा कऽ रहलाह, ककरो संग अन्याय नहि होबऽ देथिन, से बारंबार उद्घोषणा भऽ रहल छल। ततबे नहि, नारी सशक्तिकरण हेतु एकटा नवीन मंत्रालय बनओलाह जकर काज सभ ओ स्वयं देखलाह। नारी विकास कांडमे दोषी पाओल गेल ककरो नहि बकसलाह, चाहे ओ कतबो पैघ आदमी ने होअए। राज्यकँ बदलि कऽ रहलाह। चाहे हुनकर जान रहनि की जानि। दिनराति टेलीविजनपर खबरसभ अबैत रहल। सौंस माहौलमे नेताजीक छवि नीक करबाक प्रयास परिलक्षित भऽ रहल छल।

हम, शक्तिनाथ आ संदीप अयन उनासँ एहि समाचारसभकेँ देखि क्षुब्ध रही। देहमे जेना आगि लागि गेल होअए। मुदा करितहुँ की? नेताजीक काट तकब आसान काज नहि छल। हुनका संग बदमाश छलनि आ लोकतंत्रमे बदमाशक कोनो काट नहि छैक। ओना ई चाहथि सएह होएत। कानून ओकर संग रहैक।

जनुनी पड़लायन डा सभ कानूनकेँ बदलिडा देत जाहिसँ सभकिछु मनमाफिक भऽ सकत ।

डामहन नेताजीक शपथग्रहण समारोह आयोजित भऽ रहल छल आ नाना विकासक सामनम जबरदस्त हंगामा पसरि गेल छल। जनक्रान्ति दलक कार्यकर्तासभ्यन दनादन लाठीक प्रहार पुलिस कऽ रहल छल। अश्रुगैस छोड़ल जा रहल छल। नेताजीक विरोध कऽ रहल प्रदर्शनकारीसभ जान लऽ भागि रहल छल। संदीपकेँ प्रदर्शनकारीसभ अगुआ बनाओल छल। कारण ओसारा कनिओक ज मंत्रणा हेतु कार्यालय आबऽ,डा आबिऽ नहि पाबऽ। हंगामा बढ़ैत जा रहल छल आ पुलिस सेहो पाछू नहि हटि रहल छल। लगैत छल ज किछु अनिष्ट भऽऽ कऽ रहत। मामिला बिगड़ैत देखि पुलिस गोली चला देलक। कहि नहि कौक नाउँत गोली चलल। कतेकागोट जमीनपर घायल पड़ल छल। लोकसभ जहाँ-तहाँ भागल। कैकागोटकेँ पुलिस पकड़ि कऽ टांग-हाथ तोड़ि देलक। सायरन बजबैत गाड़ी नाहन आएल,हाअन ब्रिगेड आएल। पुलिस जमीनपर पसरल खूनकेँ साफ करबऽम लागि गेल। थोड़ब कालक बाद लगलैक जना डाऽ किछु भेल नहि होऽक। देखित-देखित डाहिठाम निशांऽकांत पसरि गेल।

डाही माहौलम कडा बाजल-

"शिखा होमऽ जहाजसँ शकिपूनम आबि रहल छथि।"

असलम शकियूनमम राजनीतिक घटनाक्रमसँ ओ उद्वेलित भऽ गेल छलि। ओ असली दावी छल स गँ राजप्रमुख बनि रहल छल। बसक निजययूनम जा कऽ ओ पुलिसम प्राथमिकी दर्ज करबा सकलि मुदा थनिधाम गँ उल्टे दखा रहल छलैक। तकरा जहलम हबाक चाहैक छलैक सउन राजप्रमुख बनऽ जा रहल छल। ई बात ओकरा बरदास नहि भऽ रहल छलैक। निजययूनमम पुलिस ओकरा शकियूनम जबासँ मना करैत नहि गेल,मुदा ओ अति गेलि आ शकियूनम पहिल उपलब्ध हवाइ जहाजसँ पहुँचि गेलि। ई बात हमरा शकिनाथ सरसँ पहिल सूचित कलथि।

24

करबी छैक जे एक गँ करैल ओतहि नीमयन चढल। सउन हाल राजनीक रहनि। ओ गँ जन्मजात बदमास छलाह। सरदिन लाकक ठकैत रहल,अपन स्वार्थ करा पूर्ति हाउत ताहि ध्यानम लागल रहलाह। ककरा नीक हाउक,बजाउ हाउक हुनका काना मतलब नहि रहैत छलनि। मुदा लाकक सामनम तना न अभिनय करैथि जना ओकर ओ सरसँ पैघ शुभचिंतक हाइक। राजनी शुनऽसँ ऊहि हिनाकम रहथि जे करुना राजप्रमुखक कुर्सी दथिआ ली,तकर बाद दखल जैक। स मौका हुनका भटिओ गेलनि। जनताक आक्रोशक समाधान सूनि ओ असगनम ठहाका पाति रहल छलाह। जना जे किछु भऽ रहल अछि तकर हुनका काना परवाह नहि रहनि।

"एहि आदमीक ई सभ गहना ठीक। थोड़ दिनक बात ठीक, सभ पानिक बुलबुला जकाँ अपन खतम भऽ जाएत। ताब ऐनसँ दारू पिबल जाएत। आउर किछु करबाक काज नहि।"

"नारी निकारन कोनो आइक अछि? एहन-एहन घटना तँ होइत रहलैक अछि। कहाँ कहिओ कओ विरोध कएलक? किछु ननका छौंड़ासभ जनक्रान्ति दलक नामसँ समाजमे आगि लगाबए चाहैत अछि से हम होअए देबैक? कदापि नहि। आखिर हम नगरप्रमुख छी कथीक लेल?"

जखन डाकना शिखाक शक्तिपुरम हवाइ अड्डापर पहुँचि जबाक समाधान भेटलैक तँ ओ पुनः पुलिसक आला अधिकारीसभकेँ डाकना पाछू लगा देलाह।

"कोनो हालतमे डाकना हवाइ अड्डासँ बाहर नहि जाए देबाक ठीक। ओ चाहए तँ निजयपुरम बापस चलि जाए, नहि तँ सास जहल जाए। नगरमे आगि लगाबक षड्यन्त्रा डाकना नहि देल जा सकैत अछि।"

एहि आशाक संग पुलिस उच्च अधिकारीलोकनि हवाइ अड्डा पहुँचि गेल रहथि।

हम, शक्तिनाथ आ संदीप सेहो हवाइ हड्डापर शिखाक स्वागत करबाक हेतु पहुँचि गेल रही। हमरासभक संग जनक्रान्ति

दलक किछु कार्यकर्तासभ सेहो हवाई अड्डाक बाहर झंडा लेने नारा लगा रहल छलाह-

"शिखा जिंदाबाद । इनकिलाब, जिंदाबाद ।"

किछुगोटे पताका लेने छलाह-" अन्यायीसभक विनाश भऽ कऽ रहत ।"

पुलिस रहि-रहि कऽ ओकरासभकेँ खिहारि रहल छल। शिखाक हवाई जहाज बड़ीकाल धरि आकाशमे घूमि रहल छल । ओकरा उतरबाक अनुमति नहि देल जा रहल छलैक। हवाई जहाजमे बहुत सीमित मात्रामे ईंधन बाँचल छल । हवाई जहाजक चालक दल बहुत चिंतामे छल । ओ सभ बारंबार नियंत्रण कक्षकेँ संवाद पठा रहल छल । मुदा ओहोसभ की करितए? ऊपरसँ आज्ञा आएल छलैक। हवाई जहाजक भीतर यात्रीसभ बेचैन छलाह । चालक दल बेर-बेर कहैक-

"हमसभ जहाजकेँ उतरबाक आज्ञाक प्रतीक्षा कऽ रहल छी । चिंताक बात ई थिक जे हवाई जहाजमे आब बहुत कम ईंधन बाँचल अछि । देरी हेलापर किछु भऽ सकैत अछि।"

यात्रीसभ बहुत परेसान भऽ गेल रहथि । शिखा तँ तामसे आगि भेल रहए । कखनो काल ओकरा पछतावा होइक जे ओकरे कारणे आन यात्रीसभक प्राणपर संकट आबि गेल छल । अंतमे चालक दल कंट्रोलरूमकेँ आपातकालीन सूचना देलकैक आ

ह्नाॐ जहाजकँ उगानि दलक। कानध आउन दनी र्लासँ जहाजम उयनम आगि लागि जाएग। ककना जान नहि बँचिगेक।

ह्नाॐ जहाजकँ उगानिाहि उकना यूलसर चानुकागसँ घनि ललक। उकनसरक ॐष्ठा ॐएह नहेक ज जँ मिखा ह्नाॐ जहाजसँ उगनि कए वाह्न निकलवाक प्रयास कनैग अछि गँ उगहिसँ जहलक नम्हा दखा दल जाएग।

वाह्न जनक्राान्हिदलक कार्यकर्गासरक हंगामा चलिए नहल छल। क्रमशः लाकक संख्याम ॐजाह्रा रल जा नहल छल। हम कगवा वूमवाक प्रयास कनिउंक,लाकसर किछु सूनव नहि कनेक। किछु ह्नव नहि कनए ज आव की कएल जाए? कहीं ह्न अनिष्ट न रए जाॐक। हम आ शकिनाथ एही निषयसरयन मंग्रणा कनैग नही। संदीय प्रदर्शनकानीसरकँ सम्हानवाम लागल छल। एगवहिम ह्नाॐ जहाज घूसकल। घूसकैग-घूसकैग मूख्य रनन धनि आवि गेल। उअहिOामसँ गँ येन वाह्न आएल जा सकैग छल। शकियूनम ह्नाॐ अउा अछिए कगकटा। मौका दखि मिखा ह्नाॐ जहाजसँ उगनल आ एक-एक कए सरटा नम्न अयन दहसँ उगानए लागल। आव गँ गर्द यिउ गेल।

"हाँ, हाँ ॐी की कए नहल छी?

"हो लाकसर! कहूना हिनका नाकह? ॐी गँ महा अनर्थ रए नहल अछि।"

लोकसभ शिखाकेँ बुझबाक प्रयास करए। तरह-तरहक आश्वासन देलए। मुदा शिखा सुनबाक हेतु तैयार नहि रहए।

"की नाटक कए रहल छी? जखन शासनक सर्वोच्च शिखरपर असरार लोकसभ हमरा सन-सन कतेको महिलाकेँ नाङट करबाक हेतु दिन-राति लागल अछि तखन अहाँसभक आश्वासनपर कोना भरोसा कएल जा सकैत अछि? "

से कहि ओ हवाइअड्डापर बैसि गेलि। हवाइ जहाजक आवागमन बाधित भए गेलैक। आकाशमे जहाजसभ चक्कर लगबैत रहल। मुदा उतरबाक अनुमति नहि भेटैक। चारूकात हाहाकार मचि गेल। हवाइ अड्डाक अधिकारीलोकनि परेसान छलाह। किछु सूझब नहि करनि जे की कएल जाए?सभ ओकरा बुझबाक प्रयास कए रहल छल। मुदा ओ अड़ल छलि,अड़ल रहि गेलि। हमसभ एहि दृश्यकेँ देखैत रहि गेलहुँ। एहना होएत से सपनहुमे नहि सोचने रही।

25

बहुत मुश्किलसँ किछु महिला पुलिससभ शिखाकेँ हवाइअड्डापरसँ उठओलक आ कतहु कात बाट एकांत स्थानमे लए गेलनि। शिखाक निर्णयसँ सरकार हिलि गेल छल। नेताजी सरकार छाड़ि एहि आगिकेँ मिझएबामे लागि गेलथि। मुदा शिखा अड़ल छलि। जाहिठामक सरकारक मुखिआ एहन

होऽऽक, लोककेँ जबरदस्ती नाटक करबाक हेतु दिन-राति एक कए होऽऽक पाछिOाम ऽऽी नाटकसभ करबाक कोन प्रयोजन अछि? हमरा संग नहि करू। जहिना छी,ओ छी स रहए दिअ। नाटक छोड़ए जाउ। "

जखन शिखा अपन बापयन अएल नहि गेलि आ नहि-नहि कए खिड़की लग आबि जाए,ओहि कोOरीसँ हाथि जबाक प्रयास करए तखन महिला पुलिससभ बालुकासँ घनि लेलक आ Oामहि बैसल रहबाक हेतु मजबूर कए देलक। मुदा ओ तेँ जना सनकि गेल छलि। कैकटा महिला संगOनक अधिकारीलोकनिकेँ बजाओल गेल। शिखाकेँ तरह-तरहसँ बुझबाक प्रयास भेल। कओ अपन प्रयासम सफल नहि भेल। ताधरि बाबू हमसभ समर्थकक संगे अएल रही। बुझब नहि करए ओ आखिर,भेए की रहल अछि? शिखा बाबू किएक नहि आबि रहल अछि?

हम आ शक्तिनाथ बाबू Oाढ छलहुँ। आपसम किछु मंत्रणा कए रहल छलहुँ। तावत पुलिसक किछु आला अधिकारी हमरासभ लग अबैत छथि। ओ सभ शिखाक निश्चही स्वरूपसँ भयाक्रान्त छथि। ऊपरसँ बहुत दबाव पड़ि रहल छनि जे जल्दी एहि मिनादकेँ खतम करू। अपना भरि ओ सभ प्रयास कएल गेल। मुदा किछु नहि कए सकलाह। शिखा अडिग अछि। सभकेँ नाटक कए देबाक हेतु कटिबद्ध अछि।

"अहाँसभ हुनका बुझबितौन। एना तँ समाज नहि चलि सकैत अछि। विरोधक ई तरीका तँ कानून सम्मत नहि अछि। हमरासभकेँ हानि कए किछु करहि पड़त।"

हम हुनका लोकनिकेँ की जवाब दितिअनि। तथापि,कहलिअनि-

"जखन अहाँलोकनि सभटा उपाय कइए रहल छी आ एतेक शक्तिसंपन्न छी तखन हमरासभ लग की करए अएलहुँ अछि? हमसभ तँ बदनाम छीहे? मुदा एतबा नीकसँ बुझि लिअ जे नाजीक पाप आब दबाओल नहि जा सकत। संपूर्ण समाज जागि गेल अछि। ओकर विनाश आब तय छैक।"

"अहाँसभ अपन राजनीति करैत रहब। मुदा एखन जे समस्या अछि तकरा तँ किछु समाधान कए दिऔक।"

"एकर समाधान हम की करबैक? हमरासभकेँ तँ नीकसँ बुझल नहि अछि जे बात की छैक जाहि कारणे ओ एतेक उग्र रूप धए लेलनि अछि?"

"कम सँ कम हुनका कहि सकैत छिअनि जे हुनाइ अड्डासँ बाहर आबि जाथि। तकरबाद जे करबाक होनि से करिहथि?"

"आ अहाँसभ चैनसँ पान-सुपारी खाइत रहब?"

राति दिन मंत्रणाक चलैत रहल। शिखा अपन बातपर अड़ल छलि। दोसर दिन प्रतिनिधि सभाक सत्र प्रारंभ होइतैक। नेताजीक प्रयास रहैक जे ताहिसँ पहिने किछु समाधान भऽ जाइक। ताहि हेतु हुनिसभक प्रयास कएल गेल। बड़का-बड़का हाकिमसभ लागल रहलाह। मुदा जखन शिखा टस सँ मस नहि भेलि तँ अधिकारीलोकनि हारि कऽ हमरासभ लग पहुँचलथि। हमहू की कऽ सकैत छलहुँ? जाव शिखासँ तथ्य नहि होइत ताव ओकर मोनक बात कोना बुझितैक? आखिर अधिकारीलोकनि मोबाइलसँ हमरासभक तथ्य शिखासँ करबओलनि। शिखा अपन बात किछु कहबाक बदला भोकासी पाड़ि कऽ कानए लागलि। हमरा ओकर स्थितिपर बहुत कष्ट भेल। शक्तिनाथ तँ उग्र भेल जा रहल छल। हम इशारासँ ओकरा रोकबाक प्रयास कलहुँ। ओमहर संदीपक हालत सेहो बहुत पस्त रहैक। प्रदर्शनकारीसभ लस्त पड़ि गेल छलाह। मामिला शांत होबाक बदलामे गरमाइत जा रहल छल।

"तखन कएल की जाए?"

"शिखासँ आग्रह कएल जाए जे धैर्य राखए। ई कोनो व्यक्तिक समस्या नहि अछि। नेताजी सन-सन लोक समाजक काँट अछि। ओ सभ बहुत जड़िआएल अछि। शासनमे प्रमुख स्थानपर बैसल अछि। तेहनमे तँ जँ हमरासभ बुद्धिसँ काज नहि लेब तँ किछु नहि कऽ सकब। अस्तु, हमरासभकेँ शांतिपूर्वक निदान कऽ काजकेँ आगू बढ़बाक होएत।"

ई बातसभ शिखा सुनलक।

"मुदा हम एहि समाजीक विनाश कए बिना अपन पूर्वानुग्रह नहि आबि सकैत छी।"

"नहि आउ। मुदा समाजमे रहबाक हेतु ओकर नियमकेँ तँ मानहि पड़त। आखिर, हमरा लोकनिक आंदोलनो तँ समाजक बीचमे आ समाजक कल्याणक हेतु होएत।"

बहुत आग्रह कएलाक बाद ओ अपन निर्णयमे संशोधन करैत घोषणा कएलक-

"जाधरि एहि दुष्टसभक अंत नहि होएत हम आइसँ श्वेतवस्त्रा रहब।"

हमरा लोकनिक प्रयाससँ पुलिसक आला अधिकारी लोकनिक कान मे कान अएलनि। एकटा महिला आगू बढ़ि कए ओकरा श्वेतवस्त्र देलकैक। ओ एकहिटा श्वेतवस्त्रकेँ ऊपरसँ नीचा धरि पहिरने हुनाऽऽ अड्डासँ बाहर एलीह। देहमे आओर किछु नहि। मीडियावलासभ सेहो एहि मौकाकेँ जाए देबए नहि चाहैत छल। धड़ाधड़ हजारो फोटो खिंचा गेल। ओकरा ककरो मोबाऽऽल रहैक से बुझल नहि।

पुलिसक सुरक्षामे ओ हमरासभक संग जनक्रान्ति दलक मुख्यालय पहुँचि गेलीह। समर्थकलोकनि सेहो पाछू लागल ओतए आबि गेलथि।

-रवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वयस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अड़ेर डीह, मातृक: सिम्भिआ ठाढ़ी, वृत्ति: राज्य सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), रेल मंत्रालयमे मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष२०११ १.रातसँ साँझ धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निबंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष२०१८ ४. प्रसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.ऋणह थिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देवाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष२०२१ १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष२०२२ १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास) २२.राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास) २५.दीप जरैत रहए (उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.पद्य खण्ड

३.१.बद्रीनाथ राय-तीन टा गीत

३.२.प्रमोद झा 'गोकुल'-छूटल आम हेरायल गाम

𑓓.𑓓.𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒮𑒰𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒅𑒢𑒡

𑓓.𑓗.𑒥𑒠𑓂𑒩𑒲𑒢𑒰𑒟 𑒩𑒰𑒨-𑒞𑒲𑒢 𑒙𑒰 𑒑𑒲𑒞



वद्रीनाथ नाय

गीन टा गीग

१

(ग वहिना नन हमन व७ वूनिवक ञाउॅान ञनानी छै,
मुर्खशिनामधि कानी छै ना। ....
दुष्ट दहजक हम छी मानल ,
यौवन जिविग (गलै जानल।
वूनिवक वाग नञि वूस७,
वायक आस्नाकानी छै।।
मुर्खशिनामधि......... ....
७क ग (गावन क छै चाग,
हम छी लाज लाहलाट।
लाजक वाग की कहियौ,
नञि पुनुष नञि नानी छै। ।

मूर्खशिरोमणि . ...
यौवन छिन्न रहल निस्फल,
रहतौ कामल कोढ कमजा।
बूसौ प्रश्रय निवदन क नहि,
यैघ बीमारी छै ।।
मूर्खशिरोमणि.....................
कहिया लाज लगैत रानी,
अकिल क खालौ नहि अलमारी।
बनही बिना डाजानक ,
बुझि क बहु कबानी छै।।
मूर्खशिरोमणि............ .. ..
कनबै ककना यन हम आश ,
बाहन यनन बहै उनबास।
ककना कहबै मनक बगिया,
ब७ लाबानी छै।।
मूर्खशिरोमणि ....
जहिना मनकल सन छै दह,
हमना जनलै सख सिनह।
निश्चा यढन ओकादि मात्र ,
मूदा रैंसबानी छै।।
मूर्खशिरोमणि.......... ....
शिजा यहला म अछि रहल,
हमना चिह्नलक नहि बकलल।

नहिना नीक लगैए,
नहि जेना कुमारी छी।।
मुर्खीगिनामधि................. ......
यौवन जखन नञि जनलहुँ ,
बथुआ साग सनक नरमाएल।
यौवन धधकि रहल अछि,
हमरा संग लाचारी छी।
मुर्खीगिनामधि ....|
२
गे बहिना मन हमर बड़ बुरिबक आओन बकलल छै,
सासुर सहर जल छै ना
देवर चारु काच कुमार,ससुरक साय सनक हुहुकार।
ननदी नाक कटाक' नढरिनीया सन रहल छै।।
सासुर सहर जल छै ना...
बरनि मजिग दह खियाएल,साउसक बाग बस यिजाएल।
धनि उा ऊन्ना सन क उ0लि आओन निष बल छै।।
सासुर सहर जल ....
घर म उर लगैए रानी,लागल नञि छै हुटक कवारी।।
सबटा दुष्ट दहजक कानध गउबर रहल छै।।
सासुर सहर जल छै ना....... . . ...
ससुरक ज0 राड़ मुहमोसा, हुलल बढ सनक अछि ढोसा।
अगुआ आगि लगाक' साना म सुति गेल छै।।
सासुर सहर जल ....|

मनक ननक वाय ज लागी,ऊ छथि दनक नद निनाधी।
स्रष्टा सृष्टी कलनि ग७वन आऊेन वमल छौ।।
सासून सनून जल छै ना।............ ...
३
की कहियौ वहिना हम,ससूना क हाल गे।
साउस हमन सूर्पनखा,ससून हमन काल गे। ।
गोगनी छै गोन मूदा, गौनन छै आह्नन।
ढकनऊँक साढ सन, नह जना नाहन ।।
ननदी नटिनिया व७ वजवे छै गाल गे।
साउस हमन ... .
दनन छै गोवन सन,कायला सन काया।
ऐंसून छै ऐंसा सन निर्लज वहाया।।
कंठी यहिनी कनै कौआ हलाल गे।
साउस हमन ....
वावू दहज दलनि किनला अनानी।
वूसक नञि वाग वनद अनगुण छै रानी।।
काठी छै ढन ढन हाय दुख ह७गाल गे।
साउस हमन ....
घन म नञि विक्कास,नञि काठी म चाउन छौ।
वानी म ऊल वहूग, उयजल खम्राउन छौ।।
नान म गनूआ गनै छी लाल लाल गे।
साउस हमन ....
सनयंवा सासून क,मौगा छै मूखिया।

यट्र प्रमूख ञाउान तीलन ह्ठ दूखिया। ।

मम्रन क यट उना,टंकी निशाल (ग।

साउस रुमन ....

नन रुमन वूनिवक सन, रून मरुकानी।

र्लै निनारु रख,का0। अटानी।।

विगनल ध्यनरुान रूनक,गकन मलाल (ग।

साउस रुमन ....

अयन मंगय editorial.staff.videha@gmail.com **यन य0ाउ।**

३.२.𑒣𑓂𑒩𑒧𑒼𑒠 𑒗𑒰 '𑒑𑒼𑒏𑒳𑒪'-𑒕𑒴𑒙𑒪 𑒚𑒰𑒧 𑒯𑒹𑒩𑒰𑒨𑒪 𑒑𑒰𑒧



𑒣𑓂𑒩𑒧𑒼𑒠 𑒗𑒰 '𑒑𑒼𑒏𑒳𑒪'

𑒕𑒴𑒙𑒪 𑒚𑒰𑒧 𑒯𑒹𑒩𑒰𑒨𑒪 𑒑𑒰𑒧

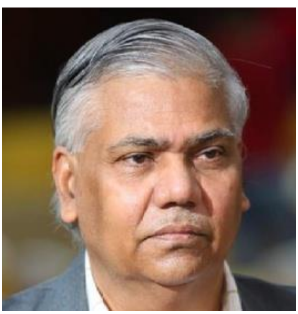
𑒮𑒢 𑒮𑒞𑒰𑒮𑒲 𑒮𑒥 𑒠𑒱𑒮 𑒑𑒰𑒧 𑒑𑒰𑒧
𑒑𑒾𑒁𑒰𑒿 𑒒𑒥𑒛𑓃𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪 𑒁𑒢𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩
𑒮𑓀𑒫𑒞𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒢𑒕𑓂𑒛 𑒢𑒯𑒪𑒻 𑒋 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒢 𑒡𑒰𑒢
𑒗𑒏 𑒗𑒏 𑒅𑒒𑒰𑒢 𑒒𑒰𑒿𑒙𑒱 𑒪𑒰𑒖 𑒢𑒱𑒥𑒰𑒢
𑒂𑒚𑒼 𑒨𑒰𑒧 𑒁𑒑𑒱𑒢𑒰𑒧 𑒖𑒣𑒨 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒥 𑒯𑒹𑒢𑒰 𑒯𑒹𑒢𑒲।
𑒕𑒴𑒙𑒪𑒻 𑒑𑒰𑒧 𑒯𑒹𑒩𑒨𑒪𑒻 𑒚𑒰𑒧 𑒂𑒧 𑒪𑒞𑒰𑒧 𑒗𑒢𑒥𑒢𑒲 ।।
𑒥𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻 𑒮𑒑𑒩𑒼 𑒅𑒣𑒙𑒰 𑒥𑒟𑒰𑒢
𑒐𑒰𑒣𑒟𑒰𑒢 𑒕𑒪𑒻 𑒁𑒢𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩

राञ्ज राञ्ज सळ कनय गकनान
स्वार्थक उंका वजय आन यान
वटा रागिज गैयान स्वानेल कयान
ञ्नखा ड्वखक वाजान सजल ष्ठ सन यसनी।
ष्ठूटलै ०।म रुनयलै गाम आम लगाम मन वनी।।
यौजा यौजी मिष्मुन काना
खल कवडी विलायल काना
अथना विथना अटकन मटकन
वनल किनकटक मूहँ याछना
अगीगक ड्वानि यन वर्गमानक जवर्दस्फ यरुनदानी ।
ष्ठूटलै गाम रुनयलै ०।म आम लगाम मनवनी।।
ग्रील वड्ढ घनक ष्ठ जान लगन
अयनम नरुय सव मस्फ मगन
मगलवम चूजा दरुीक डा०गन
अगिथि अकष्ठ गनथि गनगन
रैया रीगन वड्ढ अनाक वारुन रौजी कनथि गक्कारुनी।
ष्ठूटलै ०।म रुनयलै गाम आम लगाम रुनवनी।।
धियियूगा वयज० रुल
मावाञ्लक सळ सट रुल
कीना सँ (गल वूधियान रुल
असमय यौवन वडान रुल
ज वूमल वर्मीसक वाद स डाकना लल ७खन नसरुनी।
ष्ठूटलै ०।म रुनयलै गाम आम लगाम मनवनी।।

-प्रमोद झा 'गोकुल', दीप,मधुबनी, (बिहार), मो-9871779851

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.३.राज किशोर मिश्र-सांस्कृतिक उत्कर्ष



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जनरल मैनेजर (टी), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,गाम- अन्धरा ठाढ़ी, पो. अन्धरा ठाढ़ी, मधुबनी

सांस्कृतिक उत्कर्ष

'ऊँ, संस्कार स कँ अपनहि गा अब,
उकरा क द्ध सन बचा उग?
संस्कृति -जहि ऊँ सूखा गड,

द्या सन क , जल सँ, ज्ञता डाग?

जगऽ जवा क ह्ना ज्७ ,जनथ्र जा उ,
ग्नुया कं, यनि स, लंतन,
कगह् नह्नी , मूद्‌ा वि सनी नहि ,
नि च्चा यगि , उदयन, मंतन।

वढू, चढू उन्नगि क जका स,
ह्रहना उ डागह् रग नाक ध्वजा ,
नह७ गि नंगा सरू सँ ऊयन,
सरूदशक ध्रूजा कँ ,डा ना जा ।

ज नहि कनथि अयन संस्कृगि क',
अयनहि मा न -द्रा न,
७हन ला क या वथि न कफह् ,
अयना लल, सम्मा ना।

नि ज सुप्रथा , सुयनम्यना ,
यि आवेष्ठ , अग्मि गा कँ यी युष ,
ह्नम सरू सजग नखवा न नहव,
गऽ,दूसग न गखन का ना मनदूसा।

नी कक' दखा उसि गऽ नी क वा ग,

मृदा , खगणा वि नृ,नृनहि ली यँच,नी न,
अयना वsल यन स्ना रि मा न,
या सी कि ७ का ना वा ग ही न?

नहि ऊघी , क्रदयस्क हा संस्का न,
जकनहि आरा सँ, चमक७ कया ना।
वेसु, कणवा महग गा ७ी म ,
दृना गमनक (णा रा , महरा -कहा ना।

नि दश्री गी गक हा -हल्ला सँ,
नहि रटग ऊा मा नक सुकुन,
ला कगी ग, रा नी य संगी ग,
अछि जा हि म ,मा धूर्य-नस- गुद्या।

चूआ -दही क का न अयना ४?
सा अदगन नहि की , यूरुकिआ, खझन?
यैकिं ग ऊँ वढि आँ क७ दल जा ७,
गs,वर्गन वका न घमंत म चूना।

अयन रख, आ अयन रा खा ,
सुंदन कणक,नि ज यनम्यना !
रा नग क मा टि क ज सुगंधि ,
रटग न,गा कु सगन धना ।

यनि स म ह्व ह्वि वनक चूमा ङान ,
यह्नि ना कs द्ध यटा -या ग,
गs,खसण य्रणि स्ठा नह्नि ङाह्नि सँ,
ला गण न कलंकक' द्ध ग।

ऊयन संस्कृणि क कनव ङय गs,
ऊयना ह्व वा ह्नन ,ह्व ग्रण ङय,
खा ह्व ०। क ऊँ नह्नि नह्नौ गs,
कथी यन घन, कह्नु टि कौ?

ऊयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाङ।**

